RNI No. UPHIN/2011/40224

पंजीकृत सं.: एस.एस.पी./एल.डब्लू./एन.पी-341/2024-2026

हिन्दी मासिक पत्रिका
फरवरी - 2025
मूल्य: 20/- रुपये मात्र

प्रकृति मेल

नोट: यह पत्रिका प्रत्येक माह की 6 तारीख को मुद्रित होकर उसी माह की 8 तारीख को डाक द्वारा भेजा जाता है।

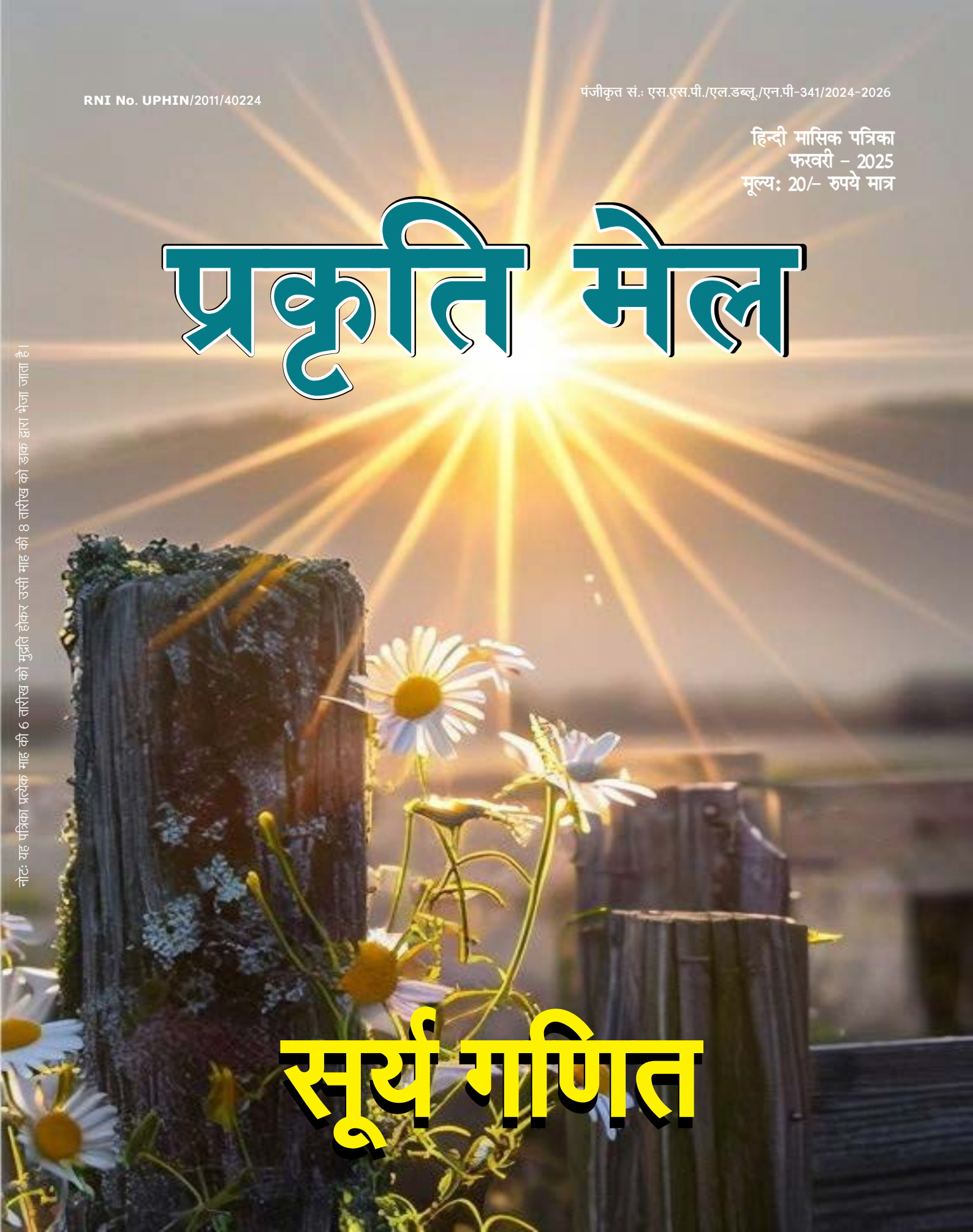

सूर्य गणित

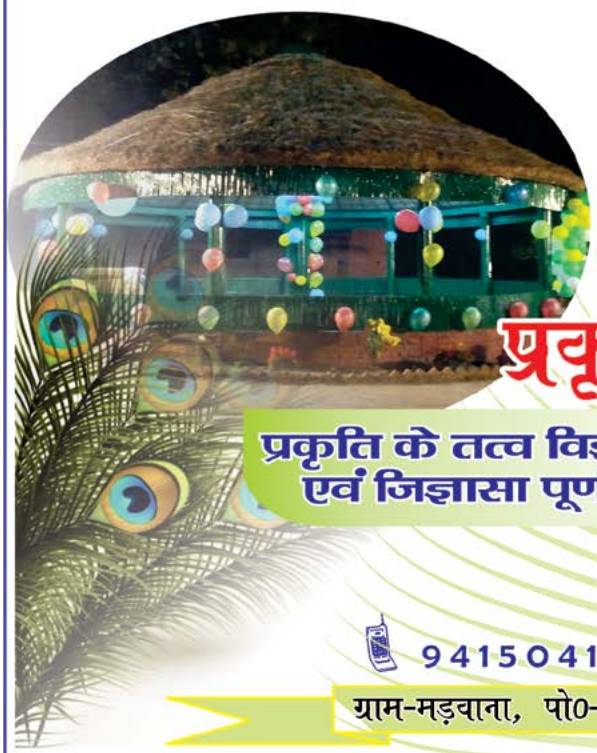

प्रकृति आश्रम

प्रकृति के तत्व विज्ञान, जीवन के मूल रहस्य
एवं जिज्ञासा पूर्ण करने की प्रकृति स्थली

'अशोक मानव'

9415041794, 9807636072

ग्राम-मड़वाना, पो0-रघुनाथपुर, निकट सैदापुर, लखनऊ।

कोमल

बिल्डिंग मैटेरियल

सत्य प्रकाश मिश्रा (राहुल मिश्रा)

बिक्रेता • बालू • मौरंग • सीमेंन्ट • गिट्टी

मछली शहर, जौनपुर

मो0 9792512188

प्रकृति मेल

हिन्दी मासिक पत्रिका

वर्षः14 अंक : 8 | फरवरी -2025

संरक्षक
डॉ. उत्तम प्रकाश मानव
संपादक
अशोक मानव
कार्यकारी संपादक
उमेश
विधि सलाहकार
नवनीत कुमार वर्मा
मुख्य संवाददाता
आशीष त्रिपाठी
वरिष्ठ संवाददाता
अरविन्द त्रिपाठी
दिल्ली संवाददाता
मनोज
पुर्वांचल हेड
श्री प्रकाश मिश्रा
संवाददाता
सूर्यमणि यादव, अनुराग, कामेश, सुनील,
गौरव पंत, अभिषेक पंत,
हेमंत पाण्डेय, प्रशांत द्विवेदी,
सुमनलता यादव, मानवेन्द्र त्रिपाठी,अभय सिंह
ग्राफिक्स, डिजाइन एवं तकनीकि
संजय यादव
कैमरा मैन
धर्मेन्द्र त्रिपाठी

प्रबंध, विज्ञापन एवं सदस्यता
संपर्क 8423330911, 9598911575
पंजीकरण कार्यालय

सूर्या आश्रम, मानव नगर, कल्याणपुर,
लखनऊ, उत्तर प्रदेश– 226022
प्रधान कार्यालय

18/A ब्रह्मपुरी, निकट जुगौली क्रॉसिंग,
फैजाबाद रोड, लखनऊ – 226016

इस पत्रिका में प्रकाशित सभी लेखों और विचारों के लिए उनका लेखक स्वयं उत्तरदायी होगा। विज्ञापनों में किये गये दावों की जाँच–पड़ताल स्वयं करें। समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन होगा।
नोटः इस पत्रिका के समस्त सहभागी पदाधिकारीगण पत्रिका के प्रारम्भ के अंक से ही बिना किसी मासिक सहयोग धनराशि या वृत्तिका के स्वेक्षा से बिना किसी दबाव के समय दान के रूप में अपनी सेवाएं दे रहे हैं।

प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वामी अशोक मानव द्वारा सूर्या प्रिंटिंग प्रेस एण्ड पब्लिकेशन, खसरा संख्या 872, ग्राम मड़वाना, जनपद–लखनऊ, उ. प्र. पिन-226104 से मुद्रित कराकर सूर्या आश्रम, मानव नगर, कल्याणपुर, लखनऊ, उ. प्र. से प्रकाशित किया।

संपादक – अशोक मानव

web : www.prakritimail.com
email : info@prakritimail.com
email : editor.prakritimail@gmail.com

अंदर के पन्नों पर

P 8 प्राकृतिक सुख

P 10 ईश्वर - संरचना विज्ञान के एहसास की पराकाष्ठा

P 16 ध्वनि नेत्र एहसास पुस्तिका

P 21 नवसंवत्सर है भारतीय नववर्ष

P 27 ऋतुराज वसंत

P 35 सब टच में बिजी हैं

P 40 क्यों दक्षिण विज्ञान की ओर अधिक झुकता है ?

P 42 बोझिल 'ज्ञान'

P 49 यहां छिपीं हैं दादी नानी की कहानियां

P 55 ग्लोबल वार्मिंग और आज का वातावरण

P 32 प्रकृति विज्ञान

सूर्य गणित

सूर्य की शून्य अवस्था से जब गंधीय मिलान होता है तब सूर्य सक्रिय होकर गंधीय मिलान को भारमुक्त करने हेतु गुणात्मक कण में परिवर्तन कर देता है जो जीवन धारण कर अपने गुण का ठोस निर्माण कर देता है जिसे सूर्य गणित कहते है।

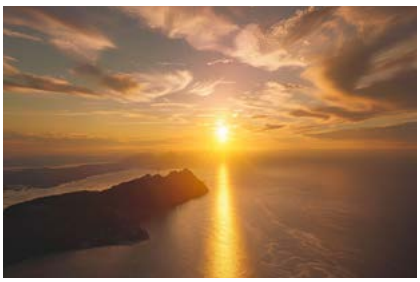

प्रवाह

प्र - प्रभावित, वा - वास्तविक, ह - हस्तक्षेप

अशोक मानव

अर्थात प्रभावित करने वाला वास्तविक हस्तक्षेप। प्रवाह का प्राकृतिक अर्थ है जीव पदार्थ से निकलने वाली वह ऊर्जा जो उसके गुणों को अन्य गुणों से मिलाने के लिए निकलती रहती है। प्रवाह का वैज्ञानिक अर्थ है, उत्पन्न होने वाली वह ऊर्जा जो दूसरों को भी गतिमान कर दे। प्रवाह का व्यावहारिक अर्थ है जीव द्वारा निकलने वाली वह ऊर्जा जो निरंतर चलती रहे। "वास्तविक रूप से प्रवाह का वह धारा है जो सजीव निर्जीव से निरंतर निकलती रहती है, सिर्फ बाहय जगत की ऊर्जा गति के अनुसार कम-ज्यादा होती रहती है।" प्रवाह जीव पदार्थ के गुण के अनुसार बनने वाली वह ऊर्जा है जो बनने के साथ निरंतर निकलते हुए आवश्यकता अनुसार अन्य जीव पदार्थ से मिलकर नई ऊर्जा का निर्माण कर पुनः अपने आप से जोड़कर अपनी गुणात्मक गंध तैयार कर प्रकृति में छोड़ती है।

प्रकृति में सभी जीव पदार्थ अपने गुण के अनुसार ऊर्जा प्रवाह करते हैं। जो प्रकृति निर्माण की सूक्ष्म अवस्था है। यह प्रक्रिया दो प्रकार की होती है। प्रथम-पदार्थ अपनी आवश्यकता के लिए विषय जीव पदार्थ की प्राप्ति की इच्छा पैदा करता है जो ऊर्जा उसके हृदयांश (हृदय) से प्रवाहित होकर विषय जीव पदार्थ के गुणों को चुंबक की तरह अपने पास खींचकर अपने को जोड़ लेती है, जिससे उसकी शारीरिक आवश्यकता की पूर्ति होती है। इसके मिलने के बाद उसके अंदर जो नई भावनात्मक ऊर्जा मन मस्तिष्क मंथन के बाद बनती है वह ऊर्जा उसकी गुणात्मक गंध होती है जो उसका भाव बनकर निकलती है वही प्रवाह की द्वितीय अवस्था होती है। इसी प्रकार जीव के साथ प्रकृति की निर्जीव अवस्था से भी ऊर्जा प्रवाह होती है जो अपने गुणों की हवा बनकर निकलती है और मार्ग में मिलने वाली अन्य ऊर्जाओं को जोड़ते हुए गुणों के मिलान से नए गुणों का निर्माण करते हुए पुनः अपने पास वापस आकर नई-नई भावनात्मक गंध तैयार करती है। इसी प्रकार जलधारा भी जहां से निकलती है स्वच्छ और अपने गुणों की होती है पर रास्ते में अनेकों प्रकार के जीव पदार्थ मिलते जाते हैं। जो उसको प्रदूषित और गुणात्मक दोनों बनाते जाते हैं पर वह अपने ही प्रवाह में बहते हुए प्रदूषण को अपना आहार बनाते हुए गुणों को और गुणात्मक बनाते हुए घूमने की एक श्रृंखला के बाद पुनः अपने आप से जोड़कर प्रवाह की निरंतर प्रक्रिया जारी रखती है। हवा प्रवाह तो रुख़ के अनुसार अपनी अवस्था बदलती है। पर जल प्रवाह की निरंतर पूर्ति और शोधन की क्रिया करती रहती है।

उपरोक्त क्रिया की धारा प्रवाह मंथन से जीव की उत्पत्ति होती है उत्पन्न होने वाला जीव गुण विशेष का होता है, उसी गुण पर चलते रहना उसकी प्रवाह है पर अपने स्वभाव के विपरीत चलना अवगुण है जो प्रवाह में व्यवधान उत्पन्न करने की क्रिया करता है। वैसे मानव के अतिरिक्त ज्यादातर अन्य सभी जीव प्रकृति बाध्यता में होने के कारण अपने स्वभाव पर ही चलते हैं। पर मानव में परिवर्तन होता है जो पैदा होने के साथ नहीं होता उस समय वह अपने गुण के विकास के लिए आता है और उसके हृदय से उसी की पूर्ति के लिए ऊर्जा प्रवाह निकलती है जो आवश्यकता अनुसार जीव पदार्थ को अपने से जोड़ती है जो उसके

पथ रसायन की वातानुकूलित हरीतिमा अपने स्वाभाविक ईंधन मिलान से जो ऊर्जा बनती है उसकी गतिमान अवस्था को 'प्रवाह' कहते हैं।

गुण विकास की आवश्यकता है इस प्रक्रिया से व्यक्ति कभी अपने स्वभाव के विपरीत नहीं जा पाता है पर हृदयांश से निकलने वाले प्रवाह के साथ नकारात्मक ऊर्जा घुमावदार ऊर्जा की एक चादर उसके साथ जोड़ देते हैं जो विषय पदार्थ जीव में अपने गुण के अनुसार परिवर्तन कराने लगता है जो वापस जब उस व्यक्ति से जुड़ता है तो उसके गुण के विपरीत करने का प्रयास करता है। यही क्रिया धीरे-धीरे उसे अपने गुण के विपरीत बना देती है जिससे वह अपने स्वभाव के विपरीत गुण की ऊर्जा छोड़ने लगता है जो नकारात्मक ऊर्जा बन जाती है जिससे उसके अंदर से असुरता के गुण की ऊर्जा निकलने लगती है जो असुर के गुण बढ़ाकर असुर को पैदा करती है। इस प्रकार व्यक्ति में परिवर्तन हो जाता है और वह जान भी नहीं पाता है। इससे बचने के लिए दृढ़ता कारगर होती है जब व्यक्ति अपनी सोच को अपने स्वभाव के विपरीत नहीं जाने देता है तब उसकी जो भी ऊर्जा आती है वह आहार बनकर उसकी ताकत को और बढ़ाती है और स्वभाव की सोच भाव बनकर प्रकृति में गुणात्मक गंध को फैलाती है। जो प्रदूषण को खत्म कर अपने गुणों का फैलाव करने में सहयोगी होती है यह क्रिया यदि व्यक्ति शुरुआत से ही लागू कर लेता है तो नकारात्मक ऊर्जा पर विजय प्राप्त कर लेता है। पर यदि कोई नकारात्मक ऊर्जा के फैलाव का शिकार बन जाता है तो उससे बचने का एक ही रास्ता बचता है और वह है कुछ भी सोचने व करने से पूर्व यह सोच ले कि यदि मेरे साथ ऐसा कोई कर रहा हो तो मुझे कैसा लगेगा, यदि अच्छा लग रहा हो तो करे नहीं तो छोड़ दे। ऐसा करने के लिए खुद को गुरु मानकर निर्णय ले। ऐसा करने से सही मार्ग मिल जाता है और वह व्यक्ति इस पर चलते हुए प्रदूषण मुक्त हो जाता है।

पाठकनामा

हमारा जीवन निरंतर विकास और नई संभावनाओं की तलाश का एक सुंदर सफर है। इस यात्रा में हम ऐसे मार्ग की खोज करते हैं, जो न केवल हमें आंतरिक शांति प्रदान करे, बल्कि समाज और प्रकृति से भी हमारा गहरा जुड़ाव बनाए। इसी दिशा में 'प्रकृति मेल' एक महत्वपूर्ण पहल के रूप में उभर रहा है, जो आध्यात्मिक और सामाजिक चेतना को सशक्त बना रहा है।

यह मंच न केवल हमें सकारात्मकता और सरलता के साथ जीने की प्रेरणा देता है, बल्कि हमें प्रकृति, संस्कृति और समाज से गहरे स्तर पर जोड़ने का कार्य भी करता है। यहां हम अपने विचारों को सही दिशा में मोड़ सकते हैं, आत्मिक संतुलन प्राप्त कर सकते हैं और एक सकारात्मक बदलाव की ओर बढ़ सकते हैं।

'प्रकृतिमेल'कायहप्रयाससराहनीयहै,जोनकेवलव्यक्तिगत विकास में सहायक है, बल्कि पूरे समाज में जागरूकता और सद्भावना फैलाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। इसकी टीम के सदस्यों को इस महान कार्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं। आपका यह प्रयास निरंतर सफलता की ओर बढ़े और समाज में नई चेतना और प्रेरणा का संचार करे।

नव वर्ष की मंगलकामनाओं सहित, सभी के सुखद, स्वस्थ और समृद्ध भविष्य की कामना करता हूँ!

– प्रबोध सिंह

सभी पाठकगण से अनुरोध है कि आप अपने विचार अपने लेख हमें निम्न पते पर भेज सकते हैं–
A/18 ब्रह्मपुरी, निकट जुगौली रेलवे क्रॉसिंग, रविन्द्र पल्ली फैजाबाद रोड, लखनऊ226016
आप हमें अपने विचार निम्न ई–मेल पर भेज सकते हैं -
email-editor.prakritimail@gmail.com
Contact: **9807636072, 7376495194**

‘जाने दो, कुछ नहीं होता है’ वाला सोच छोड़ना होगा।

नितिन गडकरी

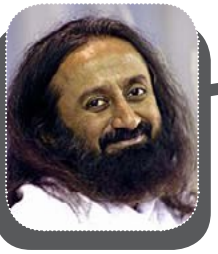

कुम्भ ऐसा विचित्र मेला है, जहां वे संत मिलते है, जिन्हें कुछ नहीं चाहिए और वे सांसारिक लोग भी मिलते हैं, जिन्हें बहुत कुछ चाहिए।

श्रीश्री रीवशंकर

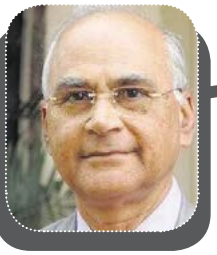

अपने देश में नेता कभी रिटायर नहीं होना चाहते।

जीएन वाजपेयी

भारत में, जेल में बंद लगभग लोग वंचित पृष्ठभूमि से आते हैं। उनके पास सक्षम कानूनी प्रतिनिधित्व तक पहुँच नहीं है।

सुनील कुमार गुप्ता

महांकुभ पवित्र आयोजन है, जो लोगों की आस्था से जुड़ा हुआ है।

अखिलेश यादव

अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट बोर्ड एक इवेंट मैनेजमेंट कंपनी भर है, आर्थिक रूप से मजबूत बोर्ड उसके रास्ते में आ रहे है।

इयान चैपल

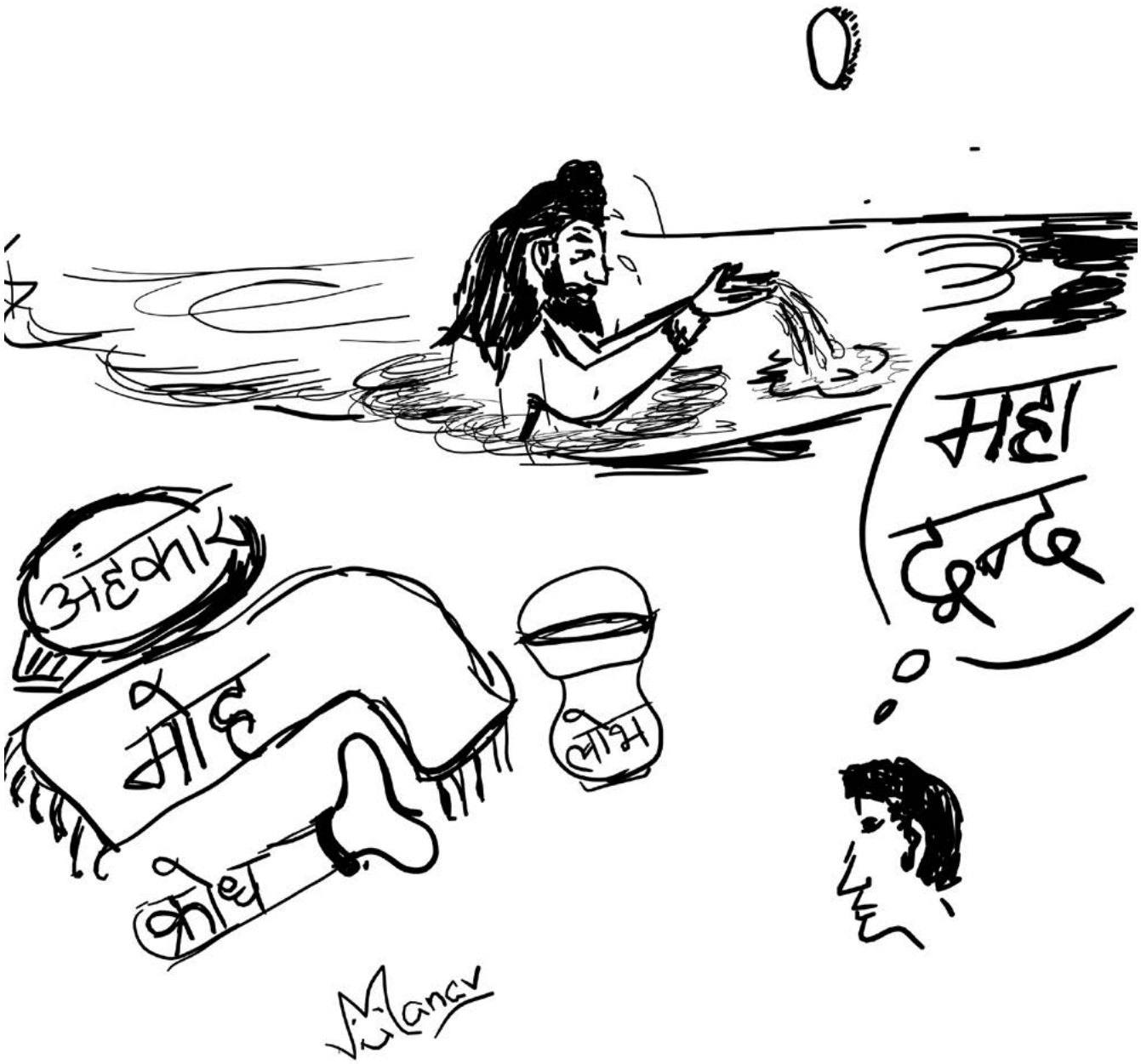

महा द्वन्द
अहंकार
मोह
लोभ
क्रोध
Manav

प्राकृतिक सुख

कामेश

हम दुख की गडरिया अपने सिर पर रख घूम रहे हैं और वह गठरी कुछ और नहीं हमारी सोच है सच यह है कि हम चाहते हैं कि लोग हमें देखें तो मेरी प्रशंसा करें कि हमसे सलाम करें कि हमें डरे या फिर लोग ऐसा क्यों कर रहे हैं इन्हें ऐसा होना चाहिए अर्थात हर समय हमारे अंदर एक सवाल हमें अपनी अंतरात्मा की गहराई में उतरने नहीं देता और जब तक हम वह शांति वह सुख प्राप्त न कर सकेंगे जिनकी चाहत वास्तव में हमारे अंदर से उठ रही है।

सुख मात्र मानव के लिए ही नहीं बल्कि समस्त प्राणियों के लिए सबसे महत्वपूर्ण विषय है।कहीं ना कहीं यदि अध्ययन किया जाए तो यह दिखाई देता है कि सभी सुख की चाहत में ही इधर-उधर दौड़ रहे हैं सब की तलाश सबकी दौड़ सब की चाहत मात्र एक जगह जाकर रुकती है कि आखिर सुख कैसे प्राप्त किया जाए क्या ऐसा करूं कि जीवन सुखमय हो जाए क्या ऐसा मार्ग चुन लूं दुनिया की कौन सी सुविधा एकत्र कर लूं सुख मिल जाए और यही प्रश्न लिए हुए प्राणी जीवन भर साधनों को इकट्ठा करता है और एक दिन इस नश्वर संसार से हमेशा के लिए विदा हो जाता है परंतु उसकी दौड़ उसकी चाहत उसके बाद भी रुकती नहीं और वह पुनः अपनी इस चाहत पूर्ति के लिए इसी संसार में आता है। अर्थात उसकी सुख प्राप्ति की दौड़ जीवन भर ही नहीं अपितु जन्म जन्मांतर तक चलती रहती है।ऐसा नहीं है कि सुख की प्राप्ति किसी को होती नहीं। बल्कि सुख की चाहत में वह सही मार्ग नहीं चुन पाता है और संसार के विभिन्न संसाधनों में फंसकर रह जाता है और वास्तविक मार्ग से भटक जाता है।

महत्वपूर्ण यह नहीं की सुख की खोज की जाए,बल्कि महत्वपूर्ण तो यह है कि सुख की प्राप्ति की जाए।सुख कोई सामान नहीं है कि गया बाजार और खरीद लाया। सुख तो मन की शांति का एहसास है जो कि संसार में खोजना नहीं पड़ता। इसे पाने के लिए अपने अंदर प्रवेश करना पड़ेगा,अपनी अंतरात्मा में शांति पूर्वक प्रवेश करना और यह अनुभूति करना कि आज मैं सबसे सुखी हूं यही सुख है। परंतु अपने अंदर प्रवेश करना कोई छोटी-मोटी बात नहीं है वह तो मनोवेग है। आज हर व्यक्ति अपने को बाह्य जगत में प्रतिष्ठित करता है। अपनी सोच को बाहरी दुनिया की वस्तुओं संसाधनों में लगा रहा है वह यह भूल गया है कि वास्तविक सुख संसाधनों में नहीं खुद में प्राप्त हो सकता है।

मानव प्राणी एक ऐसा प्राणी है जो की सोच विचार में अन्य प्राणियों की अपेक्षा अग्रणी है परंतु जरूरत सिर्फ सोचने की क्षमता अधिक होने से पूरी नहीं होती उसके लिए महत्वपूर्ण होती है सोच की दिशा आखिर हम किस दिशा में कितनी और किस गति से सोच रहे हैं।आज जैसा कि कहा जाता है कि व्यक्ति अपने दुख से कम औरों के सुख से ज्यादा दुखी है कहीं ना कहीं यह बात प्रमाणित लगती है और इसे इस रूप में भी समझा जा सकता है कि आज हम जो भी कार्य करने के लिए कदम उठाते

हैं पहले और लोगों को देखते हैं कि क्या ऐसा करने से हम अपने पड़ोसी से आगे जा सकते हैं उसके बढ़ते कदम कहीं ना कहीं पड़ोसी या और लोगों के कदमों पर निर्भर दिखाई देते हैं वह कुछ भी करने को सोचता है तो पहले उसके मन में सवाल खड़ा हो जाता है यह करने पर लोग क्या कहेंगे लोगों की सोच क्या है लोग देखेंगे या जानेंगे क्या-क्या सोचेंगे।अर्थात वह अपनी इच्छा की पूर्ति भी लोगों के नजरिए से करना चाहता है उसकी अंतरात्मा कहती है कि चलो एक घंटा शांति से बैठे रहे कि चलो कहीं घूम आए या चलो कहीं गीत गुनगुना लें परंतु वह भी अपनी आत्मा की इस मधुर पुकार तत्क्षण ठोकर मारता है कि लोग एकांत में बैठे देखेंगे तो पागल समझेंगे लोग घूमते देखेंगे तो आवारा समझेंगे लोकगीत गुनगुनाते सुनेंगे हसेंगे। अपनी आत्मा खुद की सुख शांति के लिए ऐसा करना चाहती है पर हम लोगों के नजरिए से जीना चाहते हैं कभी भी हम अपनी इच्छा अपने नजरिए से खुद को देख नहीं पाते और फिर भी सुख की चाहत में दौड़ते है।

"सुख की चाहत में दौड़ रहे दुख की गठरी को भूल गए"

हम दुख की गठरिया अपने सिर पर रख कर घूम रहे हैं और वह गठरी कुछ और नहीं हमारी सोच है।सच यह है कि हम चाहते हैं कि लोग हमें देखें तो मेरी प्रशंसा करें कि हमसे सलाम करें कि हमें डरे या फिर लोग ऐसा क्यों कर रहे हैं इन्हें ऐसा होना चाहिए अर्थात हर समय हमारे अंदर एक सवाल हमें अपनी अंतरात्मा की गहराई में उतरने नहीं देता और तब तक हम वह शांति वह सुख प्राप्त न कर सकेंगे जबतक हम ऐसे सवालों से खुद परे न कर दें। और जब तक कि हम उस की तरफ उन्मुख न होजाएंगे जिनकी चाहत वास्तव में हमारे अंदर से उठ रही है। और वह वास्तविक चाहत हमारे अंतर्मन की पुकार है जिसे सुनना महसूस करना ही हमारा वास्तविक सुख का मार्ग तय करता है।

चाहत व्यक्ति की वाह्य शारीरिक संरचना में नहीं होती।कभी सोचो और सूक्ष्म दृष्टिपात करो

खुद पर,की क्या हमारे शरीर के विभिन्न अंग किसी चीज की या किसी भाव की मांग करते हैं ऐसा कभी हुआ कि हाथ में कुछ करने की चाहत उठे या पैर कहे की मत चलो या जुबान कहे मत बोलो या आंखें कहे मत देखो कभी नहीं वह सब तो मात्र एक यंत्र हैं एक माध्यम है इस चेतना के जो की अंगों को अपने अनुसार क्रियाशील बनती हैं। कभी सोचो कि क्या है कि शरीर के विभिन्न अंग पड़े रह जाते हैं और निष्क्रिय हो जाते हैं शरीर से क्या है जो निकल गया है तो सारे अंग बेकार हो जाते हैं और क्या है कि जब वह है तो सब क्रियाशील है और यदि वह कोई अदृश्य चेतन है तो निश्चित ही सुख की उसकी भी अपनी चाहत होगी जो कि उसके अनुसार पूर्ति होने पर भी सुख की अनुभूति कर सकेगा क्योंकि जिसकी चाहत पूरी होगी वही तो सुखी होगा उस चेतन की या उस आत्मा की चाहत है खुद को सुंदर बनाने की,और हम लगे बाजार से गहने खरीदने की इत्र खरीदने या सुंदर कपड़े पहने सोचो हम शरीर को लग जाते हैं सुंदर बनाने की चाहत में। और हम सवारते हैं शरीर के अंगों को कभी महसूस करो कि पानी हमेशा गतिमान होता है किसी तरह थोड़ा भी पानी गिराओ तो वह नीचे की तरफ चल पड़ता है पहाड़ से निकली नदी रास्ते नहीं खोजती चल पड़ती है सागर की तरफ उसे रास्ते में बांध बना कर खेत की सिंचाई करो कि विद्युत संयंत्र लगाओ, कोई फर्क नहीं जो सागर तक जा कर ही रुकेगी।बूंद की चाहत भी सिंधु है एक बूंद भी अपनी यात्रा सागर की तरफ ही करती है और वही स्थिति इस चेतन की भी है इसकी पूरी कोशिश उस विराट की तरफ है अब हम उसे धन में उलझाएं पद से उलझाएं सांसारिक संसाधनों में बांधे तो भला यह कैसे सुख की अनुभूति कर सकता है इसकी गति तो निरंतर उस परम चेतना की तरफ ही रहेगी।

हमारे अंदर कविता निकलती है चित्रकला निकलती है नृत्य गतिमान होता है हम उसे दबा देते हैं कि नहीं इससे क्या होगा हमें तो चिकित्सक बनना है इंजीनियर बनना है शासन करना है प्रधानमंत्री बनना और हम सोचते हैं कि इन पदों पर पहुंच के हम सुखी होंगे परंतु मिलता वही है कि हम सिर्फ दुख की गठरी अपने सिर पर रखे हुए सुख की तलाश में दौड़ते रह जाते हैं परंतु सुख की एक झलक पाने में नाकाम रह जाते हैं। वास्तविक सुख तो वास्तव में हमारी सोच और एहसास में निहित होता है।

ईश्वर - संरचना विज्ञान के एहसास की पराकाष्ठा

अभिषेक पंत

ब्रह्मांड का संरचना क्रम अति विशाल भी है एवं अति सूक्ष्म भी है, आवश्यकता है तो अपने दृष्टि चक्र को आंतरिक योग पर आवृत्ति लीन करने की, जहां से प्रत्येक जीव निर्जीव अवस्था को उसका एहसास उसके अस्तित्व की पूर्ति करने वाले ऊर्जा रूपी ईश्वर से मिला देगा, तो योग का भोग करें, इच्छा का उद्योग करें, दोनों अवस्थाओं में योग ही ईश्वर है, जो उद्योग का भी भोग, मात्र इच्छा के योग से ही कराएगा।

प्रभुत्वता की पराकाष्ठा से परे, आत्मा बंधन की शून्य लिप्तता से परे, प्रथम मृदा उपासक षड्यंत्र से परे, जीवन उपसर्ग नियमावली से परे, ईंधन रूपी श्वसन प्रणाली के वजूद रस में उत्पन्न स्वरों की एहसास क्रिया की आंतरिक संरचना को ईश्वर कहते हैं।अर्थात

बौद्धिक नियति की प्रारूपित आंतरिक व्यसन शुद्धि शक्ति से परे, जीव निर्जीव विलुप्तता की शारीरिक विरक्ति से परे, काल कालांतर की प्रथम गति के आंतरिक ध्वनि रस की ईंधन स्वाशनावली को ईश्वर कहते हैं। अर्थात, प्रदूषित उपसर्ग की भृकुटा गति को मिटाने वाली, रत्न प्रिया स्वमस्तक उत्तेजना की निजी संपर्क शाश्वतता को ईश्वर कहते हैं। अर्थात, रिक्तता, शून्यता, शीतलता, लावण्यता की मूल रासायनिक अनुभूति के गंधीय प्रांतीय संरचना क्रम को ईश्वर कहते हैं। अर्थात

गति संतुष्टि की रात्रि दिवस अनुप्रिया के निहित होने वाली सजीव घटना के प्रथम निर्जीव ऊर्जा संतति को ईश्वर कहते हैं। अर्थात

विवेक आपूर्ति, हृदय संचित एवं बौद्धिक समन्वय से परे आसक्ति लीन इच्छा ईंधन चक्र विलयी ब्रह्माण्डी बिंदुओं की रचना कृति लीन गतिशील एहसास स्वर संयोजकता को ईश्वर कहते हैं अर्थात अनंत शोधन कला अर्थात अशोक पूर्णांक तापमान नीति के स्वसाधन श्वसन अंकन ऊर्जा द्वार प्रकृति को ईश्वर कहते हैं। अर्थात, पुरुषार्थ एवं समानुपाती समृद्धि उल्लेख से परे, मूल गती नियति निति विलीनतम अनंती यात्रा की ध्वनित प्राप्तांक सजीव निर्जीव मिलान कृति की शाश्वत-उर्ध्गामी अधोगामी अणु प्रकाट्य को ईश्वर कहते हैं। अर्थात, ऊर्जा की रासायनिक वृद्धि में होने वाले उत्पत्ति क्रम के प्राथमिक विनाश की सृजन संहार वर्णावली को ईश्वर कहते हैं। अर्थात मूल अस्तित्व के आंतरिक स्वर की ईंधन उपाधि लीन इच्छाध्वनित साधन प्रवृत्ति को ईश्वर कहते हैं। अर्थात, प्रथम एहसास में संरचना गति को ईंधन मिलान का कारक पूर्णांक गतिविधान बना देने वाली आत्मा परमात्मा गणित से परे इच्छा शक्ति सृजनांकित

प्रथम तत्व पदार्थ रासायनिक विश्वसनीयता को ईश्वर कहते हैं।

अर्थात अ- धन रुचि की शो- वन कृषि के का- मन स्वर नभ मिलान विलयी ब्रह्माण्डी अशोक पूर्णता संरचना काल को ईश्वर कहते हैं। अर्थात गति तापमान वेग दबाव विलयी निरंतर विस्तार की अणु नियति को ईश्वर कहते हैं।

प्रमाणित आविष्कारों की विश्व स्तरीय यात्रा में लीन मानव सदैव आंतरिक क्षारीयता से अनभिज्ञ रहा। मानव को सदैव यही प्रतीत हुआ की मूलगमनार्थी तत्व इच्छा ही राधिका संपन्न श्रुति की विध्वंसित कलाकारिता है। अपितु नियति का वर्णन तो नीति भी नहीं कर सकती, उसी प्रकार निर्माण विध्वंस का क्रम साहित्य लीन करना मात्र ललाईत चाहत की कल्पना है, जिसमें विद्युत क्षेत्र की नगण्यता को अवश्य त्रासदी लिप्त कहा जा सकता है अपितु जिस त्रासदी का मानचित्र ही कल्पना की वेदी हो उस मानचित्र की रसायनिकता को कभी भी विद्युत क्षेत्र में देखा ही नहीं जा सकता। अर्थात शुभ अशुभ, रंक राजा, मूर्ख विद्वान, सही गलत, न्याय अन्याय, भाग्य कला, यह समस्त प्रणाली काल उदय मानव की प्रदूषित मानसिकता का पर्याय है, जो एकाकी एकस्वी उर्ध्गामी प्रकाश तरलतम निजता को कभी एहसास ही नहीं कर सकता। प्राणी उद्यान की जीवन अंकित में राधिका ही ईंधन की उज्ज्वला है जो इच्छापूर्ण स्वाशनावली से परिपक्व होती है जिसमें मानव का ईश्वरवाद, किसी भी प्रकार से कोई भी चेतन अवचेतन ब्रह्मांडी संदर्भ को परिवर्तित नहीं कर सकता। मानव द्वारा परिभाषित ईश्वर सीमावादी चयन का विकास है, जो किसी भी दृष्टिकोण से प्राकृतिक नहीं है। ईश्वर तो चयन विकल्प से परे अनिवार्य गति की संलयिता है, जिसमें अणु विज्ञान की नीति ही ध्वनित नियति की तत्व राधिका होती है, जो रासायनिक अन्वेषा की गंधीय किरण से मूल जड़त्वता एवं संयोजकता को भी साधन क्षेत्रीय इच्छा शक्ति का पदार्थ विलीन विकास क्षेत्र बना देती

है। अशोक अर्थात अनंत शोधन कला जो कि ईश्वरत्व की पराकाष्ठा है। जिसमें श्वसन वृद्धि एवं नाड़ी कृति से ही सजीव पराक्रम को भी निर्जीव ध्रुवीयता से पकाकर तृप्त कर दिया जाता है। जो एहसासलीन विलीनता के मार्ग से ही पूर्ण होती है। ब्रह्माण्ड की रचना का मूल छाया केंद्र ही जीवन संतृप्ति का निर्जीव इच्छा प्रणय होता है। अर्थात पराग मुखी अंकुरण की द्रव्य आत्मा छाया विलयी प्रथम निर्जीव इच्छा की सूक्ष्मार्थी स्वश्नावली पदार्थ सक्षमता शीतलता अनुपाती तत्व माला रासायनिक स्वरूपांकिनी कृति विषय अनुकूलता को ईश्वर कहते हैं। आधिपत्य की रागनी में समयंकिनी अनुरोपित विध्वंसिनी अवहेलना का निरुपमा कल्पना मंडल भी बनाया गया था। एहसास ही शून्य भागे एक की रचना का परतंत्र निशाचरी धरातल बने इसीलिए वर्दी नुमा जटाधारी उल्लेखों का वाणिज्य कला सूर्योदय किया गया था। अपितु सजीव प्राणों की चेतना में कभी भी दशमलवी नाट्यन का वो पर्दा निधि पूर्ण नहीं हुआ जिसमें धातु अन्वेषा शीर्षता का प्रथम प्रदूषित कक्षा विवेक समापन शिथिल किया गया था। अर्थात वर्चस्व गामनी धुणी को मिटाकर रसपर्यंत रासायनिक इच्छा को अस्तित्व पर्यायक एहसास का मूल कर्म पर्दा विलयी न्यायिक मानचित्र कला पूर्ण प्रथम इच्छा मूल ईंधन दर्पण निधि बनाने वाले रूप भाषा आंतरिक ध्वनि केंद्र को ईश्वर कहते हैं।

ईश्वर का न्यायी होना एवं न्याय में ईश्वर का होना दोनों भिन्न प्रकार के रूपांतरित दर्शन है। ईश्वर तो स्वयं में एक अवस्था को दूसरी अवस्था में न मिलने देने वाला स्वतंत्र एहसास का दर्शन है। जिसमें ईश्वरत्व की परिणीति का निधि अस्तित्व ही मूल संरचना विज्ञान का ईंधन दर्शन रूपी इच्छा पारा अंकुरण है। अर्थात मूल दर्शन की प्राप्ति में मानव यदि रूपांतरित तथ्यों का ज्ञाता हो जाता, तो ब्रह्मांडीय कुल वृद्धि में यौगिक अनुसरण का विधि विधान ज्ञापन होता ही नहीं। अर्थात रक्षा सुरक्षा की मर्यादा सीढ़ी का पालन करने की आशा ही प्रदूषित आक्रमण का योग बनाएगी। जब पर्दा आधारित रचना वृद्धि का विधान अंकुरण नियमित होगा ही नहीं, कैसे किसी आपत्ती की युवा वृत्ति शल्य मधुमेही दर्शन चित जलाएगी। मृग प्रांतीय आलोचनाओं का रस द्वार भी कुल यौगिक निधिवन का तर्पण रस प्रलय बनाया गया था। आवंटनवादी ईश्वरत्व के नाम पर ज्योति व्यंग्य का ज्यामितिक मिलान करवाया गया था। अपितु प्रेरणा की सूची में वंदना का आकार बन जाना ही परतंत्रता की सीढ़ी बन गया जिसमें आस्तिक नास्तिक दो समूह बनाकर, वैराग्य की नीति को ही अज्ञातवास

बता दिया गया। जबकि पुरूस्कृता एवं संलग्निता में दिव्य आत्मा फेरों का अंतर था , फिर भी लघु नीति की अंकुरण शैय्या को ही ईश्वरत्व की मात्रा का प्रेमातुर नेत्र प्रणय बंधन बना दिया गया, फिर सुरूची कुरूपित नश्वर नेत्रों में भी प्रकाश घटित रचनाओं का मार्ग बना देने वाली प्रकृति ने संरचना विज्ञान का मूल कण अस्तित्व रागिनी में लंकर प्रधान विधि में एहसास लिप्त किया, जिसमे प्रकृति ने अनिवार्य कल्पना की विज्ञप्ति को भी निराकार छन्नी भाव से शोधित किया। अर्थात जीवन का लक्ष्य तो निर्द्वन्दता की परोक्षवादी सीमांकन आशा लयता है अर्थात जीवन का लक्ष्य जैसी कोई अवस्था नहीं होती क्योंकि ब्रह्माण्डी लयता नित्य गतिमान सूर्यता की शूनयांकन अवधी है अर्थात एहसास ही एकमात्र सजीव अंकन है, जिसमें निर्जीव संरचना को भी ठोस बना दिया जाता है। इसी ठोसता को मूलतरलता का तरंगीय प्रकार बना देने वाली मूल प्राकृतिक जडत्वता की ईंधन संयोजकता को ईश्वर कहते हैं। अर्थात जीर्णता की धुंडी पर अपनत्व की तस्वीर बना देना तो मात्र कल्पना वृत्त क्षणिक उपासना है अपितु ईश्वरत्व तो अनवरत गतिमान अवस्थाओं में इंधनावली प्रधान इच्छा का भोग करने की आंतरिक गणित है। जिसमें मानव की मुलता ही ईश्वरत्व की सक्षमता है। अर्थात मानव रूपी संरचना तन ही ब्रह्मांडीय छन्नी की एकाकी पदार्थ यात्रा है, जिसमें प्रकृति ने मानव की प्रकाश वाहिनी का संतृप्ति कोष बनाकर शून्यता की विधान निधि से मूल प्रदूषित कल्पना का ईश्वरवाद भी पका कर मिटा दिया। अर्थात संज्ञा को सर्वनाम बना देना मात्र विशेषण को उभारने की क्रिया है जिसमे उपसर्ग उतसर्ग की विभेदिका ही नेत्र कोटी आशा विलयित संक्षिप्तता की मानसिक जननी है। जो एक प्रकार का बंधन प्रकारेणु प्रदूषण है। फिर भी प्रकृति की नीति में प्रवृत्ति की उत्पत्ति का क्रीडा काल ही जीवन की संज्ञा का आत्माबोध है। अर्थात ईश्वर तो इच्छा रूपी स्वर है जो जब आंतरिक विशेषता में गुंजन लीन होते हैं तो अपनी आवृत्ति की तृष्णा से प्रत्येक क्षुधाधारी पदार्थ मिलान को पका लेते हैं। अर्थात गुंजनशीलता कि जीवनेंद्रीय ही ईश्वरत्व की मूल भाषा है, अपितु प्रकृति काल की गहराइयों में अनंत रहस्यों की माला है, जिसे ईश्वर रूपी संरचना के एहसास में भी नहीं जाना जा सकता। अर्थात मूल रचना की विवेक तारिणी गामिनी मिथ्याओं को मिटा देने वाली एकल तापमान सृष्टि वृत्तिलिन शून्य आसन वृत्ति को ईश्वर कहते हैं। पराग भेदी निम्नता में अपने ही अस्तित्व की परिभाषा से शून्यता प्रधान जीवाश्म को जीवाणु तल का जीवांश बना देने वाली इच्छा काल रागिनी ध्वनि पर्यंतता को ईश्वर कहते हैं। ब्रह्मांड की सहयोगिनी अभिलाषाओं का जीवातुर रश्मि केंद्र मात्र संरचना की उपलब्धि का बात निर्वाण संयम नहीं है। ब्रह्मांड तो कृषि वंश तुरीण संध्या से परे मूल स्वभाव उदय क्रांति का संरचना काल है। जिसमें किसी भी प्रकार की परिभाषा को एक मात्र का अनेक व्यवहारिक रुचिकर नियम नहीं कहा जा सकता। दर्पण शील उन्मुखता की पदार्थ व्यय अवस्थाओं का कल्पना काल बनाने वाला जीव प्राणी यह ज्ञात नहीं कर पाया कि शून्य जगत की वाहिनी ही रागिनी काल पूर्णता की प्रथम ईंधन लावणता है। जिसमे प्रतिक्षण उत्पन्न राशि व्यावहारिक संरचना उपसर्ग ही जीवाश्म जीवाणु इच्छा फल का रूप लेते हैं अर्थात प्रथम उन्नति की धारणा में जीव गति की प्रतिकृति ही मति प्रधान सूर्यता की आत्मा शैली होती है। जिसमें वृत्त मूल चंद्रमा पराग अंकुरण की आशा करना मात्र विकल्पवाद को जन्म देना है, जबकि प्रकृति रस की प्रत्येक इकाई अनिवार्य सूक्ष्मता का दर्शन है जिसमें मूल गणितीय संतति ही निधि पूर्ण सक्षमता की आंतरिक सक्षमता है। अर्थात वन उदय निधि प्रकार की पदार्थ इच्छा विलयी तत्व ईंधन रसायनिकता को प्रवृत्ति लीन स्वरांकन का स्वाशनावली लावण्यक कारक बना देने वाले सूक्ष्म रस उदय को ईश्वर कहते हैं। अर्थात प्रकृति योग नियति की प्रवृत्ति योग नीति में उत्पन्न होने वाले लावण्यता प्रधान अंकुरण की रात्रि चयन प्रकाश एकाग्रता को ईश्वर कहते हैं। उत्पत्ति के विषय में जीवन की सार्थकता को मृत्यु का गतिमान पदार्थ चक्र बना देने वाले तत्व ईंधन उत्प्रेरक को ईश्वर कहते हैं। अवस्थाओं की उन्मूलन क्षमता में रासायनिक वृत्ति का जीवन अंश भी प्रभाकर गति का शून्यवान स्थायित्व होता है। जहां से

उत्पन्न रासायनिक कृषि की ततपर अन्वेषा ही जीवनी पर्यंत ईंधन क्षारीयता को रसायन लिप्त करती है। अर्थात् गंधीय उपलब्धि तो मानसिक रचना का क्रीडा काल था जिसमें प्रधान आंशिक व्यूह संपत्ति की प्रकाश गति ही हृदय व्यासीय घटनाओं का एहसास करती है। जिसमें निर्मित आंशिक वांशिक कृतियों का प्रथम एहसास ही संरचना विज्ञान का ईंधन उत्कर्ष होता है। जिसमें प्रकृति नीति की प्रवृत्ति चेतन ही जीवन तत्पर मेधा का ज्ञानास्वी रस प्रवृति लीन करती है अर्थात एहसास उदय की मूल संरचना के विज्ञान रागनी भाव की राधिका मिलान कृति के पदार्थ तापमान उत्पन्न वेग प्राणवायु उत्कर्ष को ईश्वर कहते हैं। ब्रह्मांडीय जलवायु चेतन राधिका रागिनी ही मूल प्राण वायु घटनाओं का राधिका अंश चित्तलीन करती है अर्थात प्रथम अंश एवं अंतिम अंतिम अंश की मूल घटना प्रेरक विलयी प्रथम पदार्थ पारा जीवनेंद्रिय को ईश्वर कहते हैं। जिसमें प्रकृति ने संरचना विज्ञान को लीन कर आत्मा व्यय का आध्यात्मिक एवं भौतिक ईंधन भी पका लिया।

एहसास

ज्ञानाध्वी संरचना केंद्र की सुलेख आलेख अभिलेख विलेख प्रतिकर्षण प्रतिस्पर्धा भी बनाई गई थी, कि रागिनी क्रमांक अंगाँक भ्रमित नवोदयी पारा उच्चाटन प्रदूषण बनाया जाए अपितु प्रकृति ने उच्चाटन की नीति को भी वेगीय प्रकार का संवर्धक पारा स्तूपिय घटनाक्रम बना दिया अर्थात प्रकृति ने एहसास कीमूलता को वही तार जुड़ाव प्रकृति अंश खिंचाव स्तुति समीकरण बनाया जहां से इंधन ब्रह्मांडीय राधिका का मूल इच्छा विषय परिपक्वहो अर्थात एहसास एक ऐसी गति निर्मित करता है जिसमें पूर्व अवलोकन कीनियति होती ही नहीं अर्थात एहसास का संदर्भ ही विषय की गामिनी धारा है जिसमें प्रकृति की चेतना ही प्रकृति का पारा है अर्थात रहस्यमई तत्व रागिनी में पदार्थ राधिका के तत्व यात्रा विषय कोणीय ईंधन इच्छा ऊर्जा संवर्धन को एहसास कहते हैं अर्थात मूल धारा विषय योग ही जीव पारा शुन्य कोण है अर्थात पृथ्वी का उर्ध्वगामी भाव तो ग्रह उत्कर्ष की चुंबकीयता है अपितु पृथ्वी की अधोगामी चंद्रमा पूर्णता ही खगोलीय एहसास की धुरी है जिसमें संरचना क्रम की श्रेणी ब्रह्मांडीय सूक्ष्मता से प्रकृति विराटता तक की यात्रा करती है अर्थात जीवन का उद्देश्य मात्र प्रदूषण को छानकर पदार्थ को ठोस करने हेतु तत्व को पकाना है जिसमें एहसास ही वह आंच है जो प्रत्येक अवस्था की नीति नियति को तापमान लिप्त करती है इसलिए जब भीभर दबाव युक्त होता है जिसमें कोणीय संलग्न की बीजात्माही खगोलीय एहसास की नीति होती है तब गति ही उस पदार्थ अस्तित्व की बनती है जिसमें रासायनिक प्राणवायु अपने मूल ईंधन को खींच लेती है। प्रकृति ने भी वृत्तमूल जीवनेंद्रिय शून्यता से ब्रह्माण्डीय घटनाओं की मूलता को उभारकर पका लिया अर्थात मानव की उत्पत्ति ही प्रदूषण की छवि सहित इच्छा रूपी धातु शीतलता को शून्य कर, पकाकर मिटाने हेतु हुई। अर्थात विराजमान प्रध्यापिका की न्यूनता के शल्य व्यवसाय से परे मूल उत्पत्ति के बीजक में गतिमान इच्छा रूपी पदार्थ संलग्नक तत्व ईंधन संपर्क प्रकृति को एहसास कहते हैं अर्थात जीव निर्जीव पराजीविका से परे मूल ब्रह्माण्डीय पदार्थ पारा तत्व गति को एहसास कहते हैं। प्रकृति शून्यता की रसलीनता ही प्रवृत्ति शीतलता की लवणता होती है जिसमें ज्योति ज्यामिति की आधुनिक प्रकृति ही स्तूपिय संरचना की एहसास विधा होती है। अर्थात ज्ञान विज्ञान की निर्गन्धीय पाराशक्ति ही रासायनिक चेतना की यात्रा होती है। अर्थात जीवन केंद्र की राशि उन्मुक्ता ही एहसास की विधि है, जिसमें संरचना विज्ञान की राधिका ही मूल प्रकृति की ईंधन रूपी प्रवृत्ति शाला है अर्थात एहसास ही ईश्वर है जिसमें अपना ही अस्तित्व राधिका मूल को संरचना विज्ञान से जोड़ लेता है। ब्रह्मांड की गतिमान अवस्थाएं ही प्रकृति की सूक्ष्म रसायनिकता है जिसमे जीवन की उत्पत्ति एहसास से प्रदूषण को मिटाने हेतु हुई। अर्थात ब्रह्मांडीय की संरचना काल का ईश्वरत्व ही एहसास है। जिसमें सूक्ष्मता ही गतिशील नियति का सजीव निर्जीव अंगांक है। प्रत्यूषा सूक्ष्मार्थी वचनशीलता ही निर्भीक तनाव की राशि बताई गई अपितु निम्नता में नग्नता का स्थूल वाचक होना मात्र कल्पना है वास्तविक अवस्था तो एहसास से ही ज्ञात होती है। जिसमें पदार्थ रचना का तत्व संरचना कारक ही ईंधन ज्योति की गतिमान अवस्था को सक्रिय करता है अर्थात शून्यता को सक्रिय कर मूल उत्पत्ति

को ही गर्भ रथी इच्छा अनिवार्यता का ब्रह्मांडीय चुंबक बना देने वाले प्रकृति शीतल व्यूह विलयी मूल इच्छा पकवान ध्वनि को एहसास कहते हैं।

संरचना विज्ञान (आत्मा कारक, मन उत्प्रेरक, पदार्थ नीति, रासायनिक वेग)

समय न्यायी रस की चैन आकार कृति के नाभिकीय रासायनिक आभा विलीनतम शून्य अशून्य यात्रा को संरचना विज्ञान कहते हैं जो की एहसास पारा रिद्धिमा का राधिका वाहक होता है, जिसमें उत्पत्ति का विषय ही ईंधन के व्यवहार का स्वाभाविक ईश्वरत्व होता है। अर्थात जीवन की निधि में मृत्यु की अवगती भी पका देने वाली ब्रह्मांडीय सूक्ष्मता को संरचना विज्ञान कहते हैं। अर्थात जीवन गति की रासायनिक प्राप्ति के गंधीय क्रमांक को संरचना विज्ञान कहते हैं। ब्रह्मांड लाभ हानि से परे मूल तत्वोदयी रसायनिकता का कारक है। ब्रह्मांड की संरचना गति ही समय वेग की एहसास नीति है जिसमें मानव द्वारा परिभाषित ईश्वरवाद से परे मूल एहसास की गर्भ तापमान वृत्ति ही ईश्वरत्व की यात्रा है अर्थात संरचना विज्ञान में आत्मा कारक बनाकर, मन उत्प्रेरक को विकसित करने वाले, मूल पदार्थ नीति चयन के तत्व रासायनिक वेग को ईश्वर कहते हैं।

आत्मा कारक -

रासायनिक मूलता की छायाछिद्रण अवहेलना का पकवान संदर्भ कल्पना मात्र है, मूल गति की रासायनिक आद्रता ही वास्तविक चेतना की राधिका होती है, जिसमें प्रकाशवान सूक्ष्मता की गंधीय अवनीती ही मूल तापमान चक्र को सक्रिय करती है। अर्थात आकृति रूप लेने वाली तत्व अग्नि ही पदार्थ मानकता में जलवायु स्त्रोत की संरचना विधि है, जो जब मृदा रूप लेती है, तो आत्माकारक बन जाती है।

मन उत्प्रेरक -

प्रकृति रस की एक इकाई का ध्रुवीयकरण जब अनेकों स्थायित्व की पराबैंगनी किरणों पर पड़ता है, तब जो रस मंथन आरंभ होता है, उस

मंथन की प्रथम आवृत्ति के तापमान चक्र की एहसास निधि को मन उत्प्रेरक कहते हैं। जहां से शुण्यांवन की नीति का समयांकन ही मूल जीवारथी रचना को जीवाश्म लीन करता है अर्थात मन तो सूर्य है जो प्रत्येक शून्यता को गति देता है जिसमें घटना का होना ना होना इच्छा रूपी रासायनिक ईंधन की स्वतंत्रता है जो स्वाभाविक मिलान से ही पूर्ण होती है जिसे एहसास रूपी तापमान वृत्ति कहा जाता है।

पदार्थ नीति - मनुष्यता की जातक उपस्थिति को जनहानि संदर्भ का कौतुहल भी बताया गया एवं सार्थक नवनीत का प्रदर्शित जड़त्व भी बनाया गया। अपितु प्रकृति रस की उपाधि का मूल मिलन तो पदार्थ नीति की परिभाषा होती है जिसमें संरचना विज्ञान की ईंधन व्यापकता ही ब्रह्माण्डीय चुंबकत्व की लावणयता होती है अर्थात जीव निर्जीव गर्भ निधि को पकाकर, तत्व संयमिता को शून्य वेग की राशि बना देने वाले मृदा उत्सुक प्रकृति गंध उछाल को पदार्थ नीति कहते हैं जिसमें रासायनिक इच्छा की प्रकृति निधि ही प्रथम संरचना संलग्ननक एहसास की ब्रह्मांडीय वृति होती है।

रासायनिक वेग -

प्रकृति का उत्सव ही संरचना विज्ञान की गतिमान अवस्था है। मानव सदैव चेतन अचेतन मानवीयता के बीच में गोते लगाता रहता है, जबकि प्रकृति की संरचना तो वैज्ञानिक एहसास की इंधनावली है जिसमें प्रत्येक उत्पत्ति प्रत्येक अस्तित्व मूल रसायनिकता का गंधीय विस्तार है, जो पदार्थ पराक्रमी रचनाओं से परे है अर्थात मूल शून्यता की सूर्यता को रासायनिक वेग कहते हैं जो संरचना स्तर पर पदार्थ मुखी एहसास का गंधीय गर्भ बनाता है।

रात्रि उत्पन्न दीपक साहित्य की कहानियों में डूबा मानव यह ज्ञात नहीं कर पाया कि ईश्वर आकार एवं भाव से परे मूल एहसास की अवस्था है जिसमें कर्म भी वही ईंधन है जो इच्छा की अवस्था है, जिसमें व्यवहार भी पदार्थ आकार है जो तत्वइच्छा संयोजक ब्रह्मांडीय गति की अवस्था है। अपरंपार प्रार्थियों की योजनाओं से परे , मती भ्रमण की योजक भुजा दामिनी इच्छाओं से परे, मूल व्यावहारिक एहसास की गति को ईश्वर कहते हैं, जो संरचना विज्ञान की दिवस रात्रि सलंग्नता को एहसास प्रकृति की स्वच्छता में लीन करता है। रस प्रतिकूलता, रसायन अनुकूलता, गंधीय गति, पदार्थ वेग, तत्व तापमान समस्त अवस्थाएं संरचना विज्ञान के एहसास से गतिमान होती है। अर्थात जीव जीवाश्म जीवाणु प्रतिकृति की मूल लवणिक ब्राह्मणी सूक्ष्मता को संरचना विज्ञान कहते हैं। अर्थात प्रकृति की गति में उत्पन्न व्यावहारिक

सूक्ष्मता की एहसास शीतलता को ईश्वर कहते हैं। वाणिज्य अभियार्थी सेवन से परे, मूल मति गति स्वाशनावली की राधिका पर्यायक आकृति को संरचना विज्ञान कहते हैं। अब जिस अवधि का प्राणवायु मंथन सक्रिय हो रहा, प्रकृति शून्यता का संरचना वेग ब्रह्मांडीय शीर्षता निर्जीव लीन हो रहा सजीवता की प्राकृतिक गति को निर्जीविता का एहसास कराया जा रहा, मूल निधिवन का पर्यायक पटाक्षेप हो रहा।

समय सार्थक सूक्ष्म शून्यता प्रकृति पारा
जीवन निधि संरचना प्रकार
मति दर्पण जीव अंश इच्छा व्यूह मन्थनी
पारा प्रवाही रचना आकार
ब्रह्मांडीय दर्शन मन तन रात्रि प्रकाश
दिनचर्या प्रकार
मूल प्रवृत्ति पदार्थ नीति आत्मा प्रकाश
आंतरिक आकार
शून्य शून्यता शीतल धातु पदार्थ संरचना
एहसास व्यवहार
प्रकृतिलीनता प्रवृत्ति सूक्ष्मता ब्रह्माण्डीय
तत्व धारा ईंधन आधार
समय समन्वय काल गति राधिका
रिक्तता वात निर्वात व्यवहार
मूल संरचना सजीव निर्जीव मिलान
कृति वास्तविक अस्तित्व आधार।

अर्थात इच्छा को ईंधन से मिला देने वाले ब्रह्मांडीय रस को ईश्वर कहते हैं जो संरचना नीति की प्रथम उपाधि में एहसास वर्तनी लावणता के रूप में ऊर्जा लीन होता है। अर्थात ऊर्जा का होना ना होना ही प्रकृति की सहनशीलता का चयन है जिसमें दोनों अवस्थाएं गति बनाती हैं, जो निर्वात वात मिलान की प्रकृति में प्रवृत्ति को ही ईंधन चुंबक बनाती है जो एक प्रकार का मानसिक वेग विलायी पदार्थ संवर्धन होता है। अर्थात चेतना ही मूल रिद्धिमा है अपितु राधिका ही मूल चेतना है जिसमें किसी भी प्रकार का विज्ञान ही रागिनी लावणयता का प्रकारक होता है अर्थात ईंधन रूपी स्वरों के स्वतंत्र मानक को ईश्वर कहते हैं एवं इच्छा रूपी स्वाशनावली के पदार्थ रस की मूल समय रस ठोसता को ईश्वर कहते हैं।

अब पदार्थ रोचक घटनाओं का अवलोकन करने वाली अवस्थाएं ब्रह्मांडीय जलवायु से बाहर हो जाएगी, समीक्षा की किरण पर यात्रा करने वाले मानव की प्राकृतिक स्तुति ही बंद हो जाएगी अर्थात ईश्वर का होना ना होना दोनों एक ही अवस्था है जिसमें राधिका नक्षत्र का विकसित हो जाना ही ईश्वरत्व की वेदना है, जो प्रकृति से मिटाई जा रही है, जिसमें अब किसी भी द्वारा का लाभ किसी भी प्रवेशार्थी को नहीं मिलेगा। 'ब्रह्मांड का संरचना क्रम अति विशाल भी है एवं अति सूक्ष्म भी है, आवश्यकता है तो अपने दृष्टि चक्र को आंतरिक योग पर आवृत्ति लीन करने की, जहां से प्रत्येक जीव निर्जीव अवस्था को उसका एहसास उसके अस्तित्व की पूर्ति करने वाले ऊर्जा रूपी ईश्वर से मिला देगा, तो योग का भोग करें, इच्छा का उद्योग करें, दोनों अवस्थाओं में योग ही ईश्वर है, जो उद्योग का भी भोग, मात्र इच्छा के योग से ही कराएगा।'

आयूब ए मकबूलियत की मालिकाना रज़ा का तरकीब ए खंजर भी शज़र की मौत पर अंधेरा ना देख पाया, यही हकीकत रही इंसान की कि उसकी रूह का तबादला भी असल खुदा का रंग ना देख पाया। हवाई जमीन परअसरदार खजाना बना देने की चाहत रखने वाला इंसान हमेशा ही खबरों की बाढ़ में खोया रहा, कुदरत में तबादले भी मोदसों की रिज़ा को मिटा रहे थे और इंसान अपनी ही दुआ के कारखाने में बाहरी दुनिया का जनाज़ा देखने की हसरत में डूबा रहा, फिर भी असल रंग की पहचान उसी मिट्टी को होती है जिस मिट्टी में पहला पानी दरियाई नहीं आसमानी नजर का पारा होता है, उसी तरह हर रजा की फिक्र में हर कायनात की वालीदी वहीं से शुरू होती है जहां बदन की रजा से रूह का काफिला मिट्टी का पारा होता है। वजूद की जश्न ए महफिल बदन का खजाना है, रूह की पहली मंजिली ही आसमानी जमाना है, खुदा हर वक्त बदन के आईने की तरह नूरी पारा बनाने वाला ताकत ए दौर है, बदन में सांसों का चलना ही कुदरतीन खुदा का जमाना है। तो हर रंग बयार से एक ही तकलीफ का सोना नहीं उगाया जा सकता, वैसे ही हर पारे की तकलीफ से हर मुश्क का पौधा नहीं उखाड़ा जा सकता, जश्न ए बारीकी में इंसान देख नहीं पाया कि पहला वजूद ही नूरी आईना है, जिसमें बाहरी दुनिया के रंग मंच से एहसास का असल कारनामा नहीं देखा जा सकता।

फिक्र ए मौजूदगी में जमाने की
रंगीनियत का तरकीब दान छोटा पड़ेगा,
वसीहत कहीं भी लिखी जाए जमीनी
मिट्टी का पारा बदन में हल्का पड़ेगा,
खैरियत ए बिस्मिल्लाह की कहानी तो
राह ए ज़ैदी से तारों की नफ़ासत का
मजमा है,
तबीयत ए शौकिनी में कहीं भी किस्सा
सुनाया जाए, असल रंग कुदरत से
पड़ेगा,
जिंदगी का क़िस्सा तो मौत की रवानी है,
यही एक पर्दा है जो असल खुदाई है,
किसने कितने कातिल बनाये, उसका
हिसाब बदन में है, जो हर कातिल खुद
पढ़ेगा,
हर तरकीब की नायाब हिरासत का पन्ना
सामने आएगा, खुद खुदा बना इंसान भी
कम पड़ेगा,
जहन कितनी भी रफ्तार बनाए हर
बिसात का जनाज़ा छोटा पड़ेगा।

The left right adoption of human organ is the shield weight anatomy of Universal filter physics, which shows god is the center of fuel having desire of first organ, where the weight of every sensation creates temperature of original evolution.

ध्वनि नेत्र एहसास पुस्तिका

सुमनलता

प्रकृति तो जीवन को सिद्धांत की सहेली कहती है एवं काल श्री सूर्य ध्वनि नेत्रा परमाणु नाभिका प्रकाश स्वगुरु स्वामी अशोक महामानव अपने कणीय सूक्ष्म गंध एहसासी आनंद धरा से अभिव्यक्त करते हैं कि "जीवन जीव का मार्ग है एवं जीवनी जीव की बंधु है जो एक दूसरे में विलीन होकर जीव के जगत का निर्माण करते हुए जगत मार्ग बंधु स्याही गंध का निर्माण करते हुए जीव को स्वयं के ध्वनि भवन में एहसासी आत्मिक नेत्र विलीन करते हुए एहसास पुस्तिका का निर्माण करने वाली आनंद जीव को बनाती है।"

कल्पना, काल्पनिकता को नाट्य मंचन करती गंध धरा को वास्तविकता के पटल पर रूपान्तरित करते हुए भ्रम के संसार का निर्माण करती है जिसे एहसास करना भी कल्पना का ही एक डुत्रिम पात्र है जो एहसास भी वही करता है जो उसे कल्पना से निर्माण करना है तो भला हक़ीकत, सत या वास्तविकता कैसी जब समस्त धरा कल्पना के संभावना विज्ञान से अंकित होकर एक ऐसी धरा का निर्माण करती है जहां वास्तविकता तो कहीं दूर है और भ्रम सत्य बनकर जीवन निर्वाह कर रहा है। तात्पर्य यह है कि प्रकृति की सूर्य सम्पदा में कल्पना नहीं होती जो पूर्ण न होने पर पीड़ा एवं वेदना का निर्माण करे एवं पूर्ण होने पर और अधिक पाने की लालसा में उन अनैतिक एवं कृत्रिम मार्ग का निर्माण करे जो सुलभता के भोज में स्वार्थ का लोभ भोग करती हो। अपितु प्रकृति तो आत्मिक सूर्य केन्द्र बिन्दु में स्वमन सूर्य भूमि में ईशात्मक गुरुत्वाकर्षण बल से जीवन सिद्धांतीय गतिमान होती संकुचन एवं विस्तार की प्रकिृया को स्व की ध्वनि नेत्र भूमि कहती है जो वही एहसास करती है जो आंतरिक जगत में गंध क्रियाशील है। क्योंकि आत्मिक धरा कभी कल्पना के बुद्धि अश्व को नहीं दौड़ाती वह वही एहसास करती है जो की पदार्थ धरा ब्रह्माण्ड में गंध निर्माण करती है।

अर्थात् एहसास करने हेतु किसी प्रकार की विशेष प्रयोजन की आवश्यकता नहीं एहसास तो गंध की परागीय अवस्था है जिसे अनुभूत करने हेतु स्व को भारमुक्त जीवन काल रसायन में विलीन करते हुए शून्य गर्भ धरा का निर्माण करते हुए मयूर यान में जीवनी को गतिमान करना है। अर्थात् पुष्प की सुगंध की एहसासीय अवस्था जो डाली में रहेगी वह एहसासीय सुगंध अवस्था डाली से अलग होने पर नहीं रहेगी क्योंकि पुष्प का डाली से जुड़े रहना पुष्प की सि(ांत अवस्था है। जिसे जब पुष्प की कर्म राधिका पूर्ण करती है तो पुष्प पराग गंध स्वरूप में सुगंध का विस्तार करती है।

इसी प्रकार से प्रकृति ने भी प्रत्येक जीव की रचना की है अर्थात् कोई भी जीव ध्येय में विभिन्न नहीं है यह मनुष्य प्रजाति भी नहीं जो स्वयं के अहंकारी बाहुबल में विलीन अपने अप्राकृतिक प्रयोगों से प्रकृति को चुनौती देते हैं। जबकि जिस मृदा से प्रकृति में बीज अंकुरित होकर वृक्ष का निर्माण करते हैं उसी मृदा से मनुष्य का भी निर्माण हुआ है। तो फिर भिन्नता कैसी कौन श्रेष्ठ और कौन सर्वश्रेष्ठ।

प्रकृति तो जीवन को सिद्धांत की सहेली कहती है एवं काल श्री सूर्य ध्वनि नेत्रा परमाणु नाभिका प्रकाश स्वगुरु स्वामी अशोक महामानव अपने कणीय सूक्ष्म गंध एहसासी आनंद धरा से अभिव्यक्त करते हैं कि ''जीवन जीव का मार्ग है एवं जीवनी जीव की बंधु है जो एक दूसरे में विलीन होकर जीव के जगत का निर्माण करते हुए जगत मार्ग बंधु स्याही गंध का निर्माण करते हुए जीव को स्वयं के ध्वनि भवन में एहसासी आत्मिक नेत्र विलीन करते हुए एहसास पुस्तिका का निर्माण करने वाली आनंद जीव को बनाती है। जिसमें जीवन मार्ग सहेली बनकर जीवनी को सिद्धांत की रसायनिक आत्मिक गंध परिभाषाओं से गंध गतिमान करती हुई बंधु जीवनी के स्वरूप में बिना किसी खोज के बिना किसी यक्षोत्री प्रश्न-उत्तर के स्वतः से उसी मार्ग पर विलीन कर देती है जिस मार्ग से जीव का विस्तार होना है।'' जो संभव है जब मनुष्य कल्पना के नाट्य रूपांतरणों को अंकित न करते हुए आत्मिकता में जो वास्तविकता है उसी के अनुरूप जीवन को गतिमान करे।

परन्तु यह अफसोस की बात है और हास्यपद की जिस सूर्य कर्म को अंकित करने हेतु प्रकृति ने रचना की थी उसी मार्ग से भटक कर मनुष्य प्रजाति ने कल्पना को अपना संसार बनाकर कल्पना को ही अपना ईश कह दिया और पुकार देने लगा। अर्थात् जब मनुष्यों ने अपने आत्मिक एहसास की हत्या कर दी तो उन्हें उसी कल्पना में अंकित करने हेतु नाट्य रूपांतरित भूमि की आवश्यकता पड़ गई और यह मनुष्य कल्पनावाद बन गया। कल्पना एहसास का सुखद बोध नहीं कराती अपितु कल्पना घर्षण की धारा को प्रवाहित करते हुए किसी भी अवस्था को अपरिपक्व काल में भेदित करते हुए नकली भवन धरा का निर्माण करती है। जिसकी नीव हीं खोखली भावनाओं से निर्मित है तो ठोस निर्माण कैसे करेगी।

तात्पर्य यह है कि एहसास की पुस्तिका आत्मिक स्वहृदय में परमात्मा आत्मा केन्द्र स्वरूप में सूर्य ईशात्मक अर्थात् ईच्छाशक्ति के रूप में अंकित है क्योंकि प्रकृति कभी किसी भी जीव को विकलांग नहीं बनाती है। प्रत्येक जीव प्रत्येक पदार्थ अर्थात् समस्त वस्तु प्रकृति में स्वतः से संचालित मार्ग धारा में गतिमान होकर अपने जीवन का विस्तार अपने ईच्छाशक्ति के बल से करते हैं। वही उनकी एहसास की सूर्य अवस्था है जो ध्वनि नेत्र बनकर एहसास से बोध कराती है। मनुष्य प्रजाति अपने एहसास के कर्म बोध से भटक कर अपने ध्वनि नेत्रों की हत्या कल्पना से करते हुए एहसास पुस्तिका को स्वार्थ, लोभ, धर्म, देश-प्रदेश, सत्ता, बंधन, मोह, आकर्षाण, प्रतिस्पर्धा, ईर्ष्या, वेदना एवं अंत न होती अभिलाषाओं से ढ़क कर उस डुत्रिम पुस्तिका को पढ़ते हैं जो पूर्णतः ही असूरी विधाओं द्वार ईश्वरीय प्रतिबिम्ब से निर्मित हैं।

तात्पर्य है कि जीवन को कभी खोजने की आवश्यकता नहीं पड़ती जीवनी को लिखने के लिए संघर्ष की आवश्यकता नहीं मार्ग बनाने के लिए सफलता और असफलता के स्वाद को चखने वाले प्राप्तिरूपी कर्म की आवश्यकता नहीं अपनी पुस्तिक को पढ़ने के लिए किसी और की दृष्टि की आवश्यकता नहीं क्योंकि इन समस्त धाराओं को एहसास करने के लिए स्वयं के ध्वनि नेत्र की आवश्यकता है। जो जीव स्वयं निर्मित कर सकते हैं ना ही प्रकृति और ना ही ईश्वर। ''आपसे बेहतर आपको कोई अन्य नहीं जान सकता तो फिर स्व की पुस्तिका को पढ़ने के लिए अन्य की दृष्टि से क्यों देखना जब आप स्वयं में सक्षम हैं स्वयं को पढ़ने के लिए।''

जीवन नाव है आप जीवनी के
नाविक बन जाएं,
जीवन पराग है आप जीवनी को
सुगंधित बनाएं,
जीवन यात्रा है आप जीवनी के यात्री
बनकर यान को गतिमान करें,
जीवन शून्य है आप जीवनी को एकमार्गी
बनाकर सूर्य में विलीन करें,
जीवन सूक्ष्मता की सूर्य यात्रा है आप
जीवनी को विशालतम भूमि बनाकर स्वयं
की पुस्तिका में विलीन हो जाएं,
जीवन नेत्र है इसे जीवनी के ध्वनि यात्रा से
अंकित करते हुए सूर्य अशोक बनाएं।

प्रकृति की हर कृति प्राकृतिक

गौरव पंत

प्रकृति में हर कृति प्राकृतिक है। जो भी निर्माण प्रकृति में हुआ सब कुछ प्राकृतिक है। हर सजीवता हर निर्जीवता इसी कृति से निर्मित है। इसमें किसी भी प्रकार की कोई भी त्रुटि संभव ही नहीं। मानव की अपनी व्यक्तिवादी सोच ही तरह-तरह का मूल्यांकन करने में लगी हुई है। प्रकृति की कृति मे मानव को ही कमियां नजर आती हैं। यह ऐसे नहीं ऐसे होना चाहिए। प्रकृति की हर कृति पूर्ण होती है। जो स्व एहसास कर स्व गुण का निर्माण करती है। हर क्रिया हर पल प्रकृति की कृति प्रणाली मे इतनी सूक्ष्मता से गतिमान होती है कि इसका आकलन करना ही सिर्फ हमारी अज्ञानता का परिचय है। क्योंकि इसे जाना ही नहीं जा सकता है प्रकृति की हर कृति प्रकृति सहयोगी है निर्माण तभी होता है जब उसकी आवश्यकता होती है। किसी काल्पनिकता से कोई निर्माण नहीं होता है। हर कृति का अपना एक विज्ञान है जो पूर्ण वैज्ञानिकता को धारण कर उसे संचालित करता है।हर कृति का अपना महत्व है उसे नजर अंदाज नहीं किया जा सकता है। मानव को छोड़कर प्रकृति का हर सजीव निर्जीव प्रकृति की कृति को एहसास कर रहा है और उसमें किसी प्रकार की कोई छेड़छाड़ नहीं कर रहा है। मानव की प्रकृति की कृति में बदलाव की सोच ही इसे आज विकलांग बना चुकी है और मानव की स्वयात्रा स्वयं कठिन होती चली जा रही है।

प्रकृति की हर कृति है प्राकृतिक।
मानव ना कर कोई छेड़छाड़ अप्राकृतिक।
प्रकृति में महत्व हर कृति का है उतना ही,
जितना मानव समझता खुद का है

बनी है हर कृति तभी,जब है आवश्यक।
ना कोई भी निर्माण प्रकृति में होता अनावश्यक।
बदलाव की कोशिश ना कर कोई, प्रकृति की हर कृति में।
इसी विज्ञान से संचालित है, हर कृति वैज्ञानिक है।
कृति की वैज्ञानिकता सिर्फ मानव ने ना जानी।
हर मानव ने प्रकृति की कृति में कमी मानी।
प्रकृति की कृति है निराली,जो शोक को मिटा अशोक करती जा रही।

सैटेलाइट संचार

मानवेन्द्र त्रिपाठी

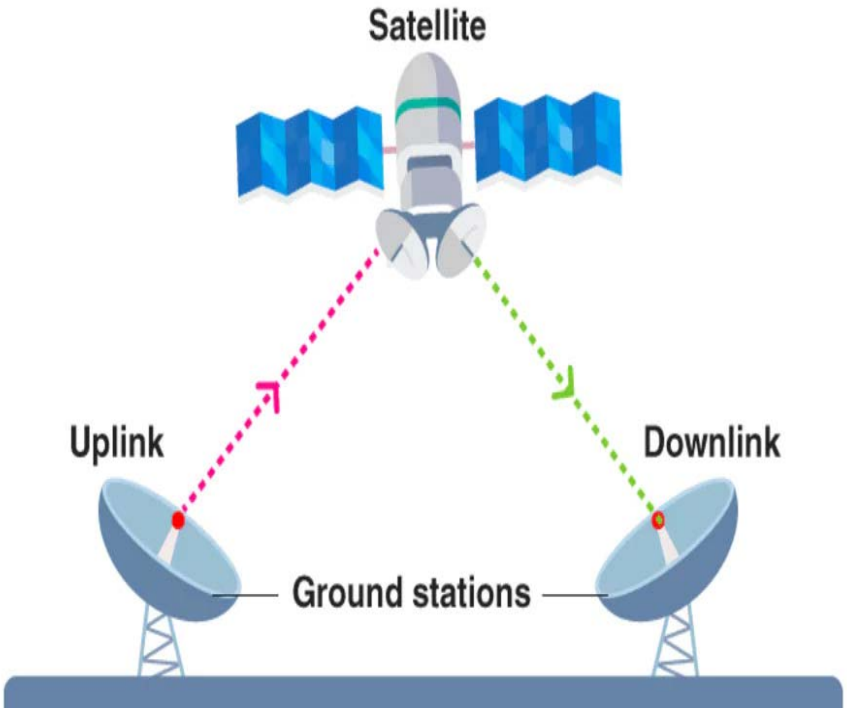

भविष्य में सैटेलाइट संचार का उपयोग अंतरिक्ष में मानव अस्तित्व के लिए भी किया जा सकता है, जैसे कि मंगल ग्रह पर कॉलोनी बसाने के लिए। सैटेलाइट संचार के माध्यम से अंतरिक्ष और पृथ्वी के बीच संचार स्थापित करना संभव होगा, जिससे अंतरिक्ष अनुसंधान और अंतरिक्ष पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा।

सैटेलाइट संचार, या उपग्रह संचार, आधुनिक युग की एक महत्वपूर्ण तकनीकी उपलब्धि है जिसने वैश्विक संचार में क्रांति ला दी है। इस तकनीक का विकास 20वीं सदी में हुआ और आज यह संचार, प्रसारण, नेविगेशन और वैज्ञानिक अनुसंधान जैसे कई क्षेत्रों में अपरिहार्य हो गया है। इस लेख में, हम सैटेलाइट संचार के मूल सिद्धांतों, इसके विकास, विभिन्न प्रकारों, और इसके मानव जीवन पर प्रभावों का विस्तृत विश्लेषण करेंगे।

सैटेलाइट संचार का इतिहास

सैटेलाइट संचार का विचार सबसे पहले 1945 में आर्थर सी. क्लार्क द्वारा प्रस्तुत किया गया था। उन्होंने संचार उपग्रहों का उपयोग करके वैश्विक संचार नेटवर्क स्थापित करने का प्रस्ताव दिया। उनका विचार था कि अगर उपग्रहों को भू-स्थिर कक्षा में रखा जाए, तो वे पृथ्वी के एक निश्चित हिस्से पर स्थायी रूप से दृष्टि में रह सकते हैं, जिससे सतत संचार संभव हो सकेगा। इस विचार ने सैटेलाइट संचार की नींव रखी।

पहला संचार उपग्रह, स्पुतनिक-1, 1957 में सोवियत संघ द्वारा लॉन्च किया गया था। इसके बाद, 1960 में, अमेरिका ने अपना पहला संचार उपग्रह, 'इको 1', लॉन्च किया। ये उपग्रह संचार की प्रारंभिक चरण में थे और सीमित क्षमताओं के साथ संचालित होते थे। हालांकि, 1962 में लॉन्च किया गया 'टेलस्टार 1' पहला उपग्रह था जिसने वास्तविक समय में टेलीविजन सिग्नल प्रसारित किया, जिससे सैटेलाइट संचार का महत्व और बढ़ गया।

सैटेलाइट संचार की कार्यप्रणाली

सैटेलाइट संचार का मुख्य सिद्धांत यह है कि एक उपग्रह पृथ्वी की सतह से रेडियो सिग्नल प्राप्त करता है और फिर इसे पुनः प्रसारित करता है ताकि सिग्नल को व्यापक दूरी पर भेजा जा सके। यह संचार प्रणाली तीन प्रमुख घटकों पर आधारित होती है:

उपग्रह (Satellite): यह संचार प्रणाली का प्रमुख घटक है, जिसे पृथ्वी की कक्षा में स्थापित किया जाता है। उपग्रह के अंदर एक ट्रांसपोंडर होता है, जो सिग्नल को प्राप्त करने, प्रवर्धन करने और पुनः प्रसारित करने का काम करता है।

ग्राउंड स्टेशन (Ground Station): ये स्टेशन पृथ्वी पर स्थित होते हैं और उपग्रह के साथ संचार स्थापित करते हैं। ग्राउंड स्टेशन सिग्नल को उपग्रह तक भेजते हैं और उपग्रह से प्राप्त सिग्नल को ग्रहण करते हैं।

संचार लिंक (Communication Link): यह वह माध्यम है जिसके द्वारा सिग्नल को ग्राउंड स्टेशन और उपग्रह के बीच भेजा जाता है। इस लिंक को दो हिस्सों में विभाजित किया जा सकता है- अपलिंक (Uplink) और डाउनलिंक (Downlink)। अपलिंक के

माध्यम से सिग्नल को ग्राउंड स्टेशन से उपग्रह तक भेजा जाता है, जबकि डाउनलिंक के माध्यम से सिग्नल को उपग्रह से ग्राउंड स्टेशन तक भेजा जाता है।

सैटेलाइट की प्रकार

सैटेलाइट संचार के लिए विभिन्न प्रकार के उपग्रहों का उपयोग किया जाता है, जो उनके कार्य और कक्षा के आधार पर विभाजित होते हैं।

भू-स्थिर उपग्रह (Geostationary Satellites): ये उपग्रह पृथ्वी की भूमध्य रेखा के ऊपर लगभग 35,786 किलोमीटर की ऊंचाई पर स्थित होते हैं। ये उपग्रह पृथ्वी के घूर्णन के साथ ही चलते हैं, जिससे वे पृथ्वी के एक निश्चित हिस्से पर स्थिर रहते हैं। ये संचार, मौसम विज्ञान, और टेलीविजन प्रसारण के लिए सबसे उपयुक्त होते हैं।

निम्न पृथ्वी कक्षा उपग्रह (Low Earth Orbit Satellites - LEO): ये उपग्रह पृथ्वी की सतह से 160 से 2,000 किलोमीटर की ऊंचाई पर स्थित होते हैं। इनका उपयोग ज्यादातर उपग्रह फोन, नेविगेशन, और पृथ्वी अवलोकन के लिए किया जाता है। इनकी कक्षा कम होती है, इसलिए ये पृथ्वी के चारों ओर तेज़ी से चक्कर लगाते हैं।

मध्यम पृथ्वी कक्षा उपग्रह (Medium Earth Orbit Satellites - MEO): ये उपग्रह पृथ्वी की सतह से 2,000 से 35,786 किलोमीटर की ऊंचाई पर स्थित होते हैं। इनका उपयोग ज्यादातर नेविगेशन और वैश्विक पोजीशनिंग सिस्टम (GPS) के लिए किया जाता है।

सैटेलाइट संचार के अनुप्रयोग

सैटेलाइट संचार का उपयोग आज विभिन्न क्षेत्रों में किया जाता है, जिनमें से कुछ प्रमुख निम्नलिखित हैं:

टेलीविजन प्रसारण: सैटेलाइट संचार का सबसे आम और व्यापक उपयोग टेलीविजन प्रसारण के लिए होता है। यह दुनिया भर में सीधा प्रसारण (Direct-to-Home, DTH) सेवाओं का आधार है। सैटेलाइट संचार के माध्यम से दूरदराज के क्षेत्रों में भी टेलीविजन सिग्नल पहुंचाए जा सकते हैं।

इंटरनेट सेवाएँ: दूरसंचार के अलावा, सैटेलाइट संचार का उपयोग इंटरनेट सेवाओं के लिए भी किया जाता है। विशेष रूप से उन क्षेत्रों में जहां पारंपरिक तारों वाली इंटरनेट सेवा उपलब्ध नहीं होती, वहाँ सैटेलाइट इंटरनेट एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

नेविगेशन और GPS: सैटेलाइट संचार ने नेविगेशन सेवाओं में क्रांति ला दी है। GPS (Global Positioning System) के माध्यम से, सैटेलाइट संचार का उपयोग दुनिया भर में किसी भी स्थान की सटीक जानकारी प्राप्त करने के लिए किया जा सकता है। दूरसंचार: सैटेलाइट संचार का उपयोग दूरसंचार सेवाओं में भी होता है। अंतर्राष्ट्रीय कॉल, मोबाइल संचार और इंटरनेट सेवाओं के लिए उपग्रहों का व्यापक उपयोग किया जाता है।

विज्ञान और अनुसंधान: सैटेलाइट संचार का उपयोग विज्ञान और अनुसंधान के क्षेत्र में भी होता है। मौसम विज्ञान, अंतरिक्ष अनुसंधान, और भूगर्भीय अध्ययन के लिए उपग्रहों का उपयोग किया जाता है।

सैटेलाइट संचार के लाभ

सैटेलाइट संचार के कई लाभ हैं, जो इसे अन्य संचार माध्यमों से श्रेष्ठ बनाते हैं:

वैश्विक कवरेज: सैटेलाइट संचार के माध्यम से पृथ्वी के किसी भी हिस्से में संचार स्थापित किया जा सकता है। यह उन क्षेत्रों में भी काम करता है जहां पारंपरिक संचार नेटवर्क नहीं पहुंच पाते।

विश्वसनीयता: सैटेलाइट संचार प्रणाली अत्यधिक विश्वसनीय होती है, क्योंकि यह प्राकृतिक आपदाओं और अन्य बाहरी प्रभावों से कम प्रभावित होती है।

तेज़ डेटा प्रसारण: सैटेलाइट संचार के माध्यम से उच्च गति डेटा प्रसारित किया जा सकता है, जिससे इसे इंटरनेट, टेलीविजन और अन्य संचार सेवाओं के लिए उपयुक्त बनाता है।

सैटेलाइट संचार के चुनौतियाँ

सैटेलाइट संचार के कई फायदे हैं, लेकिन इसके साथ कुछ चुनौतियाँ भी जुड़ी हुई हैं-

उच्च लागत: सैटेलाइट संचार प्रणाली की स्थापना और संचालन में उच्च लागत आती है। उपग्रह लॉन्च करना और उसे कक्षा में बनाए रखना एक महंगा कार्य है।

विलंबता (Latency): सैटेलाइट संचार में विलंबता एक महत्वपूर्ण मुद्दा है, खासकर जब भू-स्थिर उपग्रहों का उपयोग किया जाता है। यह विलंबता संचार की गुणवत्ता को प्रभावित कर सकती है।

प्राकृतिक और मानव निर्मित व्यवधान: सैटेलाइट संचार प्रणाली प्राकृतिक आपदाओं, अंतरिक्ष मलबे, और सौर विकिरण जैसी चीजों से प्रभावित हो सकती है। इसके अलावा, साइबर हमलों का खतरा भी बना रहता है।

सैटेलाइट संचार का भविष्य

सैटेलाइट संचार तकनीक का भविष्य अत्यधिक संभावनाओं से भरा है। नवीनतम तकनीकी विकास, जैसे कि छोटे उपग्रह (नैनोसैटेलाइट्स) और मेगाकॉन्स्टेलेशन्स (जैसे स्पेसएक्स का स्टारलिंक), सैटेलाइट संचार को और भी सुलभ और प्रभावी बना रहे हैं। 5G और इंटरनेट ऑफ थिंग्स (IoT) के विकास के साथ, सैटेलाइट संचार का उपयोग और बढ़ने की संभावना है।

इसके अलावा, भविष्य में सैटेलाइट संचार का उपयोग अंतरिक्ष में मानव अस्तित्व के लिए भी किया जा सकता है, जैसे कि मंगल ग्रह पर कॉलोनी बसाने के लिए। सैटेलाइट संचार के माध्यम से अंतरिक्ष और पृथ्वी के बीच संचार स्थापित करना संभव होगा, जिससे अंतरिक्ष अनुसंधान और अंतरिक्ष पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा।

नवसंवत्सर है भारतीय नववर्ष

गौरीशंकर वैश्य विनम्र
लखनऊ

भारतीय कालगणना की बात करें तो हमारे ज्योतिष के अनुसार पृथ्वी की आयु एक अरब 97 करोड़ 39 लाख 49 हजार वर्ष है। हमारे प्राचीन ग्रंथों में एक - एक पल की गणना की गई है। ईस्वी संवत का सम्बंध ईसा से है, हिजरी संवत का संबंध मुस्लिम जगत और हजरत मुहम्मद से है, किंतु विक्रमी संवत का संबंध किसी भी धर्म से न होकर सारे विश्व की प्रकृति, खगोल सिद्धांत एवं ब्रह्मांड के ग्रहों तथा नक्षत्रों से है। इसका उल्लेख ब्रह्मांड के सबसे पुरातन ग्रंथ वेदों में भी है।

अँग्रेजी नववर्ष 2025 अभी 31 दिसंबर की रात्रि 12 बजे या 1 जनवरी 2025 को हम मना चुके हैं। प्रतिवर्ष अधिकांश भारतवासी, हमारी सरकार, हमारे दूरदर्शन चैनल, हमारा सोशल मीडिया बड़ी धूमधाम से नववर्ष का स्वागत करते हैं। बड़े-बड़े होटल, पब, रेस्तरां आदि में हजारों रुपये प्रति व्यक्ति व्यय करके देश का कुलीन वर्ग सीटें सुरक्षित कराता है।

नववर्ष पर करोड़ों बधाई-पत्र एवं स्मार्टफोन से शुभकामना-संदेश भेजे जाते हैं। कुछ मनचले आधी रात तक टीवी के सामने बैठकर मध्य रात्रि में ही पटाखे छोड़ कर, नशे में धुत होकर घर के दरवाजे खटखटाते हैं।लोग 'हैप्पी न्यू इयर' के बैनर. होर्डिंग, पोस्टर आदि के माध्यम से उत्सव मनाते हैं। रात-रातभर जागरण विदेशी नया वर्ष मनाने से ऐसा प्रतीत होता है, मानो सारी खुशियाँ एक साथ आज ही मिल जाएँगी।

हम भारतीय पश्चिमी अंधानुकरण में इतने सराबोर हो जाते हैं कि उचित-अनुचित का बोध त्याग अपनी सभी सांस्कृतिक मर्यादाओं को तिलांजलि दे बैठते हैं। यदि कोई प्रश्न करे कि क्या यह भारतीय नववर्ष है, तो लोगों का यही उत्तर होता है कि जब संसार के अधिकतर देशों में समान कालगणना के लिए ईस्वी सन् स्वीकार कर लिया है, तो दुनिया के साथ चलने के लिए हम भी इसका प्रयोग करते हैं। इसका अर्थ यह है कि हम आज भी मानसिक रूप से पराधीन हैं और सुविधा को आधार मानकर राष्ट्रीय गौरव से समझौता कर लिया है।

कवि सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के अनुसार 'यह नया वर्ष हमें गुलामी की धरोहर में मिला है।' उन्होंने पहली जनवरी को शुरु होने वाले नववर्ष के लिए 'शुभकामनाएँ 'इन शब्दों में दी है -

नए साल की शुभकामनाएँ।
खेतों की मेड़ों पर धूल भरे पाँव को
कुहरे में लिपटे उस छोटे से गाँव को
नए साल की शुभकामनाएँ।

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर अपनी एक कविता में स्पष्ट कहते हैं कि यह वर्ष हमें स्वीकार नहीं। कुछ पंक्तियाँ उद्धृत की जा रही हैं -

ये वर्ष हमें स्वीकार नहीं
ये है अपना त्यौहार नहीं।
है अपनी ये तो रीत नहीं
है अपना ये व्यवहार नहीं।

धरा ठिठुरती है सर्दी से
आकाश में कोहरा गहरा है।
बाग - बाजारों की सरहद पर
सर्द हवा का पहरा है।

तब चैत्र शुक्ल की प्रथम तिथि

नव वर्ष मनाया जाएगा।
आर्यावर्त की पुण्यभूमि पर
जब गान सुनाया जाएगा।

हमारे ऋषि - मुनियों, देशभक्त शासकों और राष्ट्रप्रेमी कवियों ने भारतीय हिन्दू नववर्ष का शुभारम्भ चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से माना है। यह भारतीय संस्कृति के सर्वथा अनुकूल है। इसको अब्द, हायन, शरद, वसंत, वर्ष, कालग्रंथि तथा ऋतुवृत्ति भी कहते हैं। संवत्सर में छहों ऋतुएँ हैं, अतएव कहा गया है 'संवसन्ति ऋतुवोत्र स संवत्सरः'।

एक जनवरी से प्रारम्भ होने वाली कालगणना को हम ईस्वी सन् के नाम से जानते हैं, जिसका संबंध ईसा मसीह से है। इसे रोम के सम्राट जूलियस सीजर द्वारा ईसा के जन्म के तीन वर्ष बाद प्रचलन में लाया गया। भारत में ईस्वी सन् का प्रचलन अँग्रेजी शासकों ने 1752 में किया। अधिकांश राष्ट्रों के ईसाई होने और अँग्रेजों के विश्वव्यापी प्रभुत्व के कारण ही इसे विश्व के अनेक देशों ने अपनाया। अँग्रेजी वर्ष के महीनों में दिनों में एकरूपता नहीं है, किसी माह में 30 दिन हैं, तो किसी में 31, जबकि नवसंवत्सर में प्रत्येक मास में 30 दिन होते हैं और प्रत्येक चंद्र मास में,चंद्रमा की कलाओं के अनुसार दो पक्ष - शुक्ल पक्ष तथा कृष्ण पक्ष होते हैं।आंग्ल वर्ष में कालगणना नक्षत्रों की गति पर निर्भर न होने के कारण अवैज्ञानिक है।

ग्रेगेरियन कैलेण्डर की कालगणना मात्र दो हजार वर्षों के अति अल्प समय को दर्शाती है।

भारतीय कालगणना की बात करें तो हमारे ज्योतिष के अनुसार पृथ्वी की आयु एक अरब 97 करोड़ 39 लाख 49 हजार वर्ष है। हमारे प्राचीन ग्रंथों में एक - एक पल की गणना की गई है। ईस्वी संवत का सम्बंध ईसा से है, हिजरी संवत का संबंध मुस्लिम जगत और हजरत मुहम्मद से है, किंतु विक्रमी संवत का संबंध किसी भी धर्म से न होकर सारे विश्व की प्रकृति, खगोल सिद्धांत एवं ब्रह्मांड के ग्रहों तथा नक्षत्रों से है। इसका उल्लेख ब्रह्मांड के सबसे पुरातन ग्रंथ वेदों में भी है।

नवसंवत्सर की प्राचीनता

पौराणिक आख्यानों के अनुसार हिन्दू नववर्ष के आरम्भ की तिथि को ब्रह्मा जी ने सृष्टि-सर्जना आरम्भ की थी। इसकी पुष्टि ब्रह्म पुराण के निम्नलिखित श्लोक से होती है-

चैत्र मासि जगद् ब्रह्मा ससर्ज प्रथमे अहनि।
शुक्ल पक्षे समग्रे तु सदा सूर्योदये सति।

अर्थात चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से तिथि के सूर्योदय में ब्रह्मा जी ने सृष्टि का निर्माण कार्य आरम्भ किया था।

धर्मग्रंथों में इसे 'नवसंवत्सरोत्सव 'के रूप में मनाए जाने का विधान है। अथर्ववेद में उल्लेख के अनुसार वैदिककाल से इसे एक महापर्व के रूप में मनाया जाता रहा है। एक पौराणिक मान्यता के अनुसार सृष्टि निर्माण के समय सर्वप्रथम भगवान विष्णु ने अवतार लिया था और वह उनका मत्स्यवतार था, जो जल में हुआ था। इसकी पुष्टि वैज्ञानिकों ने भी की है कि सृष्टि का पहले जीव का उद्भव जल में हुआ था।

नवसंवत की ऐतिहासिकता

नवसंवत का ऐतिहासिक महत्व भी कम नहीं है। इसी दिन सूर्य देव का उदय हुआ था तथा इसी दिन भगवान राम ने बालि का वध किया था। इसी दिन भगवान राम का राज्याभिषेक हुआ था।

दो हजार वर्ष पहले शकों ने सौराष्ट्र और पंजाब को रौंदते हुए अवंतिका (उज्जैन) पर आक्रमण किया तथा विजय प्राप्त की। सम्राट विक्रमादित्य ने राष्ट्रीय शक्तियों को एक सूत्र में पिरोया और शक्तिशाली मोर्चा खड़ा करके ईसा पूर्व 57 में शकों पर भीषण आक्रमण कर विजय प्राप्त की। वीर विक्रमादित्य ने शकों को उनके गढ़ अरब में भी करारी मात दी। अरब विजय के उपलक्ष्य में मक्का में महाकाल भगवान शिव मंदिर का निर्माण करवाया। इसी सम्राट विक्रमादित्य के नाम पर भारत में विक्रमी संवत प्रचलित हुआ। सम्राट पृथ्वीराज के शासनकाल तक इसी संवत के अनुसार कार्य चला। इसके बाद मुगलों के शासनकाल में सरकारी क्षेत्र में हिजरी सन् चलता रहा। स्वतंत्र भारत के कुछ नेताओं के अनुचित दृष्टिकोण के कारण सरकार ने शक संवत स्वीकार कर लिया, लेकिन शकों को परास्त करने वाले सम्राट विक्रमादित्य के नाम से प्रचलित संवत को कहीं स्थान न दिया।

फिर भी इस नवसंवत्सर की प्रासंगिकता भारतीय जनमानस में कभी कम नहीं हुई।

नवसंवत का है प्रकृति से गहरा नाता

नवसंवत का हमारी प्रकृति से गहरा नाता है। नवसंवत्सर का प्रारम्भ वसंत ऋतु में होता है। यह समय शीतकाल की शीतलता और ग्रीष्मकाल की ऊष्णता का मध्यविंदु होता है। इस कारण जलवायु समशीतोष्ण होती है। यही समय है,जब फसलें पककर तैयार हो जाती हैं। इस नववर्ष के आरम्भ होते ही वासंती छटा चारोंओर प्रकृति का श्रंगार कर देती है। सूर्य, चंद्र, तारे, आकाश, पेड़-पौधे, फल-फूल की नवचेतना और सौंदर्य चराचर को प्रिय लगने लगते हैं। पुष्प मनमोहक सुगन्ध विखेरने लगते हैं। धूप और हवा तन-मन को पुलकित करने लगती है। वातावरण उल्लास और उमंग से भर उठता है। संपूर्ण प्रकृति नवयौवना संपन्न नायिका की भाँति दृष्टिगोचर होती है। जड़-चेतन सभी में आनंद फूट पड़ता है।

नवसंवत्सर की प्रासंगिकता

अँग्रेजी शिक्षा के प्रभावस्वरूप भले ही सर्वत्र ईस्वी सन् का बोलबाला हो, परन्तु वास्तविकता यह है कि देश के सभी त्यौहार जैसे दशहरा, दीवाली, होली, रक्षाबंधन, कार्तिक पूर्णिमा आदि तथा राम, कृष्ण, बुद्ध, महावीर, गुरुनानक, हनुमान जी आदि की जयंती एवं पर्वोत्सव आज भी भारतीय कालगणना के हिसाब से मनाए जाते हैं। विवाह, मुण्डन, श्राद्ध, तर्पण, नामकरण आदि के मुहूर्त भारतीय पंचांग पद्धति के अनुसार ही निकाले जाते है।जन्मकुण्डली तथा पंचांग

भी इसी आधार पर बनते हैं। देश के बड़े से बड़े राजनेता भी सत्तासीन होने के लिए शुभ मुहूर्त की प्रतीक्षा करते हैं। सरकार का बजट भी नवसंवत्सर वर्ष में ही प्रस्तुत किया जाता है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार इस दिन नक्षत्र शुभ स्थिति में होते हैं अर्थात किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने के लिए शुभ मुहूर्त होता है।

राष्ट्र के स्वाभिमान एवं देशप्रेम जगाने वाले अनेक प्रसंग चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से जुड़े हुए हैं। इस दिन घटित कुछ प्रसंग उद्धरणीय हैं -

- धर्मराज युधिष्ठिर का राज्याभिषेक।
- शक्ति और भक्ति के नौ दिन अर्थात नवरात्र स्थापना।
- प्रभु राम के जन्म दिन रामनवमी के पूर्व नौ दिन का श्रीराम महोत्सव।
- आर्य समाज का स्थापना दिवस, सिख गुरु अंगददेव जी, संत झूलेलाल तथा राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के संस्थापक डॉ. केशवराम बलीराम हैडेगवार का जन्म दिन।

भारतीय नववर्ष धूमधाम से मनाएँ

सर्वप्रथम हम संकल्प करें कि आँग्ल नववर्ष को न तो किसी को 'हैप्पी न्यू इयर' बोलें और न फोन से संदेश भेजें। भारतीय नववर्ष को हम सब मिलजुलकर सादगी और शालीनता से मनाएं। मांस- मदिरा का प्रयोग न करें। अश्लील-अश्लील कार्यक्रमों का रसपान न करें।हम दुर्गुणों को त्यागकर सद्गुणों तथा भारतीय संस्कृति को अपनाने का संकल्प लें।

हिन्दू नववर्ष मनाने लिए निम्न प्रकार के आयोजन किए जा सकते हैं -

- घरों की छतों पर भगवा ध्वज फहराएँ, घरों को कागज की झण्डियों और गुब्बारों से सजाएँ,रंगोली बनाएँ तथा दरवाजे पर वंदनवार लगाएँ।
- प्रातःकाल स्नान कर घरों में देवपूजन करें, संभव हो तो पवित्र नदियों में स्नान करें, तीर्थ-स्थानों में जाकर किसी मंदिर में पूजा-पाठ करें।
- धर्मग्रंथों का सामूहिक पाठ करें, सायंकाल घरों में और देवस्थलों में दीपक जलाएँ।
- भारतीय गणवेश धारण करें, मस्तक पर तिलक-चंदन लगाएँ तथा कलाई में मौली-कलाबा बाँधे।
- एक-दूसरे को नववर्ष की शुभकामना-बधाई दें या फोन से मित्रों को संदेश संप्रेषित करें।
- एक-दूसरे से मिलने पर हाथ जोड़कर 'नमस्ते' करें तथा जय श्रीराम या वंदेमातरम बोलें।
- मोबाइल से वार्ता के पूर्व हैलो कहने के स्थान पर 'हरि ओम'कहें।वृद्धजन के चरण स्पर्श करके आशीर्वाद लें तथा छोटों को स्नेह-दुलार से शुभाशीष दें।
- वृद्धाश्रम जाकर वृद्धजन से उनका हालचाल पूछें, मिठाई खिलाएँ तथा निर्धनों को भोजन कराकर वस्त्रादि दान करें।
- गोशालाओं में गायों को चारादान करें तथा गुड़ खिलाएँ।
- विशिष्ट स्थलों या पार्क में संगोष्ठी, वार्ता, काव्य गोष्ठी आदि कार्यक्रम आयोजित किए जाएँ।
- घर और विद्यालयों में बच्चों को नवसंवत्सर से संबंधित कथाओं तथा महापुरुषों के चरित्रों से अवगत कराएँ।

ईस्वी सन् के साथ ही गुलामी के घाव हरे होने लगते हैं, जबकि भारतीय नववर्ष भारत के नव राष्ट्रवाद के उदय का प्रतीक है। यह पर्व हमें नई ऊर्जा, नई ज्योत्स्ना, नव आराधना, नव शक्ति और नव परिकल्पना की दृष्टि देता है। यह पावन हिन्दू पर्व है।

हमारे भूतपूर्व प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई को जब किसी ने पहली जनवरी को नववर्ष की बधाई दी, तो उन्होंने उतर दिया था- "किस बात की बधाई? मेरे देश और देश के सम्मान का तो इस नववर्ष से कोई संबंध नहीं।"यही तो हम लोगों को भी समझना होगा।

स्वामी विवेकानंद ने कहा था - "यदि हमें गौरव से जीने का भाव जगाना है, अपने अंतर्मन में राष्ट्रभक्ति के बीज को पल्लवित करना है, तो राष्ट्रीय तिथियों का आश्रय लेना होगा।"

अतः आने वाला शुभ नवसंवत्सर अर्थात विक्रमी संवत 2082, जो इस वर्ष अँग्रेजी दिनांक 30 मार्च, 2025 को आएगा, का स्वागत करें तथा इस राष्ट्रीय पर्व को पूर्ण हर्षोल्लास के साथ मनाएँ और सनातन के पुरातन सांस्कृतिक प्रतीक का हृदय से सम्मान करें। अस्तु, सभी शुभेच्छुओं को नवसंवत्सर की मंगलमय हार्दिक बधाई।

मंगलमय हो सभी को, नवसंवत्सर वर्ष।
जन-जन को प्रतिपल मिले, सुख, समृद्धि, उत्कर्ष।

गोमती, तुम बहती रहना

प्रफुल्ल कुमार त्रिपाठी
लखनऊ

लेखक आकाशवाणी से सेवानिवृत्त अधिकारी हैं।

आजकल जब हम ये सोचते हैं कि अपने बच्चों के साथ ज्यादा समय रह नहीं पा रहे हैं, तो हमें ग्लानि होती है। अगर किसी घर में पति-पत्नी दोनों जॉब में हैं तो ये सामान्य सोच है कि वे ज्यादा समय अपने बच्चों को नहीं दे सकेंगे। लेकिन ये समझना होगा कि आपके 5 सेकंड काफी है उनको ताकत देने के लिए। हम 5 घंटे उनके साथ बैठे हैं लेकिन हमारे अंदर कोई शक्ति ही नहीं है तो उसका प्रभाव भी नहीं पड़ता है।

वे कुछ विशेष व्यक्ति और उनका आभा मंडल! अपने जीवन में अनगिनत लोगों का साथ मिलता-बिछड़ता रहा। कुछ दो चार कदम चले, फिर सायास या अनायास उनका साथ छूट गया या यह भी कह सकते हैं कि वे साथ छोड़कर चले गए। कुछ दो चार साल संग साथ चले, उनका भी साथ छूट गया। कुछ प्रत्यक्षतः आस पास नहीं हैं, स्मृतियों के अंतहीन गलियारे में लगभग भटक से गए थे किंतु यकायक सोशल मीडिया या संचार माध्यम से वे उसी संलग्नता से अब फिर से जुड़ गए हैं जैसा पहले जुड़े थे।सोशल मीडिया की भूमिका भी बहु आयामी है। वह न केवल साथियों की खैर खबर दे देता है, परदेश में बैठे लोग अपनी जड़ भी उसके माध्यम से तलाशने लगे हैं। लेकिन कभी कभी सोशल मीडिया आपसी भाई चारा और संबंधों को भी संकट में डाल दे रहा है। इसीलिए उस पर सरकार को बैन भी लगाना पड़ जाता है।

मैंने यह महसूस किया है (शायद आप भी करते हों) कि हर व्यक्ति अपने साथ एक ऊर्जा लेकर चलता है जिसे हम आभामंडल कहते हैं। ये आभामंडल हमारी सोच, भावना, हर एक शब्द, व्यवहार, हमारे संस्कारों से मिलकर बनता है। असल में ये हमारी वास्तविक ऊर्जा की परिचायक है। आप किसी से प्यार से कितनी भी बात करें या कितना भी अच्छा व्यवहार करें, लेकिन आपकी आभा में जो होगा वह उन्हें स्वतः

ही मिल जाएगा। हमारी आत्मा के अंदर सामंजस्य बैठाने की ताकत नहीं है। मैं छोटी-छोटी बातों में प्रतिक्रिया दे दूं, परेशान हो जाऊं, बिजनेस में उलटफेर कर दूं तो फिर मेरे आभामंडल में क्या होगा?

उदाहरण के लिए जब हम देवी-देवताओं के चित्र ध्यान से देखते हैं तो पाते हैं कि उनके पीछे सफेद रंग का चक्र होता है। हमारे पास भी चक्र के रूप में आभा है लेकिन उसका रंग क्या है? देवी-देवताओं का आभामंडल सफेद होता है। मतलब एक भी दाग नहीं। इसीलिए जो पूरी तरह से साफ है वह पूज्यनीय बन जाता है। उनके आगे आकर कोई भी, कैसे भी संस्कार दर्शाए वह सिर्फ आशीर्वाद ही देते हैं। जब हम मंदिर में जाते हैं तो देवी-देवताओं के आगे जाकर यही तो कहते हैं - 'मैं नीच हूं, पापी हूं, कपटी हूं। क्षमा करिए प्रभु!' कुछ भक्त तो बाकायदा कान पकड़ते हुए माफ़ी मांगते दिखते हैं। लेकिन बाहर हम न तो कभी ऐसा कहते हैं या करते हैं बल्कि गलत आचरण या काम करते हुए संकोच भी नहीं करते हैं। फिर भी देवी-देवता या उन जैसे व्यक्तित्व के धनी लोग हमें सिर्फ आशीर्वाद ही देते हैं। क्योंकि उनके चक्र में उसके अलावा कुछ और है ही नहीं।

इसका मतलब है यह है कि उन विशेष लोगों के संस्कार में चिड़चिड़ा होना, गुस्सा होना, नाराज होना, उदास होना, चिंता करना, परेशान करना आदि ये सब कुछ नहीं है। हम दूर-दूर के मंदिरों में जाते हैं। वहां हमें कितना समय मिलता है देवी-देवता की मूर्ति के सामने खड़ा होने के लिए? कल्पना करें कि लोग कितने घंटे लाइन में खड़े होते हैं और उसमें भी कुछ अस्थिर चित्ती लोग ऐसे होते हैं जो जल्दी-जल्दी करते हैं, मानो भगवान उनको कुछ ज्यादा दे देंगे! मूर्ति को 10-20 सेकंड हि देखते हैं लेकिन बाहर आकर कहते हैं बहुत अच्छे दर्शन हुए क्योंकि उनका यह सोचना है कि शक्ति मिलने में 5 सेकंड भी बहुत होते हैं। यह कितना वास्तविक है समझ से परे है। सुपात्रता और कुपात्रता भी मायने रखती है।लेकिन यह तो सच है ही कि इन जगहों या लोगों से एक पॉजिटिव एनर्जी हमें मिलती है।

आजकल जब हम ये सोचते हैं कि अपने बच्चों के साथ ज्यादा समय रह नहीं पा रहे हैं, तो हमें ग्लानि होती है। अगर किसी घर में पति-पत्नी दोनों जॉब में हैं तो ये सामान्य सोच है कि वे ज्यादा समय अपने बच्चों को नहीं दे सकेंगे। लेकिन ये समझना होगा कि आपके 5 सेकंड काफी है उनको ताकत देने के लिए। हम 5 घंटे उनके साथ बैठे हैं लेकिन हमारे अंदर कोई शक्ति ही नहीं है तो उसका प्रभाव भी नहीं पड़ता है। यह महत्वपूर्ण नहीं है कि हम कितने घंटे अपने परिवार के साथ रहे। यदि आपका औरा साफ है तो आप ऑफिस में बैठकर भी उनको शक्ति भेज सकते हैं। अगर हमारा आभामंडल सही नहीं है तो हम साथ में बैठकर भी उनको कुछ भी नहीं दे पा रहे हैं।

इसी तरह जब दो लोग आपस में मिलते हैं बातचीत कर रहे होते हैं तो उनका आभामंडल भी एक - दूसरे से बातें करता है, इसीलिए कुछ लोगों से मिलकर हम कहते हैं कि इनसे मिलकर बहुत अच्छा लगा। वहीं कुछ लोगों के लिए कहते हैं कि उनसे मिलकर तो हमारा सिर और भारी हो गया। भले सामने वाले ने हमसे बिल्कुल सही बात की हो और अच्छा व्यवहार भी लेकिन उनका आभामंडल उनकी आंतरिक शक्ति.. संस्कार का प्रतिबिंब था जिससे हमें उनसे मिलकर अच्छा नहीं लगता है।

आज जब हम अपनी ज़िंदगी का बही खाता लिख रहे हैं तो इस श्रेणी में आने वाले अपने किन किन स्वजनों को याद करूं? यदि याद नहीं करूंगा तो अशिष्टता होगी ही। इसलिए उनको अपने पवित्रतम मन से स्मरण कर रहा हूँ जिसके साक्षी आप बन रहे हैं। गवाही देंगे न?

सूक्ष्म रूप में अब भी उपस्थित अपने आदरणीय गुरुदेव श्री आनंद मूर्ति जी, पिता श्री आचार्य प्रतापादित्य, नाना जी जस्टिस एच.सी.पी. त्रिपाठी, डा.हरिवंश राय बच्चन, डा.उदयभान मिश्र, आचार्य रघुनाथ प्रसाद, पंडित विद्यानिवास मिश्र, शिवानी जी, मुक्ता शुक्ला, डा.एस. के. एस.मार्या (जिन्होंने वर्ष 2010 में मेरे जानलेवा और जटिल इंफेक्टेड हिप ज्वाइंट को रिप्लेस किया और अपना अनुभव बताया कि आपरेशन की नीम बेहोशी के दौरान उन्होंने मुझसे क्या क्या बातें कीं और उनको मुझमें क्या-कुछ ख़ास

दिखा था जो अन्य पेशेंट से मुझे अलग कर दिया था), बड़े भाई और अब भी मार्गदर्शक आत्मीय आदरणीय श्री संत शरण, शिक्षक गोपाल पति त्रिपाठी, मोती बी. ए. भोला प्रसाद आग्नेय, उस्ताद राहत अली, ऊषा टंडन, मालिनी अवस्थी,अग्निहोत्री बंधु (राकेश देवेश), जनाब इक़बाल अहमद सिद्दीकी, कर्नल एल. पी. सिंह, कर्नल राहुल सिंह राठौर, कर्नल राज्यवर्धन सिंह (जो सेना की 7 मैकेनिकल इन्फैंट्री 1 डोगरा में मेरे बेटे के साथ थे और जिन्होंने अपने दो पुत्रों का नाम करण मेरे शहीद युवा पुत्र यश आदित्य के नाम पर क्रमशः यश और आदित्य कर दिया है), नरेंद्र शुक्ल, नवनीत मिश्र, सर्वेश दुबे, के.सी. गुप्त, डा. एस.के .ग्रोवर, छोटे बड़े के. के. श्रीवास्तव, पद्मश्री डा योगेश प्रवीण, भाई के.सरन, वरिष्ठ एडवोकेट, उत्तम चैटर्जी, एच. वसंत, विनोद चैटर्जी, निर्मला कुमारी,प्रकाश चंद्र त्रिपाठी (मेरे मामा जी) , यज्ञदत्त बनकटा ,साहित्य अकादमी के पूर्व अध्यक्ष प्रोफेसर विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, प्रोफेसर अनंत मिश्र, प्रोफेसर रामदेव शुक्ल, प्रोफेसर कृष्ण चंद्र लाल श्रीवास्तव , धीरा (जोशी) शर्मा, इंजीनियर आर.आर.एन. प्रसाद, जस्टिस ओमप्रकाश श्रीवास्तव, आचार्य चंद्र भूषण त्रिपाठी, डा गुलाब चंद, डा पूनम सिंह, प्रदीप गुप्ता, दिनेश शुक्ला, डा पवन और डॉ शांभवी सिंह पाटिल , प्रोफेसर आर.जी. गुप्ता, उ. प्र.के पूर्व डी.जी.पी. के.एल. गुप्ता, एस. सी. कंबोज, जंगी सिंह, डा प्रकाश चंद्र गुप्ता,मित्र देव व्रत तिवारी, प्रदीप गुप्ता ,आचार्य शुद्धानंद,कपिलदेव जी (जो आगे चल कर अवधूत बन गए और उनका नाम दिनेश्वरानन्द हो गया), अशोक मानव (संपादक 'प्रकृति मेल' पत्रिका), प्रदीप श्रीवास्तव (संपादक 'प्रणाम पर्यटन' पत्रिका), मुक्ता शुक्ल, डा. गुलाब चंद (सेवानिवृत्त अपर महानिदेशक आकाशवाणी) नित्यानंद मैठानी, मेरे साढ़ू ओम प्रकाश मणि त्रिपाठी, मेरे मित्र ओम प्रकाश पांडे,ज्ञान प्रकाश पांडे,अपनी कालोनी की सोसायटी जिसका मैं सचिव हूँ उसके अध्यक्ष डा. प्रकाश चंद्र गुप्ता आदि महानुभाव याद आते हैं।

भाग्यशाली हूं कि इन कुछ विशेष महानुभावों के आभामंडल ने मेरे जीवन को दीप्तिमान कर दिया। उनका स्नेह और साहचर्य मेरा संबल बना रहा। वे शरीर में हैं तो मेरे प्रेरक हैं और यदि शरीर में नहीं हैं तो वे आज भी मेरे पास सूक्ष्म रूप से बने हुए हैं और मैं इन सभी के लिए नत मस्तक हूं।

अब अपनी छूटी कहानी की ओर चलते हैं। लखनऊ की आबो हवा में अब अपना जीवन ऐडजेस्टमेंट की राह पर निकल चुका था। दोनों बेटे अपने कैरियर के सिलसिले में 10 +2 करने के बाद भारतीय सेना को चुन चुके थे। बड़े बेटे दिव्य आदित्य ने टेक्निकल इंट्री स्कीम के माध्यम से उईनतरी ली थी तो छोटे बेटे यश आदित्य ने एन.डी.ए. की अखिल भारतीय स्तर पर होने वाली प्रवेश परीक्षा में प्रथम प्रयास में सफलता पाकर। हम सभी विशेषकर मेरे पिता आचार्य प्रतापादित्य के लिए यह गौरव का विषय था।

सैन्य प्रशिक्षण के दिन बहुत ही कठिन होते हैं। यह समझा जाए कि शरीर और मन को लोहा बना दिया जाता है। सैनिकों में देश की आन-बान-शान के लिए अपने जीवन का बलिदान कर देने की भावना कूट कूट कर भर दी जाती है। बेटों से मिलना जुलना भी अब कम होता जा रहा था। हम लोग कभी बदे बेटे से मिलने सिकंदराबाद तो कभी छोटे से मिलने पुणे जाया करते थे और बेटों से मिलकर आते समय मन भारी-भारी हो जाया करता था। बच्चे जब छुट्टियों में घर आते तो घर जगमगा उठता था। लेकिन वे आते ही वापस जाने का जब रिजर्वेशन कराते थे तो मन दुखी हो जाता था। मीना मेरी पत्नी बच्चों के मनपसंद व्यंजन बनाया करती थीं। आज जब उन दिनों को हम याद करते हैं तो रोमांचित हो उठते हैं। मैं दावे के साथ कहना चाहूँगा कि मेरे दोनों बच्चों ने कभी भी यह नहीं कहा कि सैन्य प्रशिक्षण से उनको कोई दिक्कत है अथवा वे आर्मी छोड़ना चाहते हैं। मानो वे जन्मजात योद्धा थे और उनका जन्म ही देश की सेवा के लिए हुआ था। ऐसा मैं इसलिए भी कहना चाहता हूँ कि उसी दौरान समवयस्क मेरे भांजे कलरव (आत्मज राकेश-प्रतिमा मिश्रा) ने भी एन.डी. ए. क्वालीफाई किया। उसने भी आर्मी की ट्रेनिंग लेनी शुरू की लेकिन जितनी कठोर ट्रेनिंग से उसे गुजरना पड़ा उसने हिम्मत हार दी और उसके पैरेंट्स लाखों रूपये का हरजाना अदा करके उसे एन. डी.ए. की ट्रेनिंग से वापस ले गए।

आज इन स्मृतियों से गुजरते हुए मन भावुक हो उठा है। कारण, मेरे छोटे योद्धा पुत्र लेफ्टिनेंट यश आदित्य के सैन्य प्रशिक्षण कुशलता पूर्वक पूर्ण कर लेने, पासिन्ग आउट परेड में कमीशण्ड होने के गौरवपूर्ण क्षण के बाद उसकी पहली नियुक्ति लेह में पूर्ण होने के बाद वर्ष 2007 में लेह से वापसी के दौरान हुई उस हृदय विदारक दुर्घटना की याद है जिसमें उसे अपनी शहादत देनी पड़ी। जवान बेटे को कंधा देते हुए जीवन के सबसे विदारक दुख से होकर मुझे गुजरना पड़ा है। प्रकृति और परमात्मा को यही मंजूर था इसलिए मैंने इस दुख का वरण किया और मुझे गीता के इस श्लोक ने संबल प्रदान किया-

"जातस्य हि ध्रुवो मृतयुरध्रुवम जन्म मृतस्य च।
तस्मादपरिहारये अर्थ न त्वं शोचितुमर्हसि।।"

अर्थात जन्मने वाले की मृत्यु निश्चित है और मरने वाले का जन्म निश्चित है। इसलिए जो अटल है, अपरिहार्य है उसके विषय में शोक नहीं करना चाहिए।

(क्रमशः ,अगले अंक में)

ऋतुराज वसंत

सीताराम गुप्ता
पीतमपुरा, (दिल्ली)

वास्तव में वसंत को उसके प्राकृतिक सौंदर्य के कारण ये उपाधि मिली है। वसंत में चारों तरफ रंग-बिरंगे फूल खिले होते हैं। कड़कड़ाती सर्दी में जिन वृक्षों ने अपने पत्तों को तिलांजलि दे दी थी वो सब पुनः कोमल नव पल्लवों के परिधान से सुसज्जित हो उठते हैं। वर्षा जहाँ हरीतिमा प्रधान है वहीं वसंत रंगों की खान है। जिधर नज़र डालिए रंगीन नज़ारे सम्मोहित करते नज़र आते हैं। कई वृक्षों की नई पत्तियों में भी इतनी विविधता व आकर्षण दिखलाई पड़ता है कि फूलों को भुला दे।

भारत की ऋतुएँ और उनका विविधतापूर्ण स्वरूप:

मौसम व जलवायु के अनुसार हमारा देश भारत विविधताओं से भरा देश है। कहीं पूरे साल बर्फ़ ही बर्फ़ पड़ती रहती है तो कहीं सारे साल रेत ही रेत उड़ती रहती है। कहीं ज़्यादा बारिश होती है तो कहीं नाम मात्र को ही। कुछ स्थान ऐसे भी हैं जहाँ गर्मियों में ख़ूब तेज़ गर्मी पड़ती है तो सर्दियों में कड़ाके की ठंड पड़ती है। कहीं हवा में नमी की मात्रा कम बनी रहती है तो कहीं इतनी ज़्यादा कि पसीना सूखता ही नहीं। कहीं पर दिन गर्म होते हैं तो रातें ठंडी। इसके अतिरिक्त देश में ऐसे भी अनेक स्थान हैं जहाँ पूरे वर्ष ही एक जैसा सुहावना मौसम बना रहता है। इस विविधता को देखते हुए पूरे देश की जलवायु कैसी है अथवा देश में कुल कितनी ऋतुएँ हैं ठीक से नहीं बतलाया जा सकता क्योंकि इसका केवल एक उत्तर नहीं हो सकता।

वैसे तो पूरी दुनिया में प्रमुख रूप से सर्दी, गर्मी व बरसात तीन ऋतुएँ ही हैं लेकिन इन सभी ऋतुओं के संधिकाल में भी अलग ऋतुएँ आ उपस्थित होती हैं। ध्रुवीय प्रदेश की ऋतुएँ भी भूमध्य रेखा के निकट पड़नेवाले स्थानों जैसी नहीं हो सकतीं। हाँ हमारे देश भारत में यदि हम समुद्रतटीय क्षेत्रों व हिमालय के पर्वतीय क्षेत्रों को छोड़ दें तो हमारे देश में छह प्रमुख ऋतुएँ मानी गई हैं जो क्रमशः इस प्रकार से हैं: वसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमंत व शिशिर (शीत) ऋतुएँ। वैसे पतझड़ अथवा ऑटम भी एक ऋतु ही है लेकिन पतझड़ की अवस्था हमारे यहाँ साल में प्रायः दो बार वसंत व शरद ऋतुओं

वसंत जो कठोर भी है और कोमल भी। ये वसंत ही है जिसमें कभी फूलों के चटख रंगों का सम्मोहन मन-मस्तिष्क पर अधिकार कर लेता है तो कभी पकी फ़सलों की परिपक्वता हमें भी अपनी ही तरह गंभीर बना डालती है। कभी शीत में ठिठुरते-से नन्हें पादप तो कभी लू और तेज़ धूप में सुलगते-से पेड़। कभी धूप से न हटने का आग्रह तो कभी धूप से बचने की बेचैनी। यही है वसंत का वास्तविक जादू जिससे कोई बचाव नहीं। कोई करना भी नहीं चाहता बचाव। सब इसमें निमग्न हो जाना चाहते हैं। कुल मिलाकर बड़ा ही सम्मोहक रूप है वसंत का। अब इसे ऋतुराज न कहें तो कैसे न कहें?

के दौरान ही आ उपस्थित होती है। ये ऋतु परिवर्तन का संकेत देने वाली ऋतु है।

पतझड़ कोई ऋतु विशेष नहीं अपितु जिन दिनों पर्णपाती वृक्षों के पत्ते झड़ते हैं उसे ही पतझड़ कहते हैं। दूर-दूर तक पत्रविहीन वृक्षों की पंक्तियाँ मन में उदासी भर देती हैं। पतझड़ व वसंत एक दूसरे की विपरीत या कह सकते हैं पूरक ऋतुएँ मानी गई हैं। एक में पत्ते झड़ते हैं तो दूसरी में उन पर नए पत्ते आते हैं। साहित्य में पतझड़ अथवा मौसमे-ख़िज़ाँ वियोग, बिछोह व पीड़ा का प्रतीक है तो वसंत अथवा मौसमे-बहार संयोग, मिलन व आनंद का। हिन्दी साहित्य में आदि काल से लेकर आज तक वसंत पर पर्याप्त साहित्य की रचना हुई है। वसंत ऋतु के साथ-साथ वर्षा भी एक ऐसी ऋतु है जिसे साहित्य में विशेष स्थान प्राप्त है। वसंत को जहाँ ऋतुराज कहकर सम्मानित किया जाता है वहीं वर्षा को ऋतुओं की रानी होने का गौरव मिला है।

ऋतुराज वसंत:

हमारे देश भारत में वसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमंत व शिशिर (शीत) छह प्रमुख ऋतुएँ मानी गई हैं। वसंत को जहाँ ऋतुराज कहकर सम्मानित किया जाता है वहीं वर्षा को ऋतुओं की रानी होने का गौरव मिला है। विचारणीय है कि वसंत को ऋतुओं का राजा क्यों कहा गया है?

वास्तव में वसंत को उसके प्राकृतिक सौंदर्य के कारण ये उपाधि मिली है। वसंत में चारों तरफ रंग-बिरंगे फूल खिले होते हैं। कड़कड़ाती सर्दी में जिन वृक्षों ने अपने पत्तों को तिलांजलि दे दी थी वो सब पुनः कोमल-कोमल नव पल्लवों के परिधान से सुसज्जित हो उठते हैं। वर्षा जहाँ हरीतिमा प्रधान है वहीं वसंत रंगों की खान है। जिधर नज़र डालिए रंगीन नज़ारे सम्मोहित करते नज़र आते हैं। कई वृक्षों की नई पत्तियों में भी इतनी विविधता व आकर्षण दिखलाई पड़ता है कि फूलों को भुला दे। फूल-पत्तियों के रंग व गंध के आकर्षण से खिंचे नाना प्रकार के कीट-पतंग इन पर मँडराने लगते हैं जो वसंत की सुंदरता में कई गुना वृद्धि कर देते हैं। मधुमक्खियाँ, भौंरे व तितलियाँ इनमें प्रमुख हैं। इन सबका योगदान भी वसंत ऋतु को ऋतुराज की पदवी दिलवाने में कम महत्त्वपूर्ण नहीं।

अब एक और प्रश्न उठता है और वो ये कि सर्दी में सर्दी और गर्मी में गर्मी होती है लेकिन वसंत में? कुछ लोगों का मानना है कि वसंत का मौसम बड़ा सुहावना, बड़ा ख़ुशगवार होता है। उनका कहना भी ठीक है। वैसे वसंत ऋतु का काल शीत व ग्रीष्म के मध्य का काल है। क्या शीत ऋतु के फ़ौरन बाद से ग्रीष्म ऋतु के प्रारंभ तक पूरे समय में यह ख़ुशगवार ही रहता है? क्या यह संभव भी है? वास्तव में वसंत का प्रारंभ कड़कड़ाती शीत ऋतु में ही हो जाता है। भारतीय महीनों के अनुसार वसंत पंचमी के दिन को वसंत ऋतु का प्रारंभ माना जाता है। वसंत पंचमी माघ मास के शुक्ल पक्ष की पांचवीं तिथि को पड़ती है। अंग्रेज़ी महीनों व तारीख़ के हिसाब से वसंत पंचमी कई बार जनवरी में ही आ जाती है अतः वसंत ऋतु का प्रारंभिक काल बहुत सर्द होता है। यही सर्दी धीरे-धीरे कम होनी शुरू होती है।

कई बार बीच-बीच में एक आध दिन के लिए मौसम बग़ावत भी कर देता है। सर्द मौसम के बीच कुछ दिन अपेक्षाकृत गर्म हो जाते हैं। इस दौरान हवा में नमी भी कुछ कम

रहती है और कई बार धूल भरी तेज़ हवाएँ या हल्की आँधी भी आ जाती है। उत्तर भारत में रबी की फसल पककर तैयार होने लगती है और उसी दौरान कई बार वर्षा की बौछारें भी देखने में आती हैं और मौसम बिगड़ने पर ओलावृष्टि की संभावना भी बढ़ जाती है। कहीं न कहीं गिरते भी अवश्य ही हैं जो किसानों को अंदर तक हिलाने के लिए काफी होते हैं। ये वसंत ही है जो किसानों को ख़ुशहाली का आनंद देने के साथ-साथ उनकी आशाओं पर वज्रपात भी करता है।

मल्टीग्रेन ब्रेड की तरह सभी ऋतुओं का समाहार है वसंत जिसका प्रारंभ तो कड़कड़ाती शीत से होता है और समापन तपती ग्रीष्म की तेज़ धूप में। वास्तव में दही-भल्लों जैसी ऋतु है वसंत ऋतु जो षड़रसों की तरह ही षड़ऋतुओं का आनंद एक साथ प्रदान करने में सक्षम है। यदि हम दही-भल्लों या चाट-पापड़ी में केवल एक ही मसाला या केवल नमक ही डालें तो वो स्वाद नहीं आएगा जो विभिन्न मसालों और चटनियों में आता है। जैसे दही-भल्लों या चाट-पापड़ी में भल्ले या पापड़ी पर दही, मीठी चटनी, खट्टी चटनी, पुदीने की चटनी, उबले आलू व मसालेदार कचालू की फाँकें, अनार के दाने, अदरक का लच्छा व दूसरी बहुत-सी चीज़ें डाली जाती हैं जिससे उनका स्वाद बढ़ जाता है उसी प्रकार से वसंत ऋतु में भी सभी ऋतुओं के स्वाद का मसाला मिल जाने से वसंत ऋतु भी चटपटी व आनंददायक हो जाती है।

जिस प्रकार से दही-भल्लों या चाट-पापड़ी का स्वाद लेते समय कभी मीठी चटनी की मिठास तो कभी खट्टी चटनी की खटास मुँह में घुल जाती है व कभी मिर्च-मसालों की तेज़ी से सी-सी की आवाज़ निकल पड़ती है उसी प्रकार से वसंत ऋतु में भी सभी ऋतुओं का मिलाजुला आनंद समाया रहता है। कभी चारों ओर निपट नंग-धडंग पेड़ों की परछाइयाँ तो कभी ख़ूब घने पल्लवों से

आच्छादित वनराइयाँ। कभी गुलाब के फूलों की मादक व मदहोश करने वाली गंध तो कभी सरसों के फूलों की तीखी तैलाक्त गंध नथुनों में घर करने चली आती है। हमारे यहाँ धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष ये चार पुरुषार्थ माने गए हैं। वसंत ऋतु का संबंध काम से भी है। संपूर्ण प्रकृति व इसके निवासी सही अर्थों में काममय हो उठते हैं। प्रकृति इसके लिए आधार उत्पन्न कर देती है। वसंत ऋतु में हमारे देश में प्राचीन काल से ही कामोत्सव मनाने की परंपरा भी रही है। वैलेंटाइन डे भी संयोगवश उसी का आधुनिक परिवर्तित रूप कहा जा सकता है।

प्रकृति में जो परिवर्तन दृष्टिगोचर होते हैं वे मनुष्य में कामभावों को उद्दीप्त करने के लिए पर्याप्त होते हैं। ये वो ऋतु है जिसमें कोई भी कामदेव के प्रहारों से बच नहीं पाता। पूरे फाल्गुन मास में विशेष रूप से होली व रंगोत्सव में इसका चरमोत्कर्ष दिखलाई पड़ता है जहाँ सारी वर्जनाएँ टूटती-सी दिखलाई पड़ती हैं। हर ऋतु का हमारे मनोभावों पर अलग-अलग प्रभाव पड़ता है। क्योंकि वसंत ऋतु में सभी ऋतुओं का समाहार है अतः इस ऋतु में मनुष्य भी अनेकानेक मनोभावों से दो चार होता है। कभी कामाधिक्य का प्रभाव तो कभी संयम व अनुशासन का दबाव। जहाँ सृष्टि के विकास के लिए काम अनिवार्य है वहीं समाज को सुचारु रूप से चलाने के लिए संयम व अनुशासन भी अनिवार्य हैं। वसंत ही वह ऋतु है जो मनुष्य के विकास के लिए अनिवार्य सभी अवसर उपलब्ध करवाने में सक्षम होती है।

मनुष्य की चरितार्थता इसी में है कि वो वसंत की तरह हर मौसम के प्रभाव का आनंद लेते हुए एक संतुलन बनाए रखे जो स्वयं वसंत की तरह आकर्षक भी हो और आनंददायक भी। वसंत जो कठोर भी है और कोमल भी। ये वसंत ही है जिसमें कभी फूलों के चटख रंगों का सम्मोहन मन-मस्तिष्क पर अधिकार कर लेता है तो कभी पकी फ़सलों की परिपक्वता हमें भी अपनी ही तरह गंभीर बना डालती है। कभी शीत में ठिठुरते-से नन्हें पादप तो कभी लू और तेज़ धूप में सुलगते-से पेड़। कभी धूप से न हटने का आग्रह तो कभी धूप से बचने की बेचैनी। यही है वसंत का वास्तविक जादू जिससे कोई बचाव नहीं। कोई करना भी नहीं चाहता बचाव। सब इसमें निमग्न हो जाना चाहते हैं। कुल मिलाकर बड़ा ही सम्मोहक रूप है वसंत का। अब इसे ऋतुराज न कहें तो कैसे न कहें?

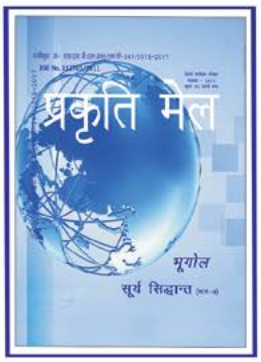

R N I No. UPHIN/2011/40224

प्रकृति मेल

हिन्दी मासिक पत्रिका

प्रकृति मेल वह आईना है जिसमें आप अपनी वास्तविक तस्वीर के साथ प्रकृति की हर क्रिया प्रतिक्रिया का वैज्ञानिक स्वरूप देखें।

अशोक 'मानव'

उत्तर भारत की तेजी से लोकप्रिय होती हिन्दी मासिक पत्रिका
(शीघ्र ही अपने विज्ञापन की जगह बुक करवाये) (8423330911)

☐ हां, मैं प्रकृति मेल पत्रिका का वर्षिक ग्राहक बनना पसंद करूंगा/ करूंगी

प्रकृति मेल के पक्ष में देय ₹ ☐☐☐ कैश ☐ चेक ☐ तारीख ☐☐☐☐☐☐

1 year membership fee -220/- only. (Must be drawn in favour of 'Prakriti mail' payable at lucknow)

संलग्न चेक/डिमांड ड्राफ्ट नं. ☐☐☐☐☐☐ आहरित बैंक (बैंक का नाम)__________

नाम ☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐

पता__________

__________ राज्य__________ पिन__________

फोन नंबर ☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐ ई-मेलः__________

कृपया फार्म भरकर निम्नलिखित पते पर भेजे:

प्रकृति मेल, सूर्या आश्रम, मानव नगर, (निकट आई.आई.एस.ई.) कल्याणपुर, लखनऊ, पिनकोड- 226022, उ0 प्र0।

नियम और शर्तें

पत्रिका का मूल्य और आफॅर केवल भारत में लागू। कृपया पत्रिका की पहली प्रति डाक या कोरियर के माध्यम से मंगवाने के लिए कुछ समय दें। किसी भी तरह के विवाद का निबटारा केवल लखनऊ की अदालत में होगा।

निःशुल्क ई-मैगज़ीन प्राप्त करने के लिए हमारे वेबसाइट - www.prakritimail.com पर सम्पर्क करें।

सूत्र वाक्य

अशोक मानव

- क्रोध विपरीत गुणों के प्रति , प्रतिक्रिया है जो अपनी शक्ति को शक्तिहीन कर देती है , यदि ऐसे समय में अपने आप को शांत कर लिया जाय तो जिसके कारण क्रोध आ रहा है उसे बदला जा सकता है
- मनुष्य असली से नकली बनाता है , वो नकली से असली कब कर देता है पता नहीं चलता।
- ईश्वर की प्राप्ती तप से नहीं बल्कि अपने कार्य करने अच्छे विचार भाव बनाए रखते हुए ध्यान या मन की नजर जो आत्मा की पुकार है उससे होता है।
- समय हमेशा आता है जाता नहीं, निर्माण की क्रिया का समय बनाने में हर जीव पदार्थ का योगदान होता है।
- शरीर में पदार्थ का निर्माण स्वभाव के अनुसार होता है। स्वभाव अपरिवर्तनशील होता है इसलिए शरीर के पदार्थ अपने विकास के पदार्थ को ही स्वीकार करते है।
- जीव पदार्थ प्रकाश पड़ने के कारण रासायनिक परिवर्तन से अपनी गुणात्मक ऊर्जा छोड़ते रहते है जो जीव निर्माण और विकास के लिए जलवायु बनाने का कार्य करते है।
- विश्व के मानव समुदाय को विश्व धर्म की परिभाषा पर निर्णय लेकर वैचारिक प्रदूषण को खत्म करने की लड़ाई लड़नी चाहिए। क्योंकि वैचारिक प्रदूषण ही मानव समाज का सबसे बड़ा दुश्मन है।
- अनुभूति हो वही "धर्म" है। समय उस परम् प्रकाश का नाम है जो अपने प्रकाश से जल का सहयोग लेकर जलवायु तैयार करके 'जीव' से 'पदार्थ' का निर्माण करके ब्रह्माण्ड की रचना करता है।
- जीवन समय रूपी प्रकाश से क्रमिक विकास करते हुए अपने विषय को पूरा करता है। यही समय है जो समय तो लगाता है परन्तु समय आने पर हर विषय को पूरा करता है।
- धर्म तो वह न्याय है जो उसके हक को उस तक स्वतः इच्छित चुम्बकीय प्रणाली द्वारा पहुंचाता है।
- धर्म किसी की परिभाषा से नही स्वयं अपनी परिभाषा से गतिमान है।
- समय कभी न रूकने वाली वह धारा है जिससे सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड सदैव गतिमान रहता है।

सूर्य गणित

अशोक मानव

सूर्य + सूर्य = चन्द्रमा

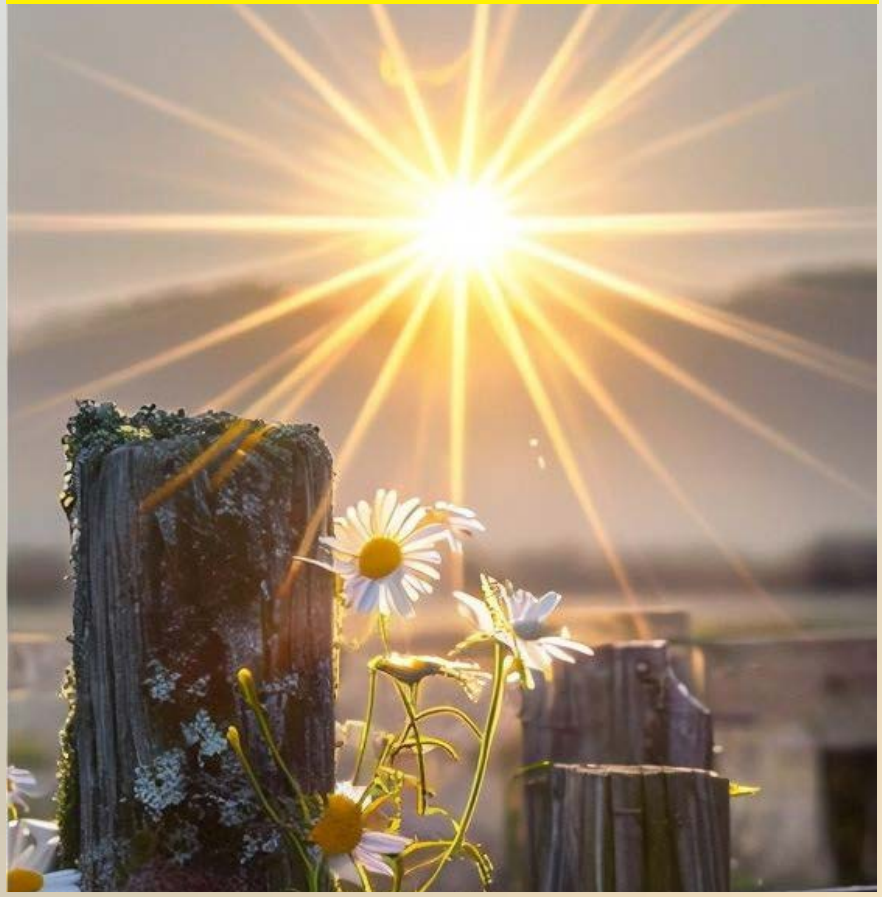

सूर्य की शून्य अवस्था से जब गंधीय मिलान होता है तब सूर्य सक्रिय होकर गंधीय मिलान को भारमुक्त करने हेतु गुणात्मक कण में परिवर्तन कर देता है जो जीवन धारण कर अपने गुण का ठोस निर्माण कर देता है जिसे सूर्य गणित कहते है।

सूर्य गणित प्रकृति की वह पूर्ण गणित है जो प्रकाश रूप में प्रकृति की आवश्यकतानुसार प्राकृतिक वातावरण बनाकर ज्योति रूप से गंध को जोड़कर आत्मिक बीज का निर्माण करके परम प्रकाश बनाकर उसके गुणों की मात्रा का निर्धारण करते हुए जीव विकास कर उसे अवगुण का खात्मा कर (जो प्रदूषण बढ़ने का कार्य करते हैं) जीव से उसका कर्तव्य कराते हुए उसे गुण का विकास करते हैं जिसकी आवश्यकता प्रकृति में होती है।

सृष्टि निर्माण सूर्य गणित का परिणाम है सूर्य प्रकाश के पड़ने से जल घटकर हवा बनकर उड़ता है और जल का गाढ़ापन बढ़ता है जिसमें गंध उष्मित होकर जलीय जीव का निर्माण करती है। जलीय जीव का निर्माण सूर्य प्रकाश का ज्योति रूप करता है जो उसकी गुणात्मक वृद्धि कर परिपक्व बनता है जब उसका कार्य पूरा हो जाता है तो ज्योति शरीर छोड़कर निकल जाती है। शरीर छूट जाता है जो सूर्य प्रकाश पड़ने के कारण पदार्थ में रासायनिक क्रिया होती है जिससे उसका हर तत्व अलग होकर अपने तत्व के साथ जुड़ जाता है। इस प्रकार सूर्य प्रकाश से पदार्थ का

हिस्सा अलग होकर अपने गुणात्मक पदार्थ से जोड़ बना लेता है। पदार्थ में पैदा होने वाली गंध रंग को बढ़ाती है जो जीव उत्पत्ति के लिए गुण और आत्मिक बीज रचना के निर्माण में सहायक होता है और प्राकृतिक न्याय प्रणाली स्थापित करने के साथ प्राकृतिक वातावरण बनाने की क्रिया करता है इसीसे रूप आकार का निर्धारण होता है। सूर्य प्रकाश से ही जीरो से जीरो और अंकन का रूप निर्माण की आवश्यकतानुसार तैयार होता है जो जीव पदार्थ और प्राकृतिक नि वातावरण को बनाए रखने हेतु वह निर्माण के अनुसार काम ज्यादा का निर्धारण होता है। इसी अवस्था से अन्य ग्रहों व पृथ्वी पर जीव निर्माण का निर्धारण होता है। इस क्रिया में पहले प्राकृतिक वातावरण बनाकर जीव उत्पत्ति पदार्थ को बढ़ाने हेतु पूरी होती है फिर उसके गुणात्मक गंध मिलन से स्वरूप और गुण का विकास होता है इसमें अंकन मात्रा सूर्य प्रकाश से आवश्यकतानुसार निर्धारित होती है। जिस जीव की अधिकता होती लगती है वह धीरे स्वतः कम होने लगता है और जिसकी आवश्यकता बढ़ती है उसकी उत्पत्ति बढ़ने लगती है यह क्रिया सूर्य प्रकाश से ही निरंतर क्रियान्वित होती रहती है। इसका फैलाव सृष्टि के अन्य ग्रहों की तरफ भी बढ़ता रहता है। पहले वहां के पदार्थ रासायनिक क्रिया से तापमान का अंकन कर गुणात्मक होते जाते हैं तब जीव उत्पन्न करने की अवस्था में आ जाते हैं तो वहां पर भी जीवन का विकास होने लगता है। एक जीव से दूसरे जीव का मिलान करते हुए जीवों की भिन्नता निरंतर बढ़ती रहती है। यह क्रिया सूर्य प्रकाश से आवश्यकतानुसार स्वतः निर्धारित होती रहती है। इसी जीव के गुण गंध की शक्ति के अनुसार इसके निर्माण और अंत का समय निर्धारित होता है जिसे प्रकृति या किसी विषय विशेष का समय कहते हैं। जिस प्रकार आवश्यकतानुसार जमीन जीव पदार्थ रंग, गंध, रूप व अनेक ऐसी अवस्थाओं का निर्माण सूर्य प्रकाश से होता रहता है जिसका नाम भी नहीं पता है। ठीक इसी प्रकार जीव में भी आवश्यकतानुसार तापमान व अनेकों जीवाणु की उत्पत्ति सूर्य प्रकाश से होती रहती है जो उसके निर्माण की आवश्यकता है।

जीव का निर्माण बीज से उसके अंत तक सूर्य प्रकाश से पूरा होता है। जो आवश्यकता और गंध निर्धारण से पूरा होता है। गंध का निर्माण उसके विचार और भाव से बनता है शरीर की आवश्यकता और गंध के गुण के अनुसार उसके शरीर में अनेक ऐसे जीवाणु की उत्पत्ति होती रहती है जो उसके विकास में सहायक होते हैं। कमजोर विचार वा आसुरी प्रवृत्ति से हानिकारक जीवाणु भी पैदा हो जाते हैं बीमारी पैदा करते हैं और कार्य को रोकते हैं यह भी क्रिया सूर्य प्रकाश से ही होती है पर इसका जिम्मेदार जीव का गुण गंध है, सूर्य प्रकाश तो किसी हानिकारकता के गंध पदार्थ का खात्मा तो जीव उत्पत्ति से ही करता है। इस क्रिया से पदार्थ भी नष्ट नहीं होता और उसकी हानिकाराता खत्म हो जाती है। इस प्रकार सूर्य गणित को जानकर हम अपने विचार भाव से गंध को आवश्यकतानुसार कम-ज्यादा करके सदैव स्वस्थ रखते हुए अपने कार्य को पूरा कर सकते हैं। विचार भाव की गुणात्मक गंध पर सूर्य प्रकाश पड़ने से उसके अनुसार जीव उत्पत्ति होने के साथ-साथ उस गुण की प्रकाशीय चादर (वस्त्र) जीव को वाह्य हानिकारक तत्व से बचाती है और जीव की आवश्यकतानुसार आंतरिक तापमान को तैयार कर उस गुण के विकास हेतु जीवाणु बनाती है।

जीव निर्माण में ब्रह्मांड की सभी अवस्था सूक्ष्म गंध रूप में मौजूद होती है। जिसको पहचान कर अपने विचार भाव से उस गुण का विकास कर उसकी शक्ति को बढ़ाकर अपने अंदर उस गुण को स्थापित कर सकते हैं। जैसे यह सिद्ध है सूर्य प्लस सूर्य इक्वल टू चंद्रमा। सूर्य का जो गुण है जब हम अपने अंदर के सूर्य में उसी गुण की ताकत बढाते जाते हैं तो चंद्रमा की उत्पत्ति होती है। जीव के अंदर का सूर्य मन है जब मन से हम अपने गुण वजूद के लिए संकल्पित होते हैं और वही कार्य करते हैं जिसको पूरा करना कर्म और कर्तव्य होता है जिसको पूरा करने के लिए सूर्य द्वारा उसकी उत्पत्ति होती है उसके लिए ही सकारात्मक सोच बनाकर सूर्य की निरंतरता की तरह है (जैसे सूर्योदय और सूर्यास्त समयानुसार और किसी से प्रभावित न होकर उसके गुण के अनुसार उसका निर्माण करते हुए आगे बढ़ना वह जिसका कार्य पूरा हो जाए उसे प्रकाश हटकर पदार्थ रूप में परिवर्तित कर देता है।) आगे बढ़ते रहने से अपने अंदर का मन रूपी सूर्य शक्तिशाली होता जाता है जब व्यक्ति अपने गुण कर्तव्य और कर्म के अनुसार सकारात्मक सोच विचार भाव को रखता है और जो उसके विकास में सहायक होता है उसे जोड़ता चलता है और जो उसे रोकने या रुकावट डालने का प्रयास करता है उसे छोड़ता चलता है और सूर्योदय से सूर्यास्त तक अर्थात जब भी जगाता है और सोने तक सूर्य दृढ़ता की तरह सकारात्मक सोच के साथ अपना कर्म करते हुए सो जाता है तो रात्रि में उसका चंद्रमा आवश्यकतानुसार प्रथमा से पूर्णिमा तक की अवस्था स्वतः धारण कर लेता है। इस प्रकार जब मानव सूर्य निष्ठा अपने मन में धारण कर लेता है तो एक सूर्य वाह्य जो सबका है और दूसरा सूर्य मन जो अपने अंदर है दोनों मिलकर अपने अंदर चंद्रमा का निर्माण कर लेता है। इसका निर्माण होने के बाद व्यक्ति का मन शांत रहने लगता है। शांत मन से ही व्यक्ति सही और गलत की पहचान करने वाला ज्ञानी प्राणी बनकर अपना कर्म कर पाता है और उसका जीवन चंद्रमा की तरह हलचल मुक्त हो जाता है। ऐसा ही व्यक्ति जीवन का वास्तविक आनंद ले पता है। उसकी यही अवस्था सिद्ध कर देता है सूर्य प्लस सूर्य इस इक्वल टू चंद्रमा

प्रश्न हमारे
उत्तर श्री अशोक मानव जी के

प्रश्न : आत्मा और ब्रह्माण्ड का विस्तार कैसे हुआ।

उत्तर : सारी गन्धें एक दूसरे से मिलकर क्रिया करती रहती है। उसी क्रिया में एक दूसरी गन्ध का एक दूसरे से मिलान होता चला जाता है जिसके कारण एक कण का निर्माण हो जाता है। एक आत्मा का निर्माण हो जाता है। उस आत्मा से वही गन्ध टकराते-टकराते आपसे मिली दूसरे से मिली तीसरे से मिली पूरे ब्रह्माण्ड में विचरण करती है। जब ब्रह्माण्ड की सभी गन्धों से उसका मिलान हो जायेगा तब उसके अनुसार फिर एक कण अपना रूप लेगा जो आत्मा बन जायेगी। तब उसके साथ प्रकाश रूक जायेगा वहां जो उसको मार्ग देता है प्रकाश उसका विकास करता है। तब उस गंध में जो कमी होती है। मतलब प्रड्डति की गंध हानिकारक गन्ध हो जाती है जो प्रदूषण फैला सकती है तब वह उसी गुण के जहां से वह पैदा हुई होती है, वह गन्ध जहां से वह पैदा हुयी होती है, वह गन्ध जहां से बनी होती है। दूसरे रूप मे कई गन्धों का मिलान करके उससे टकराती है उससे जब टकराती है। तब उससे जब ताप-दाब बनाता है जिससे उस गन्ध का खात्मा हो जाता है। जो गलत बन चुकी थी और फिर वह अच्छी मृदा का अच्छी गन्ध का निर्माण करके मृदा का विस्तार करती है। जिससे ब्रह्माण्ड का विस्तार होता चला जाता है। ब्रह्माण्ड तो एक ऐसा गुब्बारा हैचाहे जितना फुलाते चले जाओ जितनी ज्यादा गंध बनती जायेगी मृदा का विस्तार होता जायेगा वह उतना फैलता जाएगा।

यदि किसी पाठक के मन में कोई भी सामाजिक या प्राकृतिक प्रश्न उठ रहा है वह उस प्रश्न का निदान चाहते हैं तो पाठक हमें अपना प्रश्न निम्न पते पर भेज सकते हैं। निदान प्रश्न के अगले अंक में दिया जाएगा।

आप अपना प्रश्न डाक द्वारा या ईमेल पर भेज सकते हैं

डाक पता : प्रकृति मेल, सर्या आश्रम, मानव नगर (निकट आई.आई. एस.ई),
कल्याणपुर, लखनऊ-226022, उ0 प्र0
ईमेल-info@parkritimail.com, editor.prakritimail@gmail.com
9807636072, 7376495194

सब टच में बिजी हैं

सुनील कुमार माथुर
जोधपुर, राजस्थान

एक ही छत के नीचे एक ही कमरे में परिवार के सभी सदस्य पास पास में बैठे लेकिन कोई किसी से बात नहीं कर रहा हैं। सभी की बस मोबाइल पर उंगलियां चल रहीं हैं अगर यूं कहा जाए कि आजकल उंगलियां ही रिश्ते निभा रही हैं तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। आज रिश्ते जुबां से निभाने का वक्त किसके पास हैं। सब टच में बिजी हैं, मगर एक-दूसरे के टच में कोई नहीं है।

कहने को तो हम सभ्य समाज में रह रहे हैं और तकनीकी युग में जीवन व्यतीत कर रहे हैं लेकिन हकीकत में देखें तो हम अपने आप में ही बिना काम काज के ही बिजी हो गये। भाई भाई से बात नहीं कर रहा हैं। औलाद मां-बाप से बात नहीं कर रही हैं हर कोई मोबाइल से चिपका पडा हैं। एक ही छत के नीचे एक ही कमरे में कोई किसी से बात नहीं कर रहा हैं। सभी की बस मोबाइल पर उंगलियां चल रहीं हैं आजकल उंगलियां ही रिश्ते निभा रही हैं तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। आज रिश्ते जुबां से निभाने का वक्त किसके पास हैं। सब टच में बिजी हैं, मगर एक-दूसरे के टच में कोई नहीं है। यह कैसा सभ्य समाज और यह कैसा तकनीकी युग।

खुश रहने के लिए

खुश रहने के लिए पांच सितारा होटलों में खाना खाना , नाच गाना देखना , शराब पीना , अच्छे अच्छे कपड़े पहनना , गाड़ी बंगला , धन दौलत का होना ही पर्याप्त नहीं है अपितु खुश रहने के लिए माता-पिता का साथ होना , उनके साथ भोजन करना , दुःख सुख को बांटना , अच्छे दोस्तों का होना व ज्ञानवर्धक , प्रेरणादायक व चरित्र निर्माण करने वाली तथा देश भक्ति से ओत-प्रोत पत्र पत्रिकाओं का होना जीवन में नितान्त आवश्यक है।

हमेंशा खुश रहें

जीवन तो एक पानी का बुलबुला है जो न जानें कब फूट जायें। इसलिए जब तक यह जीवन है तब तक हमेंशा खुश रहें। सभी के साथ प्रेम पूर्वक मधुर व्यवहार करें। अच्छा संगीत सुनें और उसे मन ही मन में गुनगुनाते हुए अपना कार्य करें। आपका सद् व्यवहार ही तो आपकी सबसे बड़ी पूंजी है जिसे संभाल कर रखना हमारा परम दायित्व है। हम किसी कारणवश किसी की कोई भी मदद नहीं कर सकते तो कम से कम प्रेम के दो मधुर शब्द बोल कर उसके सुख दुःख तो पूछ ही सकते हैं। किसी से जब हम प्रेम और स्नेह से बातचीत करते हैं तो उसका आधा दुःख वैसे ही समाप्त हो जाता हैं। इसलिए जीवन में हंसते मुस्कुराते रहें और जीवन का भरपूर आनंद ले। वैसे भी सूर्योदय और सूर्यास्त हमें जीवन में यही सिखाते हैं कि जीवन में कुछ भी स्थाई नहीं है इसलिए हमेंशा खुश रहें और जीवन यात्रा का भरपूर आनंद ले।

एक खूबसूरती और आस

प्रगतिशील समाज में प्रायः प्रतिस्पर्धा चलती ही रहती हैं। अतः इस प्रतिस्पर्धा में आगे निकलने के चक्कर में कभी भी किसी के साथ छल कपट , धोखा , विश्वासघात न करें। न ही किसी के साथ कोई ऐसा वायदा करों कि बाद में आप उसे निभा न पाओं। तमन्ना रखो आसमान छूने की लेकिन दूसरों को गिराने कि इरादा कभी न रखों।

किसी सज्जन ने बहुत अच्छी बात कहीं हैं कि एक ताजगी , एक अहसास। एक खूबसूरती एक आस। एक आस्था और एक विश्वास यही एक अच्छे जीवन की शुरुआत हैं। अतः जीवन में सबके साथ प्रेम पूर्वक मधुर संबंध बनाकर आदर्श जीवन व्यतीत करना होगा तभी इस जीवन को पाना सार्थक सिद्ध है।

बेफ्रिक रहना सीखिए

इस नश्वर संसार में हर कोई किसी न किसी की चिंता में खोया रहना हैं। हर वक्त चिंता करते रहना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। जीवन में खुश रहने के लिए बेफ्रिक रहना सीखिए। चूंकि कभी भी जीवन में ऐसा समय नहीं आयेगा जब आपकी हर इच्छाएं पूरी हो जाये । जब हम अपने आपकों समय के अनुसार ढालते जाते है या दूसरे शब्दों में कहे कि समय-समय पर अपने आपकों अपडेट करते जाये तो दुःख की घड़ी कभी भी पास में नहीं आयेगी।

जीवन में जो बेफ्रिक रहना है , वहीं सर्वाधिक खुश रहना हैं। चूंकि वह जानता है कि जीवन में उतार चढाव आते ही रहते हैं। इसलिए परिस्थिति को समझते हुए हर समस्या का हल निकालना चाहिए। क्योंकि समय के साथ जो चलता है वहीं जीवन में आगे बढता हैं। अतः हर समय कुछ न कुछ नया सीखते रहना चाहिए। आपका सीखा गया काम जरूरत पडने पर सार्थक सिद्ध होगा। चूंकि न जाने जीवन के अनुभवों की कब , कहां जरूरत पड़ जाये।

हमेंशा दिल में रहेगी

व्यक्ति को कभी भी खाली व निठल्ले की तरह नहीं बैठे रहना चाहिए अपितु हर पल कुछ नया करते रहना चाहिए। चूंकि जीवन का खूबसूरत समय कभी वापस नहीं आता है , लेकिन प्यारे लोगों के प्यारे रिश्ते और खोई हुई यादें हमेंशा दिल मे.रहती हैं इसलिए रिश्तों को सम्भाल कर रखिए। वे कांच की तरह होते हैं और टूटने के बाद वे ऐसे बिखरते हैं कि फिर से उन्हें जोडा नहीं जा सकता , चूंकि वे चूर - चूर हो जाते हैं। इसलिए रिश्तों को सम्भाल कर रखिए और उनकी गरिमा को भी बनाए रखियेगा।

बिना मांगे सलाह

कभी भी किसी को बिना मांगे सलाह मत दीजिए अन्यथा आपकी सलाह का कोई मतलब नही रहेगा , चूंकि हमारे देश में मुफ्त की सलाह और मुफ्त में दी गई वस्तुओं की लोग कद्र नहीं करते हैं , क्योंकि उनकी नजर में बिना मांगी सलाह , साथ और समय देने पर अक्सर आम आदमी इनका मूल्य सस्ता ही लगा लेते हैं। जब वे किसी अधिवक्ता (एडवोकेट) से सलाह लेते हैं तब उन्हें फीस के रूप में मोटी रकम खर्च करनी पडती है। अतः लोग उनकी राय को मानते हैं और आप द्वारा मुफ्त में बिना मांगे दी गई उत्तम राय की भी लोग अनदेखी कर जाते है। इसलिए हर जगह बिना मांगे सलाह देना बंद कीजिए और अपनी साख को बट्टा लग ने से रोकें।

जीवन की महक

जिस तरह से पार्क में उगे पुष्प अपनी महक दूर - दूर तक फैलाकर वातावरण को तरोताजा रखते हैं , ठीक उसी प्रकार इंसान को भी अपने श्रेष्ठ कार्यों की महक जन - जन तक फैलाने का प्रयास करते रहना चाहिए। व्यक्ति को समाज सेवा , परोपकार , प्रेम , स्नेह , मिलनसारिता , धैर्य , वात्सल्य , त्याग , सहनशीलता , अहिंसा , नम्रता और विनम्रता से कार्य कर मानवीय मूल्यों को बनाए रखना चाहिए एवं फूलों की तरह अपने जीवन की महक को बनाये रखना चाहिए। तभी श्रेष्ठ जीवन व्यतीत करने में आनंद आता है अन्यथा यह जीवन बोझ बन जायेगा

मन से जीने की आजादी

मन से जीने की आजादी का अपना एक अलग ही अंदाज होता हैं। मन से जीने की आजादी का मतलब मनमानी करने से नहीं है अपितु अपने मन के अनुरूप स्वच्छंदता पूर्वक जीवन व्यतीत करना हैं जब हम भीतर से प्रसन्न होंगे तभी तो बाहर से प्रसन्न होकर जीवन व्यतीत कर पायेंगे। चेहरे की मुस्कान ही हमें आनंदित कर देती हैं चूंकि यह कुदरत का एक करिश्मा हैं।

जो साहित्यकार मन की आजादी से जीवन व्यतीत करता है वह अपनी कलम से न तो अश्लील साहित्य का सृजन करता है

और न ही अपनी कलम को बेचता हैं। उसके मन में जो सकारात्मक भाव हैं उसे जन - जन तक पहुंचा कर प्यार का पैगाम फैलाता हैं और मानवीय मूल्यों की रक्षा करने में भी अपनी अहम भूमिका अदा करता हैं आपकी सकारात्मक सोच , प्यार व स्नेह की डोर से ही हमारे आपसी रिश्ते मजबूत होते हैं और वे समय के साथ-साथ इतने प्रगाढ़ होते जाते हैं कि फिर इस प्यार व स्नेह की डोर में कभी भी शंका की गांठ नहीं बंधती हैं और न ही कटुता की दरार पैदा होती है।

जहां प्रेम और स्नेह हैं वही तो जीवन स्वर्ग मय है , वरना नर्क मय जीवन किस काम का जीवन में घमंड व अंहकार की आग ही तो व्यक्ति को बर्बाद कर रही है। जहां घमंड व अंहकार की आग है वहां जीवन कभी भी आनंददायक नहीं हो सकता मनुष्य तो क्या पशु पक्षी व जीव - जन्तु भी मन की आजादी चाहते हैं। वे मन की आजादी के कारण ही तो दिन भर अपनी महक सर्वत्र फैलाये रहते हैं। मन में ममता का भाव का होना नितांत आवश्यक है।

मां की ममता की वजह से बच्चे हर वक्त प्रफुल्लित रहते हैं। ठीक उसी प्रकार मन की आजादी से न केवल मन और मस्तिष्क में श्रेष्ठ विचारों का आगमन होता है अपितु घर - परिवार , समाज और राष्ट्र का हर नागरिक प्रसन्नचित रहता है और सर्वत्र आनंद ही आनंद छाया रहता है व जीवन की खुशियों मे.चार चांद लग जाते हैं। जहां प्यार व स्नेह हैं वहीं तो मन की आजादी है जो व्यक्ति को निडर व निर्भय बनाती हैं।

जो झुकता है वो ही सफलता पाता है

कहते है कि यह जिंदगी का गणित है कि जो झुकता है वही सफलता को हासिल कर सकता हैं। जब हम पानी भरने के लिए किसी कुएं में बाल्टी डालते हैं तो वह झुक कर नीचे जाती है और फिर पानी से भर कर ही कुएं से बाहर आती है। कहने का तात्पर्य यह है कि जीवन में कभी भी घमंड व अंहकार नहीं करना चाहिए जो नम्रता और विनम्रता से रहता है वहीं सुखी जीवन व्यतीत करता है। पेड भी जब झुकते है तो लोग आसानी से उस पर लगे पुष्प और फल तोड लेते हैं और जब वह नहीं झुकता है तो लोग पत्थर मार कर फल व पुष्प तोडते है। यही हाल अंहकारी व्यक्ति का होता हैं। जो अंहकार से मुक्त होकर जीवन व्यतीत करता है उससे सभी प्यार करते है जबकि अंहकारी व्यक्ति से सभी दूर रहते हैं कोई भी हारता जीतता नहीं है

घर गृहस्थी के झगड़ो में कोई भी पक्ष न तो हारता है और न ही जीतता है अपितु घर की सुख , शांति और खुशियां हमेंशा के लिए खो देना हैं। इसमें कोई बहादुरी की बात नहीं है अपितु एक तरह की मूर्खता ही हैं। जब हम परिवार में व रिश्तेदारी में भी अपनापन बनाये नहीं रख सकते तो फिर हमारा इस संसार में जन्म लेना ही बेकार हैं।

अपनों के साथ जो आनन्द आता हैं वैसा आनन्द अन्यत्र मिलना मुश्किल है। चूंकि हम अपनों को अपने मन की हर बात आसानी से कह सकते हैं और अपना मन हल्का कर लेते हैं। अगर हम हिल मिल कर न रहे तो वह जीवन भी क्या जीवन हैं। हां विचारों में मतभेद हो सकता है लेकिन मनभेद नहीं होना चाहिए।

विश्वास कभी भी न तोडे

अगर कोई हम पर विश्वास करता हैं तो हमारा भी दायित्व बनता है कि हम उसका विश्वास न तोड़ें। जिस व्यक्ति ने हम पर भरोसा करके हम को कोई जिम्मेदारी सौंपी है तो फिर वह जिम्मेदारी व विश्वास हमारे लिए अनमोल रत्न से कम नहीं है। विश्वास अपने आप में अनमोल रत्न है जिसने इसे खो दिया समझों उसने अपने जीवन में सब कुछ खो दिया। तभी तो कहा जाता है कि सच बोल कर भले ही किसी का दिल तोड़ देना , लेकिन झूठ बोल कर किसी का विश्वास कभी मत तोड़ना।

खुद की पहचान

इस नश्वर संसार में हम सभी को खुश नहीं कर सकते और न ही सभी को अपनापन दे सकते हैं। आप भी ही सभी को खुश करने का प्रयास कर लीजिए लेकिन फिर भी कोई न कोई नाराज अवश्य ही रहेगा। कहने का तात्पर्य यह है कि जब लोग आप से खफा हो जाये तो समझ लेना कि आप सही राह पर हैं। लोगों का खफा होना कोई नई बात नहीं है। यह तो जीवन में चलता ही रहता हैं। जीवन में एक बात का ध्यान रखें कि आत्म सम्मान के साथ जीवन व्यतीत करें। आत्म सम्मान के साथ जीना खुद की पहचान है।

मोह और घृणा

आनन्द मय जीवन जीना भी कोई आसान काम नहीं है। जीवन में अनेक उतार चढाव आते ही रहते हैं जो उन्हें सफलता पूर्वक पार कर लेता हैं , वही जीवन का सही मायने में आनन्द उठा पाता हैं अन्यथा जिंदगी एक बोझ सी लगने लगती हैं। अगर हमारा किसी से मोह अधिक हो जाये तो बुराई नहीं दिखती और यदि घृणा ज्यादा हो जाये तो अच्छाईयां नहीं दिखती। जीवन का एक ही गणित है कि हर परिस्थिति में समान रूप से रहना चाहिए और सकारात्मक सोच के साथ जीवन में आगे बढते रहना चाहिए। सदा स्वस्थ रहे , मस्त रहें और मुस्कुराते रहे। श्रेष्ठ कर्म

जीवन में हमेंशा श्रेष्ठ कर्म कीजिए और फल की इच्छा मत कीजिए । जीवन में हार - जीत , हानि - लाभ , नफा - नुकसान , सफलता - विफलता चलती ही रहती है , लेकिन इससे हमें हताश , निराश नहीं होना चाहिए। भागदौड़ की इस दुनियां में हर कोई यह जानता है कि दौड़ में तो एक व्यक्ति ही प्रथम आयेगा फिर भी सभी लोग दौड़ते हैं और अपना भाग्य आजमाते हैं । क्या हार के डर से हम भागना ही छोड दें। तब फिर जीत को कैसे हासिल कर पायेंगे।

जीवन में किसी भी कीमत पर भरोसे को टूटने मत दीजिए । चूंकि भरोसा करने वाले

ने हम पर भरोसा अपना मान कर किया हैं। इसलिए भरोसा तोड़ कर किसी का दिल न दुखाएं। भरोसा हर किसी पर नहीं किया जा सकता। चूंकि जब भरोसा टूटता हैं तब वह कांच की तरह टूट कर बिखरता हैं और फिर से वैसे का वैसा नहीं जुडता है ठीक उसी प्रकार जब भरोसा टूटता हैं तब दिल को गहरी चोट लगती हैं और उस टूटे हुए भरोसे को कभी भी फिर से वैसे का ही वैसा जोड़ा नहीं जा सकता। इसलिए कभी कभी दिल से नहीं दिमाग से भी काम लेना पडता हैं।

प्रेरक विचार

हमें अपने दैनिक जीवन की शुरुआत हर रोज प्रेरक विचारों के साथ आरम्भ करनी चाहिए ताकि जीवन में हर रोज नयी ऊर्जा और जोश का संचार हो सकें। इसी के साथ हमारी सोच भी सकारात्मक होनी चाहिए। चूंकि प्रेम ही ईश्वर है और प्रेम ही पूजा हैं जो प्रेम का दुश्मन है वह दुनियां का दुश्मन है। इसलिए हमें प्रेम और स्नेह के साथ रहना चाहिए और जहां प्रेम है , वहीं अपनापन हैं। जो व्यक्ति केवल अपने गुणों का ही बखान दिन - रात करता है वास्तव में वह सबसे बड़ा मूर्ख हैं।

हमारे महापुरुषों ने समय - समय पर प्रेरक विचार व्यक्त किए हैं। अगर हम उनका अपने जीवन में अनुसरण करें और उनको जीवन में आत्मसात करें तो हमारा जीवन आदर्श संस्कारों से ओत-प्रोत हो जायेगा। वहीं दूसरी ओर हमारी अज्ञानता का नाश हो जायेगा व हम अज्ञानी से ज्ञानी बन जायेगें।

व्यक्ति को अपने जीवन में कभी भी अपने गुणों का बखान स्वयं नहीं करना चाहिए।अगर आपका कार्य श्रेष्ठ है तो हर कोई आपके कार्य की मुक्तकंठ से सराहना करेगा। न केवल आपके मुख पर अपितु आपकी अनुपस्थिति में भी हर कोई आपके श्रेष्ठ कार्य की सराहना ही करेगा। चूंकि कार्य ही पूजा है इस ध्येय के साथ हमें अपना कार्य पूरी ईमानदारी व निष्ठा के साथ करना चाहिए। हम भले ही महापुरुष न बन सकें तो भी कोई बात नहीं है लेकिन उनके जैसे कार्य करके लोगों का भला तो कर ही सकते हैं। अतः जीवन में प्रेरक विचारों का सम्मान करते हुए उन्हें आत्मसात कीजिए और उन विचारों पर चल कर जीवन को सर्वश्रेष्ठ बनायें। आपका सर्वश्रेष्ठ जीवन ही आपकी सर्वश्रेष्ठ पूंजी हैं जिसे संभाल कर रखना आपका काम हैं।

सफलता का राज

परिवार हो या संगठन हो या समाज सभी की सफलता का एक ही राज हैं कि एक दूसरे के विचारों को धैर्य से सुनना , समझना और उन विचारों का सम्मान व स्वागत करना। जहां अपनी-अपनी डफली अपना अपना राग हो वह परिवार , संगठन व समाज कभी भी प्रगति नहीं कर सकता। सफलना पाने के लिए एकजुट होकर कार्य करना शुभ होता है अतः विचारों को मान सम्मान तभी मिलता हैं जब वे तर्क संगत हो। केवल अनाप-शनाप बोल देना ही पर्याप्त नहीं है। इसलिए जब भी बातचीत हो तब जरूरत के मुताबिक ही नपे तुले बोल ही बोलें। अनावश्यक बोलकर अपना व दूसरों का न तो समय बर्बाद करें और न ही हंसी के पात्र बनें।

प्रेम का अर्थ

समाज की प्रगति , उन्नति , विकास व उत्थान तभी हो पाता हैं जब समाज के लोगों में आपसी प्रेम और स्नेह हो। इसके अभाव में हम प्रगतिशील नहीं बन सकते। जहां प्रेम हैं , वहीं तो अपनापन है , वरना इस जीवन में दुःख ही दुःख हैं। प्रेम का मतलब शरीर या रूप का आकर्षण नहीं होता है अपितु सम्मान , आदर सत्कार , विश्वास और भरोसा भी होता हैं। इसलिए कभी भी किसी का न तो भरोसा तोड़े और न ही किसी से कठोर वचन बोले। आपका व्यवहार स्नेह भरा होना चाहिए ताकि मेल मुलाकात से ही हृदय गद् गद् हो जाये और एक ही मुलाकात हो लेकिन ऐसी हो कि वर्षो तक उसकी याद ताजा बनी रहे एवं हर पल ऐसा लगे मानों कल की ही बात हो।

बेहतर दवा

मन का बोझ हल्का करने के लिए दोस्त से बेहतर कोई दवा नहीं है। जो बात हम अपने परिजनों को आसानी से नहीं बता सकते हैं वहीं बात हम अपने मित्र को बड़ी आसानी से निसंकोच होकर बता देते हैं अतः मित्र का भी दायित्व बनता है कि वह उस बात का अनावश्यक प्रचार न करे और मित्र किसी संकट में है तो उसे उस संकट से निकालने का प्रयास करें और किसी प्रकार की मदद की जरूरत है तो उसकी मदद कर उसके मन का बोझ समाप्त करें। सच्चा मित्र वहीं होता है जो संकट की घड़ी में भी पहली पंक्ति में खड़े रहकर दुःख सुख में साथ निभायें।

आनन्द लीजिए

परमात्मा ने हमें यह मानव जीवन उपहार में दिया हैं तो फिर इसका जमकर आनंद लीजिए। चूंकि यह जीवन पानी के बुलबुले के समान है जो न जानें कब फट जाए। अतः जीवन का भरपूर आनंद ले जो हमारे पास नहीं है उसकी चिंता कर कर के आज के आनंद को भी खराब मत कीजिए। अरे पुष्प को देखिए रोज खिलता है , मुरझाता हैं और अंत में बिखर जाता हैं लेकिन दूसरे ही दिन वह फिर नये उत्साह व उमंग के साथ खिलकर अपनी खुशबू से सभी को आनंदित करता हैं ।

किसी ने बहुत ही सुन्दर बात कही है कि चार दिन की जिन्दगी हैं। हंसी खुशी से काट लें। मत किसी का दिल दुखा अपितु दर्द सबके बांट लें। कुछ भी नहीं है साथ में जाना बस एक नेकी के सिवाय। कर भला तो हो भला , बस गांठ में यह बात तू बांध लें। जीवन में बस क्षमाशील बनकर हंसी-खुशी की जिंदगी जी लें। चूंकि क्षमा करने जो जीवन में जो शांति मिलती है वह अन्यत्र मिलना मुश्किल है।

सर्दी-जुकाम,कफ एवं खाँसी से बचाव के घरेलू उपाय

गोवर्धन दास बिन्नाणी 'राजा बाबू'
बीकानेर

यह मानव शरीर परमपिता परमेश्वर की अनमोल संरचना है। इस मानव शरीर का मूल्य आप आँक ही नहीं सकते। जैसा हम सभी जानते हैं कि जब इन्सान माँ के पेट में होता है तभी से हृदय धड़कना शुरू कर देता है और इंसान की मृत्यु होने पर ही इसकी धड़कन बन्द होती है।

हम थकावट होने पर आराम करते हैं। रात को सोते हैं लेकिन हमारा हृदय लगातार धड़कता रहता है। हृदय ने धड़कना बन्द किया तो जिन्दगी का खेल खत्म।

सर्दियों का मौसम चल रहा है और इसका असर हमारी दिनचर्या पर पड़ना स्वाभाविक है।सर्दियों में तो भूख बढ़ जाती है।अतः बदले हुये मौसम में खान-पान में भी सतर्कता अति आवश्यक है।

कैसा भी मौसम हो बाजार में तैयार किये हुये खाने वाले पदार्थ जिसे हम फास्ट फूड कहते हैं, से बचना चाहिये। ध्यान रखें जरा भी चूक से हमें सर्दी-जुकाम से ग्रसित होने में देर नहीं लगेगी। इसके अलावा खाँसी हो जाय तो काम-काज में मन लगता ही नहीं। अतः इस बदलते मौसम में असावधानी के चलते हम कफ से भी परेशान हो जाते हैं।

आयुर्वेद में सर्दी-जुकाम,कफ एवं खाँसी वगैरह से आसानी से आराम पाया जा सकता है। आयुर्वेद में थोड़ा समय अवश्य ज्यादा लगता है लेकिन ईलाज एकदम कारगर होता है। कुछ निम्न घरेलू उपाय को आप अपना कर लाभ उठा सकते हैं लेकिन ध्यान रखें घरेलू उपाय को भी प्रशिक्षित वैद्य के ध्यान में ला देंगे तो आपको सटीक उपचार मिल जायेगा।

- सुबह तथा रात्रि को सोते वक्त हल्दी-नमकवाले ताजे भुने हुए एक मुट्ठी चने खायें, किंतु खाने के बाद कोई भी पेय पदार्थ, यहाँ तक कि पानी भी न पियें। भोजन में घी, दूध, शक्कर, गुड़ एवं खटाई तथा फलों का सेवन बन्द कर दें। सर्दी-खाँसी वाले स्थायी मरीजों के लिए यह सस्ता प्रयोग है।
- भोजन के पश्चात हल्दी-नमकवाली भुनी हुई अजवायन को मुखवास के रुप में नित्य सेवन करने से सर्दी-खाँसी में न केवल आराम मिलता है बल्कि लम्बे समय तक प्रयोग से खाँसी मिट भी सकती है।
- अजवाइन का धुआँ लेना चाहिए। मिठाई, खटाई एवं चिकनाईयुक्त चीजों का सेवन नहीं करना चाहिए।
- सर्दी-जुकाम अधिक होने पर नाक बन्द हो जाती है, सिर भी भारी हो जाता है और बहुत बेचैनी होती है। ऐसे समय में एक तपेली में पानी को खूब गरम करके उसमें थोड़ा दर्दशामक मलहम, नीलगिरि का तेल अथवा कपूर डालकर सिर व तपेली ढँक जाय ऐसा कोई मोटा कपड़ा या तौलिया ओढ़कर गरम पानी की भाप लें। ऐसा करने से कुछ ही मिनटों में लाभ होगा एवं सर्दी से राहत मिलेगी।
- अजवाइन की पोटली से छाती की सेंक करने से भी काफी राहत मिलती है। इसलिये सेंक करते रहना चाहिये।
- सितोपलादि चूर्ण बढ़े हुए पित्त को शान्त करते हुये कफ को छाँटता है अर्थात गलाने में सहायक होता है।अन्न पर रुचि उत्पन्न करता है और जठराग्नि को तेज भी करता है। साथ ही पाचक रस को उत्तेजित कर भोजन पचाने में कारगर भूमिका निभाता है। इसलिये इस चूर्ण को भी लम्बे समय तक लिया जा सकता है।

यह अवश्य जान लें कि स्वस्थ रहना अपने हाथ में है। अतः यहां वर्णित सावधानियों को अपना लेते हैं तो आपका हर मौसम आराम से कट जायेगा।

क्यों दक्षिण विज्ञान की ओर अधिक झुकता है ?

विजय गर्ग

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार स्ट्रीट कौर चंद एमएचआर, मलोट, पंजाब

दक्षिण भारत में विज्ञान के लिए जुनून का एक लंबा इतिहास है

प्राचीन योगदानः स्कूल और कॉलेजों में विज्ञान और अन्य एसटीईएम शाखाओं (विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित) का प्रारंभिक स्तर से दक्षिण भारतीय शिक्षा प्रणालियों में महत्व है। यह लेख बताता है कि दक्षिण भारत विज्ञान के प्रति अधिक क्यों झुकता है। भारत में 42 लाख छात्रों ने 2022 में विज्ञान चुना, ज्यादातर दक्षिण भारत से आंध्र प्रदेश 75.63% विज्ञान स्ट्रीम छात्रों के साथ नेतृत्व करता है दक्षिण भारत के पास देश की एमबीबीएस सीटें का 41% हिस्सा है प्रत्येक हाई स्कूल के छात्र को एक मोड़ का सामना करना पड़ता है, विज्ञान, वाणिज्य या मानविकी। अधिकांश के लिए, यह मोड़ है जो उनके भविष्य को तय करता है। 2022 में, भारत में 42 लाख छात्रों ने विज्ञान धारा को चुना। दिलचस्प बात यह है कि उनमें से अधिकांश पांच दक्षिणी राज्यों - तमिलनाडु, केरल, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना और कर्नाटक से आए थे। यह कोई संयोग नहीं है; यह संस्कृति, बुनियादी ढांचे और युवा दिमागों के पोषण के अवसरों के सामंजस्यपूर्ण मिश्रण का परिणाम है। एक क्षेत्रीय वरीयता 2023 में केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय के एक अध्ययन के अनुसार, पूरे भारत में स्ट्रीम चयन में कुछ आश्चर्यजनक अंतर्दृष्टि हैं। आंध्र प्रदेश ने विज्ञान का चयन करने वाले कक्षा 11 के छात्रों के 75.63% के साथ पैक का नेतृत्व किया, इसके बाद तेलंगाना को 64.59% और तमिलनाडु 61.50% पर। आंकड़े राष्ट्रीय औसत से बहुत ऊपर हैं, जो दक्षिण भारत के विज्ञान की ओर मजबूत झुकाव की ओर इशारा करता है। आधारभूत संरचना दक्षिण भारत में विज्ञान के साथ एक प्रेम संबंध है, जो संसाधनों और अवसरों की एक उत्कृष्ट नींव द्वारा समर्थित है। इस क्षेत्र में कई अत्याधुनिक प्रयोगशालाएं, अनुसंधान केंद्र और नवाचार हब हैं। कुछ नाम हैः बेंगलुरु में इसरो अंतरिक्ष विज्ञान को प्रोत्साहित कर रहा है NAL और CLRI में हैंड्स-ऑन रिसर्च सुविधाएं उपलब्ध हैं शिक्षा -शक्ति पांच दक्षिणी राज्य और पुदुचेरी और लक्षद्वीप हाउस 1,229 एआईसीटीई-अनुमोदित संस्थान जो इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी पाठ्यक्रम प्रदान करते हैं। यह क्षेत्र प्रति वर्ष लगभग 5.11 लाख छात्रों की सेवन क्षमता समेटे हुए है और तकनीकी शिक्षा में अग्रणी है। प्रतिस्पर्धा में बढ़त आईआईटी मद्रास ज़ोन हमेशा संयुक्त प्रवेश परीक्षा (जेईई) में शीर्ष पर रहता है। 2022 में, इस क्षेत्र के 29 छात्र शीर्ष 100 में थे। "बेंगलुरु ने अकेले 2022 (नेसकाम) में भारत के तकनीकी स्टार्टअप के 30% से अधिक का हिसाब दिया। स्टेम की सफलता तमिलनाडु और कर्नाटक में स्पष्ट है, 2023 में शीर्ष 500 जेईई उन्नत रैंक धारकों में से 21.3% का योगदान है। जेईई और एनईईटी कोचिंग सेंटर, "डॉ। जगदीश भरतम ने कहा कि गितम स्कूल ऑफ साइंस, विशाखापत्तनम में भौतिकी विभाग में एक प्रतिष्ठित प्रोफेसर हैं। चिकित्सा शिक्षा में, दक्षिण भारत में देश की एमबीबीएस सीटों का 41 प्रतिशत है। इस क्षेत्र के 242

मेडिकल कॉलेजों में से लगभग 60 प्रतिशत निजी तौर पर चलते हैं, जो एक पारिस्थितिकी तंत्र बनाता है जो डॉक्टरों का पोषण करता है। अंतरिक्ष अन्वेषण को आगे बढ़ाना कक्षाओं के अलावा, दक्षिण भारत में कई योगदान हैं। एक और लॉन्च पैड आंध्र प्रदेश के सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र में विकास के अधीन है। इसे 3,985 करोड़ रुपये में मंजूरी दी गई है। इस तरह का कार्यक्रम आकांक्षाओं को बढ़ाता है और क्षेत्र की वैज्ञानिक ताकत को बढ़ाता है। बौद्धिक उत्कृष्टता की एक विरासत दक्षिण भारत में विज्ञान के लिए जुनून का एक लंबा इतिहास हैः प्राचीन योगदानः आर्यभत से केरल स्कूल ऑफ मैथमेटिक्स तक, यह क्षेत्र बौद्धिक गतिविधि के लिए एक केंद्र है जो कई शताब्दियों से पहले है। औपनिवेशिक प्रभावः ब्रिटिश शासन ने शहरों को बदल दिया हैजैसे चेन्नई, बेंगलुरु और हैदराबाद को शैक्षिक केंद्रों में बदलना। आईआईएससी बेंगलुरु और मद्रास मेडिकल कॉलेज का जन्म इसी अवधि में हुआ। आधुनिक प्रतीकः इसरो जैसे संगठन, जिसका मुख्यालय बेंगलुरु में है, और डॉ. ए.पी.जे. जैसी हस्तियाँ। अब्दुल कलाम, वे ही लोग हैं जिन्होंने वास्तव में दक्षिण भारत में वैज्ञानिक उत्कृष्टता की प्रतिष्ठा को मजबूत किया है। सीखने की संस्कृति परिवार सीखने को प्राथमिकता देते हैं, और स्कूल कम उम्र से ही एसटीईएम (विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित) पर जोर देते हैं। यह समर्पण एक पुण्य चक्र बनाता हैः मजबूत स्कूल असाधारण छात्र पैदा करते हैं जो अगली पीढ़ी को प्रेरित करते हैं। उच्च शिक्षा पर अखिल भारतीय सर्वेक्षण (एआईएसएचई) 2020-21 के अनुसार, तमिलनाडु उच्च शिक्षा में 52.5% के सकल नामांकन अनुपात के साथ देश में अग्रणी है, जिसका अधिकांश भाग एसटीईएम क्षेत्रों पर केंद्रित है। परिवार इंजीनियरिंग और चिकित्सा में करियर को प्राथमिकता देते हैं, तमिलनाडु के 58% माता-पिता अपने बच्चों के लिए इन रास्तों को प्राथमिकता देते हैं (एएसईआर 2022)। डॉ. जगदीश भरतम ने कहा, "दक्षिण भारत में उच्च अंग्रेजी दक्षता एक विशिष्ट लाभ प्रदान करती है। केरल, 96.2% की साक्षरता दर के साथ, अंग्रेजी-माध्यम शिक्षा में अग्रणी है, जिससे छात्रों को विज्ञान पाठ्यक्रमों में उत्कृष्टता प्राप्त करने और वैश्विक अवसरों तक पहुंचने में मदद मिलती है।" अकेले हैदराबाद में, 1,000 से अधिक कोचिंग सेंटर जेईई और एनईईटी के लिए विशेष प्रशिक्षण प्रदान करते हैं, जबकि उत्तर प्रदेश में 400 से भी कम कोचिंग सेंटर आईआईटी और एम्स जैसे शीर्ष संस्थानों के लिए अधिक संरचित मार्ग प्रदान करते हैं। नीति और निवेश दक्षिणी शहरों में आर्थिक विकास एक प्रमुख चालक रहा है। 2021 में $110 बिलियन की जीडीपी के साथ बेंगलुरु, आईटी और बायोटेक में प्रतिभा के लिए एक चुंबक है। 2023-24 के लिए कर्नाटक के 31,980 करोड़ रुपये के शिक्षा बजट में एसटीईएम क्षेत्रों में महत्वपूर्ण निवेश शामिल है। चेन्नई का औद्योगिक पारिस्थितिकी तंत्र इंजीनियरिंग और फार्मास्यूटिकल्स में अनुसंधान का समर्थन करता है, उसी वर्ष तमिलनाडु ने शिक्षा के लिए 40,299 करोड़ रुपये आवंटित किए हैं। दक्षिणी राज्य शिक्षा को प्राथमिकता देते हैं। ये उच्च एवं तकनीकी अध्ययन को अधिक महत्व देते हैं। वीआईटी, अन्ना विश्वविद्यालय और भारतीय अंतरिक्ष विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान विश्व स्तरीय शिक्षा पारिस्थितिकी तंत्र विकसित करने में क्षेत्र के उत्साह का प्रतिनिधित्व करते हैं। उत्तर और दक्षिण में विज्ञान के लिए बजट का आवंटन सरकार अटल इनोवेशन मिशन, स्किल इंडिया और राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 जैसी पहलों के माध्यम से समान आवंटन नीतियों को बनाए रखती है। जबकि इन कार्यक्रमों का उद्देश्य क्षेत्रीय असमानताओं को पाटना है, दक्षिणी राज्यों को ऐतिहासिक रूप से इसरो (बेंगलुरु) और जैसे संस्थानों में निवेश से लाभ हुआ है। डीआरडीओ (हैदराबाद) ने उन्हें बढ़त दिला दी। उदाहरण के लिए, 2023 के लिए इसरो का कुल वार्षिक बजट 13,949 करोड़ रुपये था, जिसमें से अधिकांश दक्षिण में मुख्यालय वाली परियोजनाओं पर खर्च किया गया है। प्रोफेसर ने आगे बताया, "भारत का समग्र अनुसंधान एवं विकास व्यय, सकल घरेलू उत्पाद (2022) का केवल 0.7% है, जो दोनों क्षेत्रों की अत्याधुनिक अनुसंधान को आगे बढ़ाने की क्षमता को सीमित करता है। हालांकि, एनईपी 2020 का लक्ष्य सभी राज्यों में अंतःविषय शिक्षा और नवाचार को प्राथमिकता देकर इक्विटी को बढ़ाना है।" . राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत, क्षेत्रीय विज्ञान पार्क और ऊष्मायन केंद्रों की स्थापना पहले से ही देखी जा रही है, तमिलनाडु और उत्तर प्रदेश को एसटीईएम-केंद्रित स्कूलों की स्थापना के लिए अनुदान मिल रहा है। दक्षिण भारत उन्नत इंजीनियरिंग से लेकर अत्याधुनिक अंतरिक्ष कार्यक्रमों का प्रदर्शन करने वाले प्राचीन मंदिरों के लिए जाना जाता है, इस क्षेत्र ने हमेशा ज्ञान का जश्न मनाया है। विज्ञान के प्रति दक्षिण भारत की प्राथमिकता में यह एक आंकड़े से कहीं अधिक है। यह शिक्षा और प्रगति के प्रति उसके समर्पण को प्रमाणित करता है। निवेश के साथ Iएन इन्फ्रास्ट्रक्चर, टैलेंट पोषण, और अपनी समृद्ध विरासत का सम्मान करते हुए, यह क्षेत्र बड़े सपने देखने के लिए पूरे देश में छात्रों को प्रेरित करने के लिए आगे बढ़ता है। यह रुझानों और संख्याओं के बारे में नहीं है, हालांकि। यह एक ऐसे क्षेत्र के बारे में है जिसने शिक्षा को जीवन का एक तरीका बनाया है। यदि उचित नींव बनाया गया है, तो आकाश सीमा नहीं होगी-यह केवल शुरुआती बिंदु है। इस तरह के सुधारों के साथ, भारत क्षेत्रीय असमानताओं को पाटने और विज्ञान और प्रौद्योगिकी में अपनी वैश्विक स्थिति को मजबूत करने के लिए अच्छी तरह से तैनात है।

बोझिल 'ज्ञान'

उमेश मानव

गुरुवर कहते हैं कि हम अपने जीवन में स्वाभाविक जीते हुए ही सफल होंगे। हमें किसी दूसरे के सहारे की आवश्यकता नहीं है। हम खुद में पूर्ण हैं, यदि हम फिर भी कुछ पाना चाहते हैं (जिसे कि हम पाना मानते हैं), वह हमें अपने सफ़र पर ही चलते हुए ही सरलता से प्राप्त हो सकता है। अपने को ही साध कर हम सत्य तक पहुंच सकते हैं।

एक बात जिसकी वजह से पूरी मानव जाति झेल रही है, वह यह कि अपना ज्ञान दूसरों पर और दूसरों का ज्ञान अपने ऊपर। यही कारण है कि हम कुछ नया नहीं कर पाए या सत्य तक पहुंचने में असफल रहे हैं। हम जितने भी, सामान्य जीवन जी रहे हैं। वैसे ही जीना यथार्थ में सबसे उचित और सफल है। परंतु हमें लगता है कि हम तुच्छ जीवन जी रहे है, छोटा जीवन जी रहे हैं। हम अपने को साधारण मान, उन लोगों में से किसी का भी अनुसरण करने लग जाते हैं जिनके लिए हम समझते हैं कि उन्होंने अपने जीवन में कुछ हासिल किया है या हम से कुछ अलग पा सके हैं। इसी सोच से प्रभावित हम संतो, बड़े लोगों, बड़े पद या प्रतिष्ठित व्यक्तियों के जीवन का अनुसरण करने लग जाते हैं। अपने जीवन के सीमित दायरे में हम जैसे तैसे अपना गुजर बसर करते हैं। घर से ऑफिस, ऑफिस से घर, सुबह की चाय, रात का खाना, त्यौहार कुछ-एक समारोह आदि में हम जीवन बिताते हुए। अपने को ऐसा मानते हैं जैसा कि हमने जीवन में कुछ नहीं पाया। हमारा जीवन यूं ही बेकार हो गया। इन सब से अलग अपना जीवन अपनी-अपनी इच्छा के अनुसार जीते हुए, जिन्होने जीवन में कोई उपलब्धि हासिल कर ली है। जिसे हम नहीं पा सके हैं और पाने की कहीं न कहीं इच्छा रखते हैं। ऐसे में सोचते हैं कि हमसे कहीं अच्छे वे हैं और उनका जीवन सफल है। यह सब हमें इतना परेशान करता है कि हम अपने जीवन में कमी महसूस करने लग जाते हैं। इस कमी को दूर करने के लिए हम दूसरों में अपने प्रश्न के उत्तर ढूंढते हैं। उत्तर जो कि हमारे नहीं है। जो हमें हमारे प्रश्न के लिए चाहिए उन्हें हमें ही तलाशना है। दूसरों के उत्तर हमारे प्रश्न के लिए वैसे ही होंगे, जैसे कि हमारे भूख लगने पर कोई दूसरा हमारी जगह अपना पेट भरे। गुरुवर कहते हैं कि जब हम ज्ञान की बात

करते हैं, तो ज्ञान व्यक्तिगत होता है। हमारी अवस्था के लिए जो ज्ञान मिलेगा वही हमारा है, वही हमारे लिए है। किसी अन्य व्यक्ति ने अपने तप से या अनुभव के आधार पर जो ज्ञान प्राप्त किया है वह उसका ही है। वह ज्ञान उसी की अवस्था को पूरा करने के लिए है, वह उस व्यक्ति का सत्य है। दूसरे का नहीं हो सकता।आज समाज दूसरे के ज्ञान के सहारे आगे बढ़ना चाहता है। इसी फेर में अंत तक कुछ भी नहीं हासिल कर पाता और मायूस रह जाता है। दूसरे जिनको हम ज्ञानी मानते हैं, ऐसा नहीं कि वह कुछ जान नहीं पाए हैं। जाने हैं पर यह सिर्फ उनके लिए ही है। हमारे लिए नहीं हमारा ज्ञान, हमारा सत्य, हमारे ही सफर में हमारे द्वारा ही जाना जा सकता है। वही हमारे लिए सरल सहज होगा और उसी से हम अपना जीवन पूरा कर पाएंगे। हम सभी की शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक स्थिति अलग-अलग होती है। हमारी अवस्था दूसरे से भिन्न होती है। हमारी अवस्था के अनुरूप जो हमें मिले मात्र वही हमारे लिए सही होगा, दूसरों से लेना उचित नहीं। दूसरे ने अपनी अलग अलग स्थिति के साथ, अलग अवस्था से कुछ हासिल किया है। हमारे लिए वह नहीं, यह वैसे ही है जैसे कि हम दूसरे के नाव पर बैठकर, दूसरे के सफर में साथ होकर, यह सोचे कि हम अपनी मंजिल पर पहुंच जाएंगे। यह सर्वथा अनुचित सी बात ही है। गुरुवर कहते हैं कि हम अपने जीवन में स्वाभाविक जीते हुए ही सफल होंगे। हमें किसी दूसरे के सहारे की आवश्यकता नहीं है। हम खुद में पूर्ण हैं, यदि हम फिर भी कुछ पाना चाहते हैं (जिसे कि हम पाना मानते हैं), वह हमें अपने सफ़र पर ही चलते हुए ही सरलता से प्राप्त हो सकता है। अपने को ही साध कर हम सत्य तक पहुंच सकते हैं। अन्यथा बिल्कुल भी नहीं। कुछ को लग सकता है कि ऐसा कैसे हो सकता है। इस वजह से हम हमेशा दूसरों पर अपना ध्यान लगाते हैं। दूसरों से अपेक्षा रखते हैं कि उनसे हमे कुछ मिल जाए। कोई

चाहिए यही सोच हमें पीछे धकेल देती है। इसी सोच के सहारे हम अपने को आगे नहीं बढ़ा पाए। हम दूसरों को देखकर या दूसरे के जीवन के अर्जित ज्ञान पर निर्भर होकर आगे बढ़ते हैं। दूसरों के सहारे सफर आगे बढ़ने पर यह होता है कि हम उतना ही जान पाते हैं, हम उतना ही समझ पाते हैं जितना कि अमुक व्यक्ति को पता होता है। इसी प्रकार पूरा एक समाज आगे बढ़ता है। जिससे कि सभी अपाहिज का जीवन जीने लगते हैं। हम कुछ नया नहीं जान पाते। हम उस सीमा के आगे नहीं बढ़ पाते जिस सीमा तक वह व्यक्ति जा चुका होता है। हम शांत, तृप्ति भी नहीं हो पाते क्योंकि जो हमें मिला है वह दूसरों का है और हमारी वास्तविक स्थिति से मेल नहीं खाता। जिससे हमें संतोष तो नहीं मिलता फिर भी हम मन मार के यह सोच लेते हैं कि जो दूसरे को मिला है तो हमें भी मिल रहा होगा। हम समझ नहीं पा रहे हैं या अभी थोड़ा और समय लगेगा। इसी के सहारे हम समय गुजारते रहते हैं। अंततः हम ठगे से रह जाते हैं। लकीर के फकीर वाली सोच हमें कही का नही रहने देती है। ना तो हम सामान्य जीवन के मर्म को समझ पाते हैं और ना ही आनन्दित रह पाते हैं। बस जीवन को कोसते रहते हैं। यह भी कि इसी तरह जीवन जीते हम दूसरों से तुलना करते रहते है। तुलना से हमारा जीव बोझिल बन जाता है। न सफर का आनन्द रह जाता है और न ही मंजिल की स्पष्टता।

हमारा है और हमारी मंजिल हमारी है। हम अपना ही बोया काट रहे है। हम अपनी फसल अपनी मेहनत से ही लाग सकते हैं। दूसरो के सहारे नही। सभी की अपनी अलग शैली, अनुभव और मंजिल है। यह एक उदाहरण लिया जा सकता है। क्रिकेट के खेल में बहुत से नियम कायदे कानून जो पहले हुआ करते थे, उस समय लगता था कि वे ऐसे ही हो सकते है। कुछ अलग नही हो सकता पर आज देखें तो बहुत कुछ बदल गया है। इसी तरह बॉलिंग मे देखें तो लगता था कि कुछ ही तकनीक है। इससे अलग और बेहतर नही हो सकता। बॉलर मालिंगा, मुरलीधरन, शेनवार्न जैसे कुछ बॉलर ने बहुत अलग करके दिखाया। जिसमें एक्शन भी तकनीकी रूप से भी सही कहा गया। विकेट भी इन बॉलरों ने खूब बटोरे। धारणा टूटी न, कि ऐसा नहीं हो सकता।

हमको हमारा सत्य ही राह दिखाता है। हमारा एहसास ही है जो हमें सही चुनाव करना बताता है। दूसरे से जो हम ले रहे वह असत्य है। जो हमारे अंदर है वही हमारा सत्य है। हमारे लिए आनन्द यही है कि हम किसी दूसरे के ज्ञान का बोझ स्वयं पर न ले और न ही किसी पर अपने ज्ञान का बोझ डालें। हमें अपने अनन्ती सफर को पूर्ण और तृप्त करने के लिए सहज और साधारण रह कर ही जीना चाहिए।

टीकेश्वर सिन्हा ' गब्दीवाला '
व्याख्याता (अंग्रेजी)
घोटिया-बालोद (छत्तीसगढ़)

सिने अभिनेत्री वहीदा रहमान

यदि समाज के समस्त चारित्रिक घटनाक्रम साहित्य में प्रतिबिम्बित होता है, तो उस घटनाक्रम का जीवंत दर्शन होता है सिनेमा में। सिनेमा सामाजिक, धार्मिक, आध्यात्मिक एवं साहित्यिक घटनाक्रमों को सार्वजनिक रूप से उजागर करने का साधन है; और इसीलिए यह साधन चलचित्र कहलाता है। सिनेमा न सिर्फ मनोरंजन का एक जरिया है, बल्कि विभिन्न शिक्षाप्रद तथ्यों का सुगम स्रोत है। सिनेमा में एक सामाजिक अभिनव परिवर्तन लाने का सामर्थ्य होता है। अतएव सामाजिक जीवन में सिनेमा का महत्व और बढ़ जाता है।

अब सिनेमा यानी चलचित्र की बातें चल पड़ी है, तो मैं एक ऐसे सिने अदाकारा का जिक्र करना चाहूँगा, जिनका आज शुभ जन्मदिवस है; और वे हैं, मशहूर फिल्म अभिनेत्री वहीदा रहमान जी। दक्षिण भारत के तमिलनाडु प्रांत के चेंगलपट्टू में 3 फरवरी सन् 1938 को जन्मी वहीदा की रोजुलू मराई पहली फिल्म है, जो तमिल भाषा में बनी है। कई राष्ट्रीय फिल्म फेयर पुरस्कार, पद्मश्री, पद्मभूषण एवं दादा साहेब फाल्के जैसे पुरस्कार से नवाजी गयी वहीदा रहमान ने पचास से अधिक फिल्मों में काम किया है। उन्होंने भारतीय हिन्दी फिल्म जगत को प्यासा, कागज के फूल, प्रेम पुजारी, तीसरी कसम, चौदहवीं का चाँद, नीलकमल, राम और श्याम, खामोशी, कभी कभी, त्रिशूल, मशाल, नमक हलाल, महान जैसी सुपरहिट फिल्में दी हैं। उनमें से अपने समय की युवा दिलों की धड़कन रही वहीदा अभिनीत फिल्म 'गाईड' की अपनी अलग ही पहचान है। उनके अद्भुत अभिनय सामर्थ्य से गाईड एक उत्कृष्ट फिल्म बन पड़ी है। फिल्म गाईड की वहीदा रहमान की जबरदस्त अदाकारी के जरिए मैं उनकी अभिनय क्षमता को आप सभी सुधी पाठकों के स्मृति पटल पर रखना चाहूँगा।

गाईड- एक परिचय :

सन् 1965 में बनी फिल्म गाईड की कहानी सुप्रसिद्ध भारतीय अंग्रेजी साहित्यकार श्री आर के नारायण के प्रसिद्ध उपन्यास 'द गाईड' पर आधारित है। फिल्म की कथावस्तु एक पुरातत्ववेत्ता रहे बेपरवाह पति (किशोर साहू), बिंदास युवक राजू गाईड (देव आनंद) एवं अनुपम रूपलावण्य तरूण नृत्यांगना रोज़ी (वहीदा रहमान) जैसे चरित्रों से गुँथी हुई है। देव आनंद निर्मित फिल्म गाइड के निर्देशक विजय आनंद हैं। शैलेन्द्र ने आज फिर जीने की तमन्ना है, गाता रहे मेरा दिल, पीया तोसे नैना लागे रे, सइंया बइमान, तेरे मेरे सपने... जैसे दस बेहतरीन गीत लिखे हैं। इन गीतों को सचिन देव बर्मन ने अपने संगीत से सँवारा है, और किशोर कुमार, मोहम्मद रफी, मन्ना डे, सचिन देव बर्मन एवं लता मंगेशकर ने अपने सुरों से सजाया है। फिल्म में देव आनंद, किशोर साहू, वहीदा रहमान, लीला चिटनिस, अनवर हुसैन, मृदुला रानी जैसे दिग्गज कलाकारों ने अपनी अहम् भूमिका निभाई है।

वहीदा का चारित्रिक न्याय :

अपनी हर फिल्म की तरह वहीदा ने गाईड में भी अपने चरित्र के साथ बखूबी न्याय किया है। फिल्म के प्रारंभ में उन्होंने एक विवश देवदासी माँ की लाचार जवान बेटी रोज़ी को एक उम्रदराज व्यक्ति मार्को के साथ ब्याहते चरित्र को बहुत सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया है। रोज़ी के रूप में अपनी उम्र से बेमेल खाते पति मार्को के अपने साथ बिगड़ते हुए सम्बंध को वहीदा ने पर्दे पर प्रस्तुत किया है, जो काबिले-तारीफ़ है।

जब रोज़ी की मुलाकात राजू गाईड से होती है। दोनों में दोस्ती होती है। दोस्ती प्यार में बदल जाती है। फिर दोनों एक साथ रहने लगते हैं। लोगों की छींटाकशी को बर्दाश्त करती रोज़ी का वहीदा ने बहुत बढ़िया अभिनय किया है। राजू के सहयोग से रोज़ी को एक नृत्यांगना के रूप में नाम व शोहरत मिलने लगता है; रोज़ी नलिनी कहलाने लगती है। और राजू शराब के नशे में डूबने में लगता है, और फिर दोनों में दूरियाँ बढ़ने लगती है। रोज़ी अहम् और वहम् के बीच उलझ जाती है। राजू के प्रति उसका व्यवहार रूखा हो जाता है। रूठी एवं रूखी रोज़ी के चरित्र को वहीदा ने बड़े गजब तरीके से पेश किया है।

फिल्म के अंत में पश्चाताप में डूबी रोज़ी राजू को ढूँढती है। और फिर उसे एक अकालग्रस्त गाँव में राजू स्वामी जी के रूप में मिलता है। राजू मरणासन्न अवस्था में होता है। राजू के प्रति रोज़ी का हृदय सहानुभूति से भर जाता है। स्वामी जी यानी राजू हमेशा के लिए आँखें बंद कर लेता है। पश्चाताप व अपराध-बोध में डूबी रोज़ी के किरदार को वहीदा ने बखूबी निभाया है। फिल्म गाईड की रोज़ी के रूप में अपनी जबरदस्त अदाकारी के चलते वहीदा रहमान सिने प्रेमियों की पसंदीदा अदाकारा बनी।

बेहतरीन संवाद अदायगी :

बहुत ही सुंदर व नपे-तुले शब्दों से पिरोये संवाद को वहीदा ने रोज़ी के रूप में बड़े बेहतरीन तरीके से पेश किया है। चेहरे का हाव-भाव देखते ही बनता है। चाहे रोज़ी का संवाद माँ के साथ हो, चाहे पति के साथ हो, चाहे राजू के साथ हो या फिर चाहे किसी अन्य चरित्र के साथ हो , वहीदा की संवाद अदायगी में सजीवता आ गयी है। विभिन्न मुद्राओं की पाषाण प्रतिमाओं के बीच रोज़ी यानी वहीदा के पति मार्को (किशोर साहू) के साथ संवाद की बानगी देखिए।

रोज़ी- 'मार्को...! कुछ तो फर्क होगा मुझमें, और इन पत्थरों की मुर्तियों में?'

मार्को- 'ये मुझे परेशान नहीं करती।'

- 'परेशान नहीं करती, इसलिए कि ये पत्थर हैं, या फिर पत्थर हैं कि परेशान नहीं करते? मेरे दिल में पत्थर रखा तुमने? एक बार इस पत्थर में दिल रखके देखो कि एक-एक मूर्ति चिल्ला-चिल्लाकर कहेगी कि मैं जीना चाहती हूँ मार्को।'
- 'जी नहीं रही हो तुम ?'
- 'जी मारकर जीना है तो, मैं जी रही हूँ, लेकिन तुम्हारे पास तुम्हारा काम है, मेरे पास क्या है?'
- 'औरत के पास क्या हो सकती, उसका घर?'
- 'घर पति से होता है, घर होता है बच्चों से।'
- 'इसमें मेरा क्या कसूर है? यदि भगवान ही नहीं चाहता, तो मैं क्या कर सकता हूँ?'
- 'मैं तो तुम्हें दोष नहीं दे रही हूँ मार्को, लेकिन मैं किस उम्मीद पर जीऊँ? दिन भर बैठ क्या सपने देखा करूँ? रात भर जाग कर क्या सोचा करूँ? बच्चों का सुख नहीं, तो कुछ तो आने चाहिए मेरे जीवन में...?'

वहीदा के नृत्य में संजीदगी :

अनुपम सौन्दर्य की साम्राज्ञी वहीदा रहमान ने फिल्म गाईड में एक देवदासी की बेटी रोज़ी का किरदार निभाया है। रोज़ी एक बेहतरीन नृत्यांगना है, जिसे वहीदा ने अपनी अद्भुत नृत्य क्षमता से जीवंत किया है। अपने नृत्य-कौशल से भाव-भंगिमाओं को पर्दे पर बखूबी उकेरा है। उनके नृत्य भंगिमाओं से दर्शकों की नजरें नहीं हटती। उनकी नृत्य कला में बड़ी संजीदगी है। उनकी नृत्य कला बोलती हुई प्रतीत होती है। इस फिल्म में शास्त्रीय व लोक नृत्य कला का सम्मिश्रण वहीदा को एक कुशल नृत्यांगना के रूप में स्थापित करता है। वहीदा ने अपने छरहरे बदन, सुराही आकार गले, बलखाती बेले की तरह लचकती कमर व आकर्षक नैन-नक्श से स्वयं पर फिल्माए गीतों में चार चांद लगा दिया है। अपने डांस परफॉर्मेंस से गीतों के भावप्रवण को बेहद आकर्षक व खुशनुमा बना दिया है। मैं अपनी ओर से वहीदा रहमान जी को उनके जन्मदिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करते हुए आप सुधी पाठकों को प्रस्तुत गीत के जरिए उनकी नृत्य भंगिमाओं का स्मरण कराता हूँ।

'मोसे छल किये जाये
हाये.. हाये.. हाये...
देखो सइंया बइमान सइंया बइमान
मोसे छल मोसे छल किये जाये
हाये.. हाये.. हाये... देखो हाँ....
सइंया बेइमान...'

एक भीखारी की आत्मकथा

श्यामल बिहारी महतो
बोकारो, झारखण्ड

'इस धंधे में अब कुछ नहीं रखा है, क्या कहूं बाबू, एक समय था जब तेलो हटिया में रामप्रसाद मोहली के हाथों बनी सूप दोरी और टोकरी खंचिया को लोग खोज खोज कर लेते थे। कुछ तो घर आकर खरीद ले जाते थे। आज हर आदमी अपने अपने पुस्तैनी धंधों से दूर होते जा रहा है। किसान खेत से दूर हो रहा है। कुम्हार चाक चलाना छोड़ रहा है। लोहार लोहा गलाना छोड़ दिया। हर आदमी अपनी वृति से मुंह मोड़ रहा है। हाथ ने मुझे भी लाचार कर दिया है, क्या करूँ, भीख मांगता फिरता हूँ..!' कहते कहते उसकी आंखें भर आई थीं।

उस भीखारी से यह मेरी पहली मुलाकात नहीं थी, इसके पहले भी हम दो बार मिल चुके थे। अपने ही हाथों से उसे दो बार भीख भी दे चुके थे। एक बार एक कटोरा चावल और दूसरी बार पांच रूपए दिये थे। कारण घर में ताला लगा हुआ था और मेरे पास दूसरी चाभी नहीं थी। घर से उसका निराश खाली हाथ लौटना मुझे अच्छा नहीं लगा था। हां तब उसके बारे कुछ पता भी नहीं था।

आज फिर वही अचानक चार बजे भोर घर के बाहर मिल गया। गाय बैलों को खूंटे से बांध, उनके सामने पुआल डाल दिया और मैं खुद आग जला कर हाथ पैर सेंकने लगा था। तभी वह आग के आगे भूत की तरह आकर खड़ा हो गया।

'अगहन महीना से ठंडा काफी बढ़ जाता है..!' कहते कहते अलाव से थोड़ी दूर वह बैठ गया था।

'हां, यही अगहन पुस माह का महीना तो है जो ठंड का असली रूप दिखाता है। अमीरी गरीबी का फर्क बताता है- पहचान कराता है। एक ठंड ही जो किसी के साथ भेदभाव नहीं करता है और सबको समान रूप से ठंड बांटता है।'

मैंने उसकी तरफ देखा। देह पर मात्र एक फटा पुराना कुर्ता, पैरों में पुरानी फटी चप्पल और अपनी कांपती देह पर एक फटी चादर उसने ऊपर से ओढ़ रखी थी। तथा कंधे पर एक मटमैला सा झोला टांग रखा था।

'आप आग तापिये, मै अभी आया..!' कह मैं अंदर गया और एक पुरानी स्वेटर लाकर उसे देकर कहा 'इसे पहन लीजिए, ठंड से बचने में मदद मिलेगी, ऊन की है।'

'बहुत मेहरबानी बाबू जी..!'

'वैसे आज इतनी भोर भोर कुकुआते ठंड में कहां चल दिया..?' मैंने पूछ बैठा था।

'गुंजरडीह के झूलन मोदी के घर में रात था। घर की औरतें आधी रात को ही कोयला लाने जाने के लिए कदकदाने लगी थी। मुझे भी उठ कर जाने को कह दिया। रात का पता न चला, निकल कर सीधे इधर आ गया..!'

'पर इतनी भोर जाओगे कहां ? इतनी सबेरे कोई भीख भी नहीं देंगे..!'

'पहले के श्रबनिया पंडा लोग चार बजे भोर हमारे घरों से भीख मांग ले जाते थे, आपने भी देखा होगा शायद, हम तो गाँव घर के है।'

'फिर भी इतनी सबेरे, जाओगे कहां?

'पहले मझलीटांड जाऊंगा, वहां से परतापुर और फिर बिरनी होते हुए घर..!'

'घर में कौन कौन है?'

'बेटा है, पुतोहू है और एक पोता और एक पोती भी..! दो बेटियां थी, दोनों की शादी कर दी.!'

'घर में पूरा परिवार है फिर भी भीख मांगते फिरते हो..!'

'हमारा परिवार मेरी पत्नी थी, पिछले साल उसकी मृत्यु हो गई। घर में जो परिवार है वो मेरे बेटे का परिवार है और उन लोगों ने हमें घर से निकाल दिया है..!'

'ऐसा क्यों..?'

'अब कमा जो नहीं पाता..!'

'आपका नाम क्या है..?'

'राम प्रसाद..!'

'पूरा नाम..!'

'राम प्रसाद मोहली..!'

'घर..!'

'चडरी..!'

'आप तो टोकरी, खंचिया, सुप-दाऊरी बना कर भी इज्जत की जिंदगी जी सकते थे, पहले बनाता ही होगा, शरीर से भी ठीक ठाक हो, यह कामचोरी कहां से आई..?'

उसने अपने दोनों हाथ आगे बढा दिए। दोनों हाथों की दसों के दसों अंगुलियाँ सिकुड़ कर मुड़ गयी थीं।

'ओह ! तो यह बात है। दो बार मैंने आपको भीख दी है, पर कभी हाथ की अंगुलियों पर ध्यान नहीं गया ! सचमुच दुख हुआ..!'

'राशनकार्ड से आपको गेहूँ चावल तो मिलते होंगे..?' आग में लकड़ी डालते हुए फिर मैने पूछा - 'उससे आपका अकेले का तो गुजारा हो जाता..!'

'पुतोहू ने राशन कार्ड छीन ली है..!'

'बेटा से बोलता..!'

'आज की बहुओं के आगे बेटों की कहां चलती है बाबू..!'

'खेती बारी तो कर सकते थे..?'

'छह बूढों की बाईस एकड़ जमीन है, लेकिन सब बेकार- परती पडीं है, जब से सरकार ने राशनकार्ड से अनाज देना शुरू किया है, गाँव में लोग खेती बारी करना ही छोड़ दिया है ..!'

'और बेटा क्या करता है..?'

'बैंक से लोन में पैसा लिया और मोटरसाइकिल खरीद ली, अब उसका कर्जा भरने के लिए गाँव में इसके उसके घर में पचोडा सचोडा करते फिरता है..!'

'पुस्तैनी धंधा, टोकरी खंचिया बना कर भी वह पैसे कमा सकता था। बाजार में हाथ के बने समान आज भी बहुत महंगी दामों में बिकते हैं..!'

'आज के लड़के खेती बारी और पुस्तैनी धंधे को बड़ी गिरी हुई नजरों से देखते हैं, बेटा को हमने कई बार कहा लेकिन उसका एक ही जवाब होता है..!'

'इस धंधे में अब कुछ नहीं रखा है, क्या कहूं बाबू, एक समय था जब तेलो हटिया में रामप्रसाद मोहली के हाथों बनी सूप दोरी और टोकरी खंचिया को लोग खोज खोज कर लेते थे। कुछ तो घर आकर खरीद ले जाते थे। आज हर आदमी अपने अपने पुस्तैनी धंधों से दूर होते जा रहा है। किसान खेत से दूर हो रहा है। कुम्हार चाक चलाना छोड़ रहा है। लोहार लोहा गलाना छोड़ दिया। हर आदमी अपनी वृति से मुंह मोड़ रहा है। हाथ ने मुझे भी लाचार कर दिया है, क्या करूँ, भीख मांगता फिरता हूँ..!' कहते कहते उसकी आंखें भर आई थीं ।

इसी के साथ वह उठ गया था 'चलता हूँ बाबू, जाने में घंटा भर लग जाएगा..!' और वह चला गया था।

मैं देर तक यही सोचता रहा कि इस मुफ्त की राशन ने कितनों को निकम्मा बना दिया है..?

ग्राम्य लोक-संस्कृति में भुर्री का महत्व

प्रिया देवांगन
छत्तीसगढ़

किसी कवि ने क्या खूब कहा है -

गाँव की माटी को सूँघो,
गंध को एक नाम दे दो।
एक मुस्कुराती सुबह दे दो,
एक सुहानी शाम दे दो।।

उक्त चरितार्थ पंक्तियों के सम्बंध में कुछ इस तरह की बातें कही जा सकती हैं कि तीन पहर का दिन और चार पहर की रात का सुहाना संगम छत्तीसगढ़ के ग्राम्य अंचलों में दिखता है। यहाँ के लोग पूरे बारहों महीने पसीनेतर कमाई से कभी नहीं घबराते। तप्त ऋतु की भीषण गर्मी हो, पावस की मूसलाधार बारिश हो, चाहे शीत की कड़कड़ाती ठंड हो, सब एक बराबर होते हैं इनके लिए। हर स्थिति में अपने भीतर उष्णता बनाए रखते हैं, चाहे खानपान, पहनावा या फिर चाहे और कोई बाह्य स्रोत जैसे- चुल्हे की आग, गोरसी की खरखराती धीमी आँच या फिर पैरा या झिटका की दहकती आँच अर्थात भुर्री।

भुर्री तापना एक परम्परा :

भुर्री, यहाँ के लोगों के द्वारा आग तापने की परंपरा है। अत्यधिक ठंड पड़ने पर ग्रामीण लोग छोटी–छोटी लकड़ियाँ इकट्ठा कर गोरसी या चूल्हे में जलाकर धीमी आँच से शरीर की सिकाई करते हैं और शरीर में गर्माहट पैदा करते हैं। यह परम्परा प्राचीन काल से चली आ रही है। गाँव में प्रायः बड़े-बुजुर्ग सूर्योदय से पहले ही जब चहुँओर शीत की बूँदें बरसने लगती हैं, सुबह उठ कर चूल्हे या गोरसी में छेना, चिल्फा या फिर कोयला डालकर आग सुलगाते हैं/ जलाते हैं। आग सूर्य के रंग जैसा प्रतीत होती है, मानो सूर्य के बीच की चमकती हुई आभा चूल्हे में उतर कर मन को प्रफुल्लित करती हुई देह की सिकाई कर रही हो। आग के अंगारे मद्धम–मद्धम दगते हैं। धीमी–धीमी आँच पड़ने पर बड़ा सुकून मिलता है। ठंड के दिनों में सभी साथ में बैठकर भुर्री का आनंद लेते हैं।

भुर्री देती नसीहतें :

गाँव का रहन–सहन देखकर मन आनंदित हो उठता है। आज भी लोग गाँव में एकत्रित होते हैं और अपने–अपने जीवन की बातें एक–दूसरे से साझा कर ठहाके लगाते हैं। भुर्री तापते लोगों में भ्रातृत्व दिखता है, एकता नजर आती है।

लोग खेत–खलिहान से आकर शाम के समय जल्दी से भोजन कर चौराहे या फिर किसी के घर–आँगन में बैठ भुर्री का आनंद लेते हैं। छोटे–छोटे बच्चे, बड़े बुजुर्गों की बातें कान लगाकर बहुत ध्यान से सुनते हैं और आनंद लेते हैं। लोगों के बीच घर-परिवार एवं खेत-खलिहान की बातें होती हैं। विचारों का आदान-प्रदान होता है। एक-दूसरे का शोर-संदेश मिलता है। भुर्री लोगों में परस्पर सामंजस्य स्थापित करती है।

उक्त बातें कहना ज़रा भी गलत नहीं होगा कि भुर्री लोगों को एक–दूसरे से जोड़ने की सीख देती है। गाँव में कोई भी व्यक्ति अकेले भुर्री का लुत्फ उठाते नज़र नहीं आएगा, कम से कम पाँच–छः लोग दिखेंगे ही। बड़े-बुजुर्गों का ख्याल रखते हुए कई बच्चे छोटी–छोटी लकड़ियाँ इकट्ठा करते हैं, ताकि शाम को आग जला कर पास बैठ सकें।

छत्तीसगढ़ के देहात-अंचल में गीत, कविता, कहानी-कंथली व लोकोक्ति-मुहावरे इन भुर्री तापते लोगों से सुनने को मिलते हैं। बड़े बुजुर्ग बातों ही बातों में बहुत से मुहावरे वगैरह प्रयोग करते हैं, जिससे बच्चों को आसानी से सीखने को मिलता है। ग्रामीण क्षेत्रों में भुर्री के फायदे लोग बहुत अच्छे से जानते हैं। आज भी बहुतायत तो नहीं, लेकिन भुर्री का उपयोग किया ही जाता है। स्वेटर, शॉल की उन्हें ज्यादा जरूरत नहीं पड़ती, शाम और सुबह जरूर भुर्री ताप कर ठंड भगाते हैं।

भुर्री को सहेजने की जरूरत :

आजकल गाँवों में भी लकड़ी, छेना या कोयला सहज सुलभ उपलब्ध नहीं हो पाता। कारण है पेड़–पौधों की कटाई, पशुपालन का कम होना, खेतों में मकान बनना इत्यादि। इसका असर ज्यादातर ग्रामीण परिवेश में देखने को मिलता है। लोग अब अपनी सुख-सुविधा के चलते शहरों की ओर बढ़ते जा रहे हैं। गाँव-देहात छूटता जा रहा है। कुछ सालों बाद ऐसा होगा कि गाँवों में सिर्फ बुज़ुर्ग ही दिखाई देंगे, युवावर्ग नहीं। जो लोग भुर्री के बारे में जानते हैं, वे शहरों में गोरसी बनाकर इसका उपयोग करते हैं, करेंगे क्यों नहीं; आखिर अपने गाँव की मिट्टी में पले–बढ़े हैं।

आजकल भुर्री तापने की परम्परा ही सिमट कर रह गई है। स्वेटर, शॉल व कम्बल ने इनकी जगह ले ली है पर मेरा मानना है कि क्यों न हम शहरों में भी रह कर भुर्री का उपयोग करें, ताकि हमारी आने वाली पीढ़ी भी इसे जाने, समझे और इससे लाभान्वित हो। इससे हम अपनी मिट्टी से जुड़े रहेंगे। मुझे एक कवि की कुछ पंक्तियाँ याद आ रही हैं-

"सौंधी महक मिट्टी की,
वो पगडंडी वाले गाँव।
ताल-तलैया स्वच्छ पानी,
वो वट-पीपल की छाँव।।
तुलसी-चौरा आँगन का,
वो गौरैये का चींव-चाँव।
खोर-गली बिजली खम्भा,
वो घर-द्वार ठाँव-ठाँव।।"

यहां छिपीं हैं दादी नानी की कहानियां

डॉ. सतीश बब्बा
चित्रकूट, उत्तर - प्रदेश

ऐसा लगता है कि, बहुत पहले पूरी तरह से हमारे पूर्वज प्रकृति के सहारे जीते रहे होंगे! यह जंगल हमें खाने पीने की सभी व्यवस्थाएं करते रहे होंगे।

सरकार को जीवन के लिए पर्यावरण संरक्षण करना चाहिए, जीव - जंतुओं, मनुष्यों, पशुओं के लिए जंगल पानी बचाना होगा।

बचपन में दादी-नानी की कहानियां जंगल, जंगली जानवर, पशुओं, पक्षियों पेड़ों पर आधारित हुआ करतीं थीं। उनकी कहानियों में, जंगली बातें, जीवन गैर जिम्मेदाराना नहीं था; वह तथ्य आधारित ही हुआ करती थीं। मुझे तो अब सबकुछ यहां आकर सत्य लगने लगा है। मैं कान्हा राष्ट्रीय उद्यान के बीच लगभग बीस पच्चीस दिनों से घूम रहा हूं। मैंने कान्हा राष्ट्रीय उद्यान की गोद में बसे गांवों में घूमकर, लोगों से बातें किया है।

मैं इन गांवों में रुका भी हूं, इन लोगों के साथ समय बिताया हूं, खाना भी खाया हूं।

चनई गांव बालाघाट जिले में है, भरवेली, डुंगरिया मंडला जिले में आते हैं। मैं चनई आदि गांवों में रुक - रुककर वहां के रहन - सहन, खेत-बाड़ी सभी को पास से, बारीकियों से देखा था।

उस बियाबान जंगल में मैं अपनी स्मृति शेष पत्नी श्रीमती शोभा देवी को भी खोजने का प्रयास कर रहा था। मैं जानता हूं कि, जाने वाला फिर लौटकर नहीं आता है। मन से मजबूर था मैं, पेड़ - पत्तियों से, वन जीव - जंतुओं से भी पूछा करता था। शायद कहीं वह दिखाई दे जाती!

चनई गांव के बारे में मैं लिख चुका हूं। भरवेली जो चनई की सीमाएं भरवेली की सीमाओं से मिलती हैं, कुछ लोग भरवेली के चनई में खेती करते हैं।

डुंगरिया भी जंगल पार इसी कतार में है। इन गांवों में पहाड़ नहीं हैं, कहीं - कहीं यदा-कदा छोटी-छोटी पहाड़ी हैं। यह जबलपुर के आगे से जो घाट मिलता है उसी की चोटी का समतलीकरण प्रकृति ने किया है।

यह चनई, भरवेली, डुंगरिया पास - पास होते हुए भी एक दूसरे को देख नहीं सकते हैं। खलोंड़ी आदि और भी गांव हो सकते हैं। यहां सिर्फ जंगल है।

ऐसा लगता है कि, यहां पहले खेती की जमीन रही ही नहीं होगी। यहां आज भी पर्यावरण सुरक्षित है। सरकारी परियोजनाओं से विकास, खेती संभव है। पर पर्यावरण पर इसका असर पड़ेगा।

यहां लोग धान पैदा करके खेतों को छोड़ देते हैं। यहां मांसाहार, शराब इसलिए है क्योंकि, यहां पर जंगली जानवरों को मारकर गांव भर के मिल - बांटकर खाते हैं।

यहां पर्याप्त चार के पेड़ हैं। यहां के लोग मूर्खता करते हैं चार के पेड़ को नीचे से काटकर गिरा देते हैं। फल जिसमें चिरौंजी निकलती है, उसे बेचकर पैसा बनाते हैं; इसीलिए चार का पेड़ कम होते जा रहे हैं। सरकार को चाहिए कि, इनको सलाह दे कि, 'पेड़ नहीं काटें, डाल काटकर फल ले लें!'

आंवला भी प्रति व्यक्ति आमदनी करवाता था, उसे काट - काटकर यहां के लोगों ने नष्ट कर दिया है।

यहां पर्याप्त, साफ धूप मिलने से पेड़ विकसित होते हैं। यहां के जंगलों में महुआ के पेड़ बहुतायत पाए जाते हैं।

भैंस चराने वाले एक अहीर ने बताया कि, "इन गांवों के लोग एक परिवार कम से कम तीस से पैंतीस हजार रुपए के महुआ बेंच लेते हैं!"

यहां का जीवन ऐसा लगता है आज से सौ साल पूर्व कोई खेती नहीं करता रहा होगा। यहां नदी, नालों, झरनों का पानी, फल, जड़ी-बूटियां जंगली जानवरों, मछलियों को खाकर जीवनयापन करते रहे होंगे।

यहां के लोग अच्छे स्वभाव के मालिक हैं। यहां अब धीरे - धीरे बाहरी हवा लग रही है। बिजली, टी वी, मोबाइल, आते - जाते ठेकेदार आदि से हो सकता है, इनके जीवन में बदलाव लाएंगे।

इनमें सज्जनता है, सीधे-सादे यहां के लोग अपनी जवान बहन-बेटी के साथ बैठकर बातें करने वाले को किसी शक की निगाह से नहीं देखते हैं।

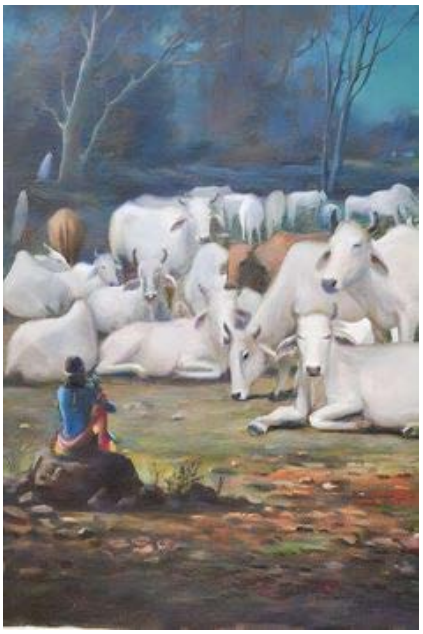

यहां के लोग पशुपालन करते हैं। यहां के निवासियों में दुश्मनी देखने को नहीं मिली मुझे। महुआ का फूल, फल सब बेंचते हैं।

चनई गांव की कुल आबादी ग्यारह सौ है। जिसमें सामान्य वर्ग एक भी नहीं है। अनुसूचित जाति, जनजाति एवं पिछड़ा वर्ग के लोग रहते हैं।

भरवेली में आदिवासी, यादव जाति के लोग ज्यादा हैं। एक पांडे ब्राह्मण है जो अब तीन चार भाइयों के बंटवारे से तीन चार घर हो गए हैं। वही ब्राह्मण तीन-चार गांवों में शादी-विवाह करवाया करता है।

यहां के लोग अपने इस्तेमाल की चीजें, साग-सब्जी, किराना का सामान साप्ताहिक बाजार से सप्ताह भर के लिए लेकर आते हैं। यहां की साप्ताहिक बाजार परसवाड़ा में लगती है। यह बाजार हर बुधवार को लगा करती है। सभी घरों से जिम्मेदार, घर का मुखिया, या औरतें भी बुधवार के दिन बाजार जाती हैं।

यहां मजदूरी करने वाले बुधवार को मजदूरी लेकर बाजार जाते हैं इसलिए यहां बुधवार को मजदूरों की छुट्टी रहती है।

यहां के गांव के लोगों ने बताया, "यहां धान के खेतों में जब कोई जानवर आता है, जंगली सुअर, रोज आदि, धान के खेत में या तालाब में जंगली कुत्तों से डरकर घुस जाता है, निकलने नहीं पाता है तब, गांव के लोग उसको शिकार बनाते हैं।

इन गांवों में एकता आज भी बरकरार है। कोई जानवर तालाब या खेत में फंस गया तो पूरे गांव के लोग मिल - बांटकर खाते हैं जो लोग किसी कारण वश नहीं आते उनके घर पहुंचा दिया जाता है।

गांव में पुलिस की जरूरत नहीं पड़ती है, सब लोग खुद मिलकर मामला निपटा लेते हैं। गांव की भौगोलिक स्थिति, गांव के खेत आज भी बता रहे हैं कि, इनको जंगल से छीनकर जबरन खेत बनाया गया है।

इन गांवों में विशेषकर चनई में चोरी-चमारी नहीं होती है। गांव में भाईचारा काबिले-तारीफ है।

मैंने खुद देखा है, एक दिन एक गांव का आदमी शराब पीकर गाली - गलौज कर रहा था। सौ नंबर पर, थाने पर सूचना दी गई थी। गांव के सरपंच ने शराबी को सजा दिया था। पुलिस से साफ कहा कि, "आप मत आना मैं देख लूंगा!"

सरपंच गांव में पुलिस का आना अपनी, अपने गांव की तौहीन समझता है।

कान्हा राष्ट्रीय उद्यान के दायरे में ही बालाघाट जिले के अंतर्गत मलाजखंड है जहां तांबा निकलता है। यहां प्रकृति के चितेरे ने ऐसा चित्र उकेरा है जो देखने लायक है।

यहां के खेत भी जबरन मनुष्यों ने बनाया होगा। यहां के खेत जंगल काटकर ही बनाए गए हैं। कोई खेत बराबर नहीं हैं। तालाब में चल रहे काम के लिए अपने खेतों की मुरम, मिट्टी देने के लिए लोग लाइन लगाते हैं।

कुछ खेतों में काली मिट्टी, मारू, मोटी मिट्टी भी है। मोटी मिट्टी वाले खेत भी बराबर नहीं हैं। मोटी मिट्टी देने के लिए सुबह से ही लोग कैंप में आ जाते हैं।

यहां खेत में एक कुआं सरकारी है जो, तीस फीट गहरा है, उसमें पानी एक बार निकाल देने पर पंद्रह दिन तक नहीं भरता है। उसी लाइन में

करीब पचास मीटर की दूरी पर वह खेत इस कुआं वाले खेत से तीन या चार फीट नीचे है। वह कुआं करीब सात फीट गहरा है; पक्का मोहड़ा सरकारी कुएं की तरह उसका भी है।

उस प्राइवेट कुएं से पानी निकल कर बह रहा था। नीचे के खेतों में भरकर बह रहा था। यहां धान पैदा करके छोड़ दिया गया है, अब इस पूष के महीने में खाली पड़े हैं खेत!

कुछ गिने-चुने लोगों ने चना, अलसी, देशी मटर भी लगा रखा है; जिसकी रखवाली रातों दिन करनी पड़ती है।

मैं भरवेली के एक खेत की मेंड़ में बनी मड़ई में बैठा हूं। यहां पर मोटी मिट्टी है, चना की फसल है जो छोटी छोटी बहुत ही अच्छी लगती है। अपनी कुतिया के साथ खेत की मालकिन एक बूढ़ी मां खेत की रखवाली में है। वह आदिवासी मां कांछ मारकर धोती पहनी हुई है। वह आदिवासी मां अपने बेटे के इंतजार में है, उसका बेटा आएगा दो जर्मन नस्ली कुत्तों के साथ; रात भर यहां खेत की रखवाली करेगा।

चारों तरफ बियाबान जंगल है। चारों तरफ से जंगल से घिरे खेत मनोहारी लगते हैं।

यहां बहुएं ससुराल में सिर नहीं ढांकती हैं, इससे साफ हो जाता है कि, परदा प्रथा नहीं है।

जिस खेत में मैं बैठा लिख रहा हूं, यहां पर इसी खेत के मालिक जो बसने आता है उस बूढ़ी मां का बेटा उसकी बेटी, आदिवासी बाला जो गोरी - चिट्टी खूबसूरत जो किसी भी गबरू जवान, पुरुष, मनचले का मन मोह लेती थी।

एक दिन वह आदिवासी बाला अपनी कुतिया के साथ यहां रखवाली करने आई थी। मन तो मन ही है, उसे कौन रोक सकता है। यहां मैं पहली बार उसे देखकर दंग रह गया था कि, ऐसी खूबसूरती इस गहन वन में भी हो सकती है।

मैंने उसे बुलाया, उससे उसके भाई का नंबर मांगा था, उसने सही नंबर दिया था। मैंने उसके भाई से बात किया, उसने सकारात्मक जवाब दिया था।

मैं उस सुंदरी आदिवासी बाला से खूब घुल मिल गया था। बातें करते रहे थे, उसकी दादी आई वह भी बातें करने लगी थी। उस बूढ़ी मां को कम सुनाई देता था। मैं उस सुंदरता की प्रतिमूर्ति से बात करता रहा था। दादी दूसरे खेतों की ओर चली गई थी; कोई छल कपट उनके पास नहीं था।

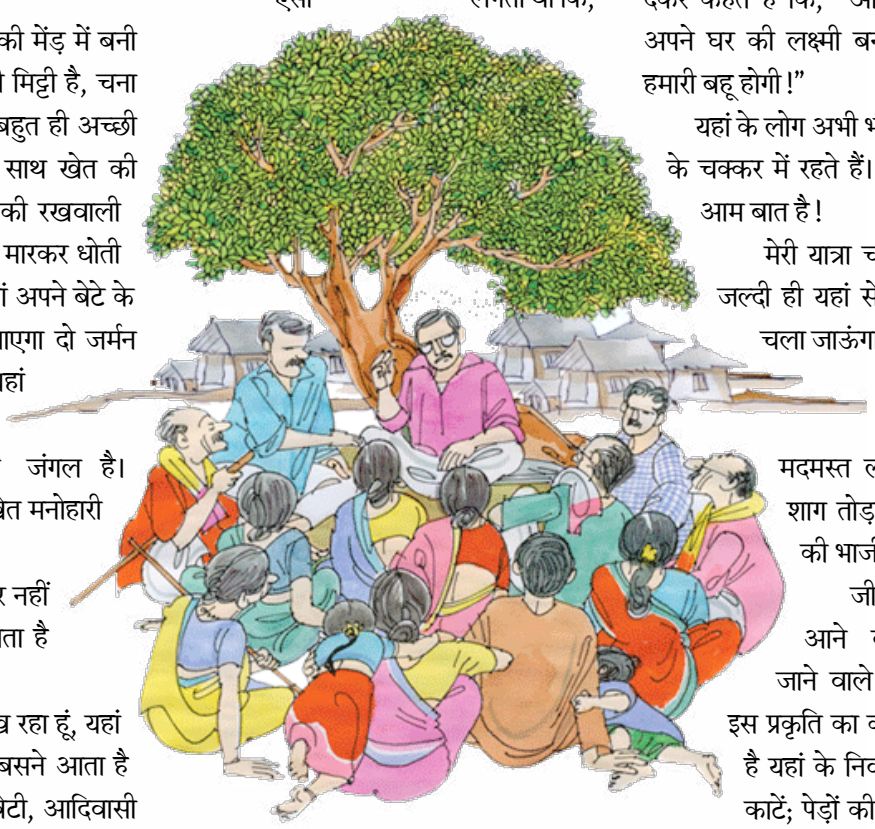

ऐसा लगता था कि, मुझे जो कहानी मेरी दादी, नानी, मेरी अम्मा सुनाया करती थीं, वह साकार रूप में मेरे सामने है। जंगल में राजकुमारियां ऐसी ही रहती रही होंगी। इन्हीं जंगलों के शेर, भालू, बकरियों की कहानी थीं।

मैंने कई प्रश्न उस आदिवासी बाला से पूछा था, जिसमें एक प्रश्न यह भी था कि, "आप जंगल के बीच से होकर जाती हैं, डर नहीं लगता है?"

उसने कहा था कि, "डर किस बात का, जंगल में तो हमारा गांव, हमारा घर है। हम जरूरत पड़ने पर रात में भी अकेले चले आते हैं!"

मैंने पूछा, "आप शादी कैसे करेंगी, प्रेम की या परिवार के द्वारा?"

वह थोड़ी शरमाई फिर बोली, "शादी में हमारे यहां लड़के वाले आएंगे, बहू के पैर छूने; हमारे यहां बहू के पैर छूना शुभ मानते हैं जी! मां - बापू तो अच्छी जगह शादी करेंगे न जी!"

यहां भंटा भात की रिवाज में बहू को पैसे देकर कहते हैं कि, "आज से तुमको हमने अपने घर की लक्ष्मी बना लिया; अब तुम हमारी बहू होगी!"

यहां के लोग अभी भी अधिकतर शिकार के चक्कर में रहते हैं। मछलियां खाना तो आम बात है!

मेरी यात्रा चरम पर है, अब मैं जल्दी ही यहां से अपने घर - गांव चला जाऊंगा!

आज मैंने उस अल्हड़ जवानी में मदमस्त लड़की से चना का शाग तोड़वाया है। मस्त चना की भाजी खाएंगे!

जीवन है चलता रहेगा, आने वाले आते रहेंगे, जाने वाले जाते रहेंगे यह तो इस प्रकृति का काम है। मेरी अपील है यहां के निवासियों से, पेड़ नहीं काटें; पेड़ों की रक्षा करने से आने वाली पीढ़ी भी स्वस्थ जीवन जी सकेंगी। जल, जंगल, जमीन की रक्षा मनुष्य का सर्वोपरि कर्तव्य होना चाहिए!

मैं नहीं रहूंगा, मेरी इस कान्हा राष्ट्रीय उद्यान से जुड़ी यादें हमेशा रहेंगी। ए जंगल रहेंगे तभी सभी जीव, जीवन रहेगा वरना सबकुछ खत्म हो जाएगा! इन जंगलों के रहने से सदा हमारी संस्कृति, दादी, नानी की कहानियां रहेंगी वरना नहीं रहेंगी!

माँ नर्मदा के दर्शन मात्र से पापों का क्षय

डॉ. बी.आर. नलवाया
मन्दसौर
पूर्वः प्राध्यापक वाणिज्य शास.पी.जी. महावि.

मध्यप्रदेश की जीवनदायिनी माँ मेकलसुता, मकर माघ शुक्ल सप्तमी, अश्विन नक्षत्र, रविवार, मकर राशिगत सूर्य रहते हुए, मध्यान्हकाल में पृथ्वी पर अवतरित हुई । नर्मदा जयंती का पावन पर्व नर्मदा नदी के तटों पर बड़ी संख्या में श्रद्धालु स्नान और परिक्रमा करके मनाते है। नर्मदा नदी में स्नान करने से जीवन में सुख, शांति और समृद्धि मिलती है। इस बार नर्मदा जयंती 4 फरवरी, 2025 को मनाई जा रही है।

नर्मदा नदी मध्यप्रदेश के शहडोल जिले के अमरकंटक पर्वत के गोमुख से उद्गम होकर खंभात की खाड़ी में समा जाती है। जिसकी लम्बाई मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र एवं गुजरात में कुल 1312 कि.मी. है, जो निरंतर प्रवाहित होती रहती है।इस महिमामयी नर्मदा का 1077 कि.मी. का मार्ग मध्यप्रदेश के शहडोल, जबलपुर, डिंडोरी, मंडला, होशंगाबाद, हरदा, खंडवा, खरगोन-बड़वाह, बड़वानी, झाबुआ जिलों की सीमाओं में प्रवाहित होकर महाराष्ट्र में 74 कि.मी. तथा गुजरात में 161 कि.मी. में दोनों राज्यों के कई जिलों, नगरों, कस्बों, ग्रामों, पौराणिक आश्रमों, तीर्थों, मंदिरों, ऐतिहासिक एवं पर्यटन स्थलों तथा वनकुंजों में कलकल बहती, इसके साथ ही भेड़ाघाट के धवल धुआंधार झरनों के मनमोहक दृश्यावलियों के साथ सहस्त्रधारा का मन-लुभावना दृश्य भी भक्तों, सेवकों एवं श्रद्धालुओं को आशीर्वाद प्रदान करती है, उन्हें कल्याण मार्ग की ओर ले जाती है।

नर्मदा सर्व स्थानों में पुण्यवतीतथा पूजनीय है। यह सर्वविदित है कि सरस्वती का जल 3 दिन में, यमुना का जल 7 दिन में तथा गंगा स्नान मात्र से जीव को पवित्र करती है., परन्तु नर्मदा का जलदर्शन मात्र से सर्वपापों का नाश करता है। नर्मदा के अनेकानेक नाम है। शिवजी की जटाओं में वास होने से जटाशंकरी अति चंचल एवं वेगवती होने से रेवा, मार्कण्डेय ऋषि ने प्रलयकाल में भी इसका अस्तित्व देखा, अतः न मरने वाली होने से नर्मदा और मेकल पर्वत उद्गम स्थल होने से यह मेकलसुता कहलाती है। नर्मदा की गिनती देश की 5 बड़ी एवं 7 पवित्र नदियों में होती है। गंगा, यमुना, सरस्वती एवं नर्मदा को ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद एवं अर्थववेद के सदृश्य समझा जाता है। महर्षि मार्कण्डेय के अनुसार, नर्मदा के दोनों तटों पर 60 लाख 8 हजार तीर्थ बताए। शास्त्र मान्यता है कि नर्मदा का जल ही ब्रह्म है, यही हरि है तथा यह जल ही साक्षात हर है। नदी के जल में पावन सी मृदुलता, धवलता एवं शीतलता और अन्य किसी भी

नदी में देखने को नहीं मिलेगी। इसके जल के सभी पाषाण शिव के समान पूजा के योग्य होते हैं। यहा कहा गया है कि- नर्मदा के जितने कंकर, उतने सब शंकर है ओंकारेश्वर से 20 कि.मी. दूर धावड़ी कुंड नामक ऐसा स्थान है. जहां कुंड में गिरा हर पत्थर शिवलिंग बनकर ही बाहर आता है। यहां से निकले शिवलिंग नर्मदेश्वर के रूप में सारे संसार में पूजे जाते हैं। नर्मदा के शिवलिंग को पूजने हेतु प्राण प्रतिष्ठा की आवश्यकता नहीं होती।

नर्मदा की उत्पत्ति की अनेक कहानियां पुराणों में पाई गई, परन्तु कहानियों में एकरूपता नहीं है। देवताओं ने भगवान विष्णु से निवेदन किया हे देव ! हम सब कभी-कभी धर्म विरूद्ध और अनुचित कर्मों में लिप्त हो जाते हैं। दुष्ट प्रवृत्ति के लोगों का वध करना पड़ता है, हिंसा होती है। अतः प्रायश्चित व पापों से मुक्ति का उपाय बताएं। विष्णु मेकल पर्वत पर विराजित शंकरजी के पास गए। भगवान शिव की स्तुति कर अपनी बातें उनके समक्ष रखी। भोले शंकरजी द्रवित हो गए, फलस्वरूप उनके मस्तिष्क से एक बूंद पृथ्वी पर गिरी। उस अमृतबूंद का पृथ्वी गिरते ही एक रूपवती कन्या का जन्म हुआ। सुन्दर देह पर, शुभ्र वस्त्र धारण किए, उत्तम कांतिवाली, कमलनयनी, अतिसुंदर-मुख मंडल वाली कन्या के तेजपुंज के समक्ष सभी देवता नतमस्तक हो गए। कन्या ने शंकरजी की स्तुति करके पूछा- हे आदिदेव ! आप मेरे पूज्य पिता है, मुझे आज्ञा दे। मुझे क्या करना चाहिए, जिससे जगत् का कल्याण हो? तब शिवजी ने आज्ञा दी तुम जलरूप धारण करके भारत की पुण्यभूमि में विचरण करो। तुम जगत में पाप-ताप का हरण करने वाली होगी। तुम में जो स्नान करेंगे, वे मोक्ष के अधिकारी होंगे, तुम्हारे दर्शन मात्र से पापों की मुक्ति मिलेगी।

नर्मदा नदी पूर्व दिशा से प्रकट होकर पश्चित की ओर प्रवाहित हुई है। परिक्रमा करने वाले उन्हें सदैव दाहिनी ओर रखकर चलते हैं। पृथ्वी की परिक्रमा को छोड़कर देवस्थानों की, तीर्थों की परिक्रमाओं से नर्मदाजी की परिक्रमा सबसे बड़ी है।

नर्मदाजी की और मेकल पर्वत उद्गम स्थल होने से यह मेकलसुता कहलाती है। नर्मदा की गिनती देश की 5 बड़ी एवं 7 पवित्र नदियों में होती है। गंगा, यमुना, सरस्वती एवं नर्मदा को ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद एवं अर्थववेद के सदृश्य समझा जाता है। महर्षि मार्कण्डेय के अनुसार, नर्मदा के दोनों तटों पर 60 लाख 8 हजार तीर्थ बताए। शास्त्र मान्यता है कि नर्मदा का जल ही ब्रह्म है, यही हरि है तथा यह जल ही साक्षात हर है। नदी के जल में पावन सी मृदुलता, धवलता एवं शीतलता और अन्य किसी भी नदी में देखने को नहीं मिलेगी। इसके जल के सभी पाषाण शिव के समान पूजा के योग्य होते हैं। यहा कहा गया है कि- नर्मदा के जितने कंकर, उतने सब शंकर है। ओंकारेश्वर से 20 कि.मी. दूर धावड़ी कुंड नामक ऐसा स्थान है। जहां कुंड में गिरा हर पत्थर शिवलिंग बनकर ही बाहर आता है। यहां से निकले शिवलिंग नर्मदेश्वर के रूप में सारे संसार में पूजे जाते हैं। नर्मदा के शिवलिंग को पूजने हेतु प्राण प्रतिष्ठा की आवश्यकता नहीं होती।

नर्मदा की उत्पत्ति की अनेक कहानियां पुराणों में पाई गई, परन्तु कहानियों में एकरूपता नहीं है। देवताओं ने भगवान विष्णु से निवेदन किया हे देव ! हम सब कभी-कभी धर्म विरूद्ध और अनुचित कर्मों में लिप्त हो जाते हैं। दुष्ट प्रवृत्ति के लोगों का वध करना पड़ता है, हिंसा होती है। अतः प्रायश्चित व पापों से मुक्ति का उपाय बताएं। विष्णु मेकल पर्वत पर विराजित शंकरजी के पास गए। भगवान शिव की स्तुति कर अपनी बातें उनके समक्ष रखी। भोले शंकरजी द्रवित हो गए, फलस्वरूप उनके मस्तिष्क से एक बूंद पृथ्वी पर गिरी। उस अमृतबूंद का पृथ्वी गिरते ही एक रूपवती कन्या का जन्म हुआ। सुन्दर देह पर, शुभ्र वस्त्र धारण किए, उत्तम कांतिवाली, कमलनयनी, अतिसुंदर-मुख मंडल वाली कन्या के तेजपुंज के समक्ष सभी देवता नतमस्तक हो गए। कन्या ने शंकरजी की स्तुति करके पूछा- हे आदिदेव ! आप मेरे पूज्य पिता है, मुझे आज्ञा दे। मुझे क्या करना चाहिए, जिससे जगत् का कल्याण हो? तब शिवजी ने आज्ञा दी तुम जलरूप धारण करके भारत की पुण्यभूमि में विचरण करो। तुम जगत में पाप-ताप का हरण करने वाली होगी। तुम में जो स्नान करेंगे, वे मोक्ष के अधिकारी होंगे, तुम्हारे दर्शन मात्र से पापों की मुक्ति मिलेगी।

नर्मदा नदी पूर्व दिशा से प्रकट होकर पश्चित की ओर प्रवाहित हुई है। परिक्रमा करने वाले उन्हें सदैव दाहिनी ओर रखकर चलते हैं। पृथ्वी की परिक्रमा को छोड़कर देवस्थानों की, तीर्थों की परिक्रमाओं से नर्मदाजी की परिक्रमा सबसे बड़ी है।

नर्मदाजी की और मेकल पर्वत उद्गम स्थल होने से यह मेकलसुता कहलाती है। नर्मदा की गिनती देश की 5 बड़ी एवं 7 पवित्र नदियों में होती है। गंगा, यमुना, सरस्वती एवं नर्मदा को ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद एवं अर्थववेद के सदृश्य समझा जाता है। महर्षि मार्कण्डेय के अनुसार, नर्मदा के दोनों तटों पर 60 लाख 8 हजार तीर्थ बताए। शास्त्र मान्यता है कि नर्मदा का जल ही ब्रह्म है, यही हरि है तथा यह जल ही साक्षात हर है। नदी के जल में पावन सी मृदुलता, धवलता एवं शीतलताऔर अन्य किसी भी नदी में देखने को नहीं मिलेगी। इसके जल के सभी पाषाण शिव के समान पूजा के योग्य होते हैं। यहा कहा गया है कि- नर्मदा के जितने कंकर, उतने सब शंकर है। ओंकारेश्वर से 20 कि.मी. दूर धावड़ी कुंड नामक ऐसा स्थान है. जहां कुंड में गिरा हर पत्थर शिवलिंग बनकर ही बाहर आता है। यहां से निकले शिवलिंग नर्मदेश्वर के रूप में सारे संसार में पूजे जाते हैं। नर्मदा के शिवलिंग को पूजने हेतु प्राण प्रतिष्ठा की आवश्यकता नहीं होती।

नर्मदा की उत्पत्ति की अनेक कहानियां पुराणों में पाई गई, परन्तु कहानियों में एकरूपता

नहीं है। देवताओं ने भगवान विष्णु से निवेदन किया हे देव! हम सब कभी-कभी धर्म विरूद्ध और अनुचित कर्मों में लिप्त हो जाते हैं। दुष्ट प्रवृत्ति के लोगों का वध करना पड़ता है, हिंसा होती है। अतः प्रायश्चित व पापों से मुक्ति का उपाय बताएं। विष्णु मेकल पर्वत पर विराजित शंकरजी के पास गए। भगवान शिव की स्तुति कर अपनी बातें उनके समक्ष रखी। भोले शंकरजी द्रवित हो गए, फलस्वरूप उनके मस्तिष्क से एक बूंद पृथ्वी पर गिरी। उस अमृतबूंद का पृथ्वी गिरते ही एक रूपवती कन्या का जन्म हुआ। सुन्दर देह पर, शुभ्र वस्त्र धारण किए, उत्तम कांतिवाली, कमलनयनी, अतिसुंदर-मुख मंडल वाली कन्या के तेजपुंज के समक्ष सभी देवता नतमस्तक हो गए। कन्या ने शंकरजी की स्तुति करके पूछा- हे आदिदेव! आप मेरे पूज्य पिता है, मुझे आज्ञा दे। मुझे क्या करना चाहिए, जिससे जगत् का कल्याण हो? तब शिवजी ने आज्ञा दी तुम जलरूप धारण करके भारत की पुण्यभूमि में विचरण करो। तुम जगत में पाप-ताप का हरण करने वाली होगी। तुम में जो स्नान करेंगे, वे मोक्ष के अधिकारी होंगे, तुम्हारे दर्शन मात्र से पापों की मुक्ति मिलेगी।

नर्मदा नदी पूर्व दिशा से प्रकट होकर पश्चित की ओर प्रवाहित हुई है। परिक्रमा करने वाले उन्हें सदैव दाहिनी ओर रखकर चलते हैं। पृथ्वी की परिक्रमा को छोड़कर देवस्थानों की, तीर्थों की परिक्रमाओं से नर्मदाजी की परिक्रमा सबसे बड़ी है।

नर्मदाजी कीपरिक्रमा 1780 मील लंबी है। इसे 03 वर्ष, 03 माह और 13 दिनों में पूर्ण करने का प्रावधान है। यह परिक्रमा छोटे-छोटे हिस्सों में भी की जा सकती है, ऐसा धार्मिक विधान है। नर्मदाजी के तटों पर महर्षि मार्कण्डेय, अगस्त्य, महर्षि कपि एवं कई ऋषि-मुनियों ने तपस्या की। शंकराचार्यों ने भी इसकी महिमा का गुणगान किया।

नर्मदा के तट पर ओंकारेश्वर में कार्तिक मेला एवं शिवरात्रि पर एक भव्य मेले के आयोजन में हजारों श्रद्धालुओं का आवागमन होता है। नर्मदा नदी के तट पर स्थित ओंकारेश्वर तीर्थ, ममलेश्वर ज्योतिर्लिंग (मान्धाता) भारत के बारह ज्योतिर्लिंगों में आज भी अपनी ध्वजा को फहरा रहा है।

पतित पावनी देवी नदी नर्मदा अपनी अनेक विशिष्टताओं के कारण पृथ्वी लोक पर अनुपम है। विश्व में एक मात्र ऐसी नदी है. जिसकी प्रदक्षिणा की जाती है। जीवन में किए गए पाप जन्मांतरों में भी हुए पाप सभी प्रदक्षिणा करते हुए व्यक्ति के पग-पग पर वे विनष्ट हो. ऐसी भावना की जाती है। पापों की निवृत्ति ही प्रदक्षिणा का उद्देश्य है। प्राणी पापकर्म के परिणामस्वरूप दुःख भोगते हैं और दुःखों की निवृत्ति सबसे अमीष्ट है। पुण्य के प्रताप से ही सुख प्राप्त होता है। पुण्य-पवित्र अदृष्ट फल माना जाता है। अतः अतःकरण की शुद्धि या मन का पवित्र हो जाना इस उपासनारूप प्रदक्षिणा का चरम लक्ष्य है, जिसे साधक श्रद्धा सहित अंगीकार करता है।

इस नदी की पुण्य सलिला, जीवनदायिनी, मोक्षदायिनी, प्राणदायिनीता, वरदायिनीता के साथ धार्मिकता, आध्यात्मिकता, पारलौकिकता और प्रदक्षिणा से जीवन का कल्याण हो जाता है। वही जीवनपालन शांति, समृद्धि, आनन्द, पराक्रम, निर्मलता तथा उद्यम के उपहार प्रदान करने वाली माँ नर्मदा ही है।

आज नर्मदा जयंती के इस पावन पर्व पर हम संकल्प करें कि हमारी आस्था की प्रतीक पुण्यदायिनी एवं पापहारिणी माँ नर्मदा को अपने स्वार्थवश और अज्ञानतावश प्रदूषण का शिकार नहीं होने देंगे और कभी भी इसे मैली नहीं होने देंगे।

ग्लोबल वार्मिंग और आज का वातावरण

संजय
लखनऊ, उत्तर प्रदेश

ग्लोबल वार्मिंग, जिसे 'वैश्विक तापन' भी कहा जाता है, आज हमारे पर्यावरण के लिए एक गंभीर चुनौती बन चुका है। यह समस्या मुख्य रूप से मानव गतिविधियों के कारण उत्पन्न हुई है, जिसमें मुख्य रूप से औद्योगिकीकरण, कृषि, वनस्पति क्षेत्रों की कटाई और जीवाश्म ईंधन का अत्यधिक उपयोग शामिल है।

ग्लोबल वार्मिंग के कारण: ग्लोबल वार्मिंग का मुख्य कारण 'ग्रीनहाउस गैसों' का उत्सर्जन है। जब इन गैसों का स्तर बढ़ता है, तो ये सूर्य की गर्मी को पृथ्वी की सतह पर रोकने का काम करती हैं, जिसके परिणामस्वरूप पृथ्वी का तापमान बढ़ता है। ग्रीनहाउस गैसों में प्रमुख रूप से कार्बन डाइऑक्साइड (CO_2), मीथेन (CH_4), नाइट्रस ऑक्साइड (N_2O) और जल वाष्प शामिल हैं। ये गैसें मुख्य रूप से मानव गतिविधियों जैसे वाहन, उद्योग, कृषि और वन कटाई के कारण वातावरण में प्रवेश करती हैं।

ग्लोबल वार्मिंग के प्रभाव:

वातावरणीय परिवर्तन:

ग्लोबल वार्मिंग के कारण मौसम में अत्यधिक परिवर्तन हो रहे हैं। अत्यधिक गर्मी, सूखा, और वर्षा की अनियमितता इन बदलावों के उदाहरण हैं। इसके कारण कई क्षेत्रों में सूखा, बाढ़ और अन्य प्राकृतिक आपदाएँ उत्पन्न हो रही हैं।

ध्रुवीय बर्फ का पिघलना: पृथ्वी के ध्रुवों पर बर्फ तेजी से पिघल रही है, जिससे समुद्र का स्तर बढ़ रहा है। यह समुद्र तटीय क्षेत्रों में बाढ़ और भूमि की कमी का कारण बन रहा है। यह परिवर्तन समुद्र में रहने वाले जीवों के लिए भी खतरनाक साबित हो रहा है।

वन्यजीवों और पारिस्थितिकी तंत्र पर प्रभाव: ग्लोबल वार्मिंग के कारण जंगलों का स्वरूप बदल रहा है और बहुत से वन्यजीवों की प्रजातियाँ खतरे में हैं। बढ़ती गर्मी और प्राकृतिक संसाधनों की कमी से जीवों के अस्तित्व पर संकट मंडरा रहा है।

मानव स्वास्थ्य पर प्रभाव: ग्लोबल वार्मिंग के कारण कई तरह की स्वास्थ्य समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं, जैसे अत्यधिक गर्मी से गर्मी का स्ट्रोक, जलजनित रोगों में वृद्धि, और श्वसन समस्याएँ। उच्च तापमान और वायु प्रदूषण के कारण अस्थमा और अन्य श्वसन संबंधी रोगों में बढ़ोतरी हो रही है।

वर्तमान वातावरण का चित्र: आज के वातावरण में ग्लोबल वार्मिंग के प्रभाव स्पष्ट रूप से महसूस किए जा सकते हैं। गर्मी की लहरें, बर्फबारी का घटित होना, समुद्रों के बढ़ते स्तर के साथ-साथ मौसम की अनिश्चितता सभी हमारे पर्यावरण को प्रभावित कर रही हैं। अधिकतर स्थानों पर प्रदूषण का स्तर बहुत बढ़ चुका है, जो वायुमंडल को अधिक गर्म कर रहा है। इसके अलावा, वनस्पति और जल संसाधनों की कमी, जलवायु परिवर्तन के कारण प्रजातियों का विलुप्त होना, और प्राकृतिक आपदाएँ बढ़ने लगी हैं।

हमारी जिम्मेदारी: ग्लोबल वार्मिंग से निपटने के लिए हर किसी को जिम्मेदारी उठानी होगी। हमें अपनी दैनिक आदतों को बदलने, ऊर्जा की खपत को कम करने, और स्वच्छ ऊर्जा स्त्रोतों का उपयोग बढ़ाने की आवश्यकता है। इसके अलावा, वृक्षारोपण, कचरा प्रबंधन, और जलवायु अनुकूल नीतियों को लागू करना भी आवश्यक है। वैश्विक स्तर पर पर्यावरणीय समझ बढ़ाने और सहकारी प्रयासों को बढ़ावा देना होगा।

निष्कर्ष: ग्लोबल वार्मिंग एक गंभीर समस्या है, जिसका समाधान केवल सामूहिक प्रयासों से ही संभव है। यदि हम अब भी जागरूक नहीं हुए तो भविष्य में इसके खतरनाक परिणामों का सामना करना पड़ सकता है। हमें अपनी पृथ्वी को बचाने के लिए कदम उठाने होंगे, ताकि आने वाली पीढ़ियाँ एक स्वस्थ और सुरक्षित पर्यावरण में जीवन बिता सकें।

कैंची धाम : सकारात्मक ऊर्जा का केंद्र

शुभम पांडेय गगन
अयोध्या, उत्तर प्रदेश

हिंदू धर्म में ऐसा माना जाता है की कलयुग में कुछ देवता ऐसे हैं जो अभी धरती पर विद्यमान हैं और उन देवताओं में श्री हनुमान जी को सबसे प्रबल और अष्ट सिद्धियों का दाता माना जाता है। विगत कुछ वर्षों में श्री हनुमान जी के अवतार माने जाने वाले बाबा श्री नीम करोली जी की महिमा सुविख्यात हुई है। कैंची धाम के नाम से मशहूर यह मंदिर आज हर किसी की जुबां पर छाया है तभी तो देश ही नहीं अपितु विदेश से लोग यहां बाबा के दर्शन हेतु आते रहते हैं।

जब इंसान निराशा और असफलता के अंधकार में खोता जाता है तो वह अध्यात्म की तरफ मुड़ता और यह आस्था समझो या फिर कृपा या शायद मन की बात उसे सफलता प्राप्त भी होती है। एप्पल जैसी बड़ी कंपनी के मालिक हो या दुनिया में सबसे ज्यादा प्रयोग किए जाने वाले सोशल एप फेसबुक और इंस्टाग्राम के निर्माता मालिक जुकरबर्ग या भारत के पूर्व कप्तान और इस दशक के सबसे बड़े बल्लेबाज विराट कोहली जब जब ये सब असफल हुए या असमंजस में हुए इन्होंने भी अध्यात्म अपनाया और बाबा कैंची धाम की यात्रा की। ये सब युवाओं में लोकप्रिय और शायद आज कल युवा सबसे ज्यादा कैंची धाम की यात्रा पर आ रहा।

स्थिति: देवभूमि कहे जाने वाले उत्तराखंड की महिमा का बखान भला कैसे किया जा सकता है? एक तरफ कुमायूं तो दूसरी तरफ शिवालिक श्रेणियों से घिरा ,हिमालय की गोद में बसा यह राज्य अपनी सुन्दरता,पवित्रता के लिए सैलनियाओं का पसंदीदा रहा है।

नैनीताल की सुंदर झील और नयना देवी के आशीर्वाद से बना यह नैनीताल अब कैंची धाम की महत्ता के लिए भी प्रसिद्ध हो गया है।

कैंची धाम उत्तराखंड के नैनीताल शहर में पड़ता।

कैसे पहुंचें : कैंची धाम आने के मुख्यतः 3 तरीके हैं जिसमे सबसे प्रमुख सड़क और रेलवे मार्ग है जिसके बारे में आपसे बताना चाहूंगा।

रेलवे से आने के लिए आपको देश के भिन्न भिन्न शहरों से काठगोदाम या हल्द्वानी तक की ट्रेन आपको मिल जायेगी।

कैंची धाम का निकटम रेलवे स्टेशन

काठगोदाम है। जहां से आप बस या टैक्सी आसानी से लेकर 38km दूर कैंची धाम आ सकते हैं।

हल्द्वानी उतर कर भी आप रोडवेज से 110 रुपए और टैक्सी से 150 देकर आसानी से मंदिर तक पहुंच सकते हैं।

सड़क मार्ग से आने के लिए आपको बाबा के धाम तक बढ़िया सड़क मिल जायेगी। देश की राजधानी दिल्ली से समय समय पर बस, एसी बस की सुविधा उपलब्ध है जो आपको नैनीताल,काठगोदाम,हल्द्वानी आदि छोड़ देगें।

कैंची धाम से नैनीताल 70km है जो आप टैक्सी या बस से जा सकते हैं। काठगोदाम से आप स्कूटी या बाइक रेंट करके भी जा सकते जो 500 से 1000 में एक दिन हेतु मिलती है।

स्टे सुविधा : बाबा कैंची धाम/ नीम करोली धाम में आपको सुंदर और उचित दाम में होम स्टे और होटल ठहरने हेतु मिल जायेंगे जिनका औसतन एक दिन का किराया 1000 से 1500 हो सकता।

यहां कई अच्छे होम स्टे और होटल हैं जो इससे ऊपर महंगे हो सकते हैं।

मगर आप चाहें तो इससे सस्ते में काठगोदाम और हल्द्वानी में रुकें जिससे आप अन्य जगह भी घूम पाएंगे और आप सस्ते में कमरा भी प्राप्त कर पाएंगे। हल्द्वानी में 600 से 800 और काठगोदाम में 800 तक आपको अच्छे कमरे रहने हेतु मिल जायेंगे। आपकी वापसी काठगोदाम से होगी इसीलिए उचित रहेगा आप वहीं रुकें और आसानी से दर्शन प्राप्त करें। होटल की बुकिंग ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों होती है।

दर्शन : कैंची धाम उत्तराखंड की खूबसूरत भूमि में है जो पहाड़ों से घिरा हुआ है। इसकी सुंदरता देखते ही बनती है। गर्मियों में यहां भारी भीड़ होती चूंकि लोग नैनीताल घूमने आते इसीलिए ज्यादातर श्रद्धालु इसी समय आते। बस या टैक्सी आपको सीधे मंदिर के सामने ही उतार देते जहां से आप आसानी से मंदिर में प्रवेश कर बाबा के दर्शन प्राप्त कर सकते हैं।

मंदिर प्रांगण के बाहर और अंदर जूते चप्पल निकालने की सुविधा उपलब्ध है। मंदिर के बाहर कई दुकानें हैं जहां आप हनुमान जी महराज को चढ़ाने हेतु लड्डू और अन्य सामान ले सकते हैं।

बाबा नीम करोली महराज को कंबल दान करने की परंपरा है जिससे जुड़ी कहानी प्रचलित है की एक गरीब व्यक्ति जिसका बेटा युद्ध पर गया था जो काफी दिन से घर नहीं आया था। एक दिन बाबा नीम करोली उसके घर गए और बोले आज मैं आपके घर निवास करूंगा जिससे वो गरीब दंपति बहुत खुश रहा। अचानक रात को बाबा जहां सोए थे ,उन्होंने कंबल में अपने आप को ढका हुआ था और तेजी से हिल रहे थे तथा चिल्लाने और गोली चलने की आवाज आ रही थी। दंपति घबरा गए लेकिन कुछ बोले नहीं। सुबह बाबा ने कहा यह कंबल ले जाकर नदी में प्रवाहित कर दो और खोल कर मत देखना। वह कंबल बहुत भारी हो गया था जिसे दंपति ने प्रवाहित कर दिया। कुछ दिन बाद उनका बेटा वापस युद्ध से जब घर आया तो उसने बताया एक रात उसे युद्ध में दुश्मनों ने घेर लिया और अंधाधुंध गोली चलाई मगर वह भगवान की कृपा से बच गया। वह वही दिन था जिस दिन नीम करोली बाबा दंपती के घर आए थे। दंपति को तनिक देर न लगी वह समझ गए वह सारी गोली बाबा ने खुद पर ले ली और उनके बेटे की जान बचाई।

तब से सभी भक्त बाबा को अपना कष्ट सौंपते और कंबल चढ़ाते। मंदिर के बाहर कई दुकानों पर आपको कंबल मिल जायेंगे। चूंकि यह जगह पहाड़ी पर है अतः यह बाकी जगहों से महंगी है। यहां सारे सामान आपको महंगे ही मिलेंगे।

खान पान : मंदिर के बाहर कई छोटे बड़े खाने के स्थान,रेस्टोरेंट मिल जायेंगे जहां आप उचित धाम में खाना पीना खा सकते। इसके अलावा यहां हर जगह चाय की टपरी, मैगी आदि बनाने वाले मिल जायेंगे। बाबा के मंदिर में उबाला चना भी प्रसाद रूप में प्राप्त होता है।

पूजा पाठः चूंकि यह श्री हनुमान जी महराज का मंदिर इसीलिए यहां विशेषकर लोग लड्डू का भोग लगाते। यहां मंदिर में अपने अनुसार लोग 5,11,21,51 आदि हनुमान चालीसा का पाठ करते जो काफ़ी लोगों द्वारा महत्वपूर्ण कहा जाता।

प्रायः आपको भक्त सीढ़ियों पर,प्रांगण में खड़े बैठे हनुमान चालीसा और सुंदरकांड का पाठ करते हुए मिल जायेंगे।

अन्य घूमने की जगह :- कैंची धाम के बाद आप यहां से 70km दूर नैनीताल जाना बिलकुल न भूले। नैनी झील की सुंदरता और नौका विहार जग प्रसिद्ध है। दो तरफ से पहाड़ों से घिरी यह झील अपनी सुंदरता के लिए जानी जाती है।

झील का बड़ा चक्कर लगाने का 420 रुपए और छोटा चक्कर लगाने का 360 रुपए लिया जाता। जहां कई कैमरामैन भी मिलेंगे जो 100 से 150 रुपए आपकी सुंदर तस्वीर निकाल कर प्रिंट करके देते।

नैनीताल जोड़ो यानी कपल के घूमने के लिए अति प्रसिद्ध है। पहाड़ी और ठंडे मौसम की वजह से यहां प्रायः भीड़ रहती है। यह एक महत्वपूर्ण हिल स्टेशन है।

झील से महज 1 km पैदल दूरी पर नयना देवी मंदिर और नैनीताल चिड़िया घर भी जरूर घूमें। मॉल रोड और राजभवन भी यहां के आकर्षण केंद्र है।

यहां आप सुंदर ठंडी हवाओं के बीच फोटोग्राफी का आनंद ले सकते है।

काठगोदाम से आप आसानी से बाइक भी रेंट पर लेकर घूम सकते जिसका किराया एक दिन का 500 से 1000 पड़ता है। जिसमे पेट्रोल आपको खुद डलवाना पड़ता। बाइक की बुकिंग हेतु आपके पास ड्राइविंग लाइसेंस का होना अनिवार्य है।

नैनीताल से 70km दूर आप मुक्तेश्वर भी जा सकते जो अपनी बर्फ से ढंकी पहाड़ियों और सूर्योदय के लिए प्रसिद्ध है।

सब यहीं पड़ा रह जाएगा

मत दौड़ व्यर्थ मदहोशी में, मत इतरा यौवन को सँवार,
मत उलझ व्यर्थ के रिश्तों में,मत अकड़ पहनकर स्वर्ण हार,
ये हीरे,मोती स्वर्ण कोश, लख कोटि असंख्य कारोबार,
ये कोट, झरोखे, सिंहद्वार, दें मान खड़े नतशीश कार,
घर द्वार खड़ा रह जाएगा, तू चाह ठहर ना पाएगा,
सब यहीं पड़ा रह जाएगा जब अंत बुलावा आएगा।

माना तू वैभवशाली है, चहुँ-ओर तुम्हारा डंका है,
नस-नस में लावा बहता है, सचमुच में तू रणबंका है,
है पता तुम्हारे वैभव का, सोने की तेरी लंका है,
लख-कोटि भुजाएँ संग खड़ी, कहने में जरा न शंका है,
पर तिनका तक ना संग चले, सब ठाठ धरा रह जाएगा,
सब यहीं पड़ा रह जाएगा, जब अंत बुलावा आएगा।

खा दाख,मुनक्का बल भरता, केसर पिस्ते का भोग लगा,
पीता है स्वर्णसुराही में, जाने क्या तुझको रोग लगा,
कुछ पल को साथ रहेंगे ये, तज देंगे अंत वियोग लगा
सच भूल रहा सच जान अरे, मत स्वर्ण चाट अब जोग लगा,
परहित परमार्थ जिएगा तो, तू याद युगों तक आएगा,
सब यहीं पड़ा रह जाएगा, जब अंत बुलावा आएगा।

पद मान प्रतिष्ठा वैभव पा, निश-दिन ख्वाबों में पलता है,
तू सजा स्वर्ण का सिंहासन, भुज ठोक स्वयं को छलता है,
चहुँ-ओर कुसुम के ढेर लगा, यौवन पी मस्त पिघलता है,
नाती पोते रिश्तें नाते कर याद बज्र सा ढलता है,
मत भूल न कोई साथ चले, तू लौट अकेला जाएगा,
सब यहीं पड़ा रह जाएगा, जब अंत बुलावा आएगा।

हेमराज सिंह 'हेम'
कोटा, राजस्थान

हवा, पानी, धूप चाहिए

हवा,पानी , धूप चाहिए
बीज को अंकुरण के लिए
हवा , पानी, धूप चाहिए।

जब ये तीनों चीजें
उसे पर्याप्त मात्रा में मिलती हैं
तब वसुधा की कोख से
आशा की कली खिलती है
धीरे-धीरे वह
अपने आस-पास के
वातावरण को,अपने में
समाहित कर
पल्लवित,पुष्पित होता है
वृक्ष बन जाता है।

वृक्ष बनकर फल ही नहीं देता
अपितु हमें ऑक्सीजन देकर
नवजीवन प्रदान करता है
वैसे ही हैं ये हमारे
नवांकर शिशु
इन्हें भी, हवा , पानी , धूप चाहिए।

स्वस्थ परिवेश चाहिए
आस-पास का स्वच्छ वातावरण
इनके दिलों को
स्पंदित ही नहीं करेगा
नवीन चेतना भरेगा
सृजन भी करेगा।

हमें इन्हें संस्कार देने होंगे।
इनके अंदर सद् गुणों का
विकास करना होगा
स्फूर्ति प्रदान कर
कर्मठ, लगनशील
ईमानदार बनाने के साथ -साथ
देशभक्त बनाना होगा।

हमें हमारे देश को ये
नया गौरव प्रदान करेंगे
और हमारी भारतीय संस्कृति को
अक्षुण्ण बनाए रखने में
अपना सर्वस्व न्योछावर कर देंगे !
तभी हमारे देश का
नव निर्माण होगा
विश्व में भारत का सम्मान होगा ।

चक्रधर शुक्ल
कानपुर

गणतंत्र दिवस है न्यारा...!

आओ फिर लहरायें तिरंगा प्यारा,
अपना ये गणतंत्र दिवस है न्यारा।
छहत्तरवॉ 'गणतंत्र' खुशी मनाये,
उन शहीदों पर श्रद्धा सुमन चढ़ायें।
1950 को अपना गणतंत्र लागू हुआ,
पहले राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद!
झंडा फहराया और दे दी सौगात।

आओ फिर लहरायें तिरंगा प्यारा,
अपना ये गणतंत्र दिवस है न्यारा।
ये वहीं ऐतिहासिक था पल हमारा,
जिससे गौरवान्वित था भारत सारा।
ये विश्व का हैं सबसे बड़ा संविधान,
आज भारत में हैं लोकतंत्र ही महान!
देश में होते रहते है कई अनुसंधान।

आओ फिर लहरायें तिरंगा प्यारा,
अपना ये गणतंत्र दिवस है न्यारा।
समरसता, विश्वशांति की ये धरा,
प्रगतिपथ व मानवता पर है खरा।
तन, मन, धन हुआ है सब पावन,
आओं करें सभी शहीदों को नमन।

संजय एम. तराणेकर
(मध्यप्रदेश)

ऋतु वसंत

अहा! कितना सुंदर लगता ऋतु वसंत।
चहुँ ओर शोभा देख होता दुःख का अंत॥

सेमर के पेड़ों में लद गए लाल फूल।
पलाश के पेड़ों में फूल गए मोहक फूल॥
अमराई में बौर लगे महका दिक दिगंत॥

साल वन दिशाओं में सौरभ फैला रहा।
महुआ की मादकता जीव जंतु लुभा रहा॥
नीम चमकदार दिखा रहा जैसे कलाकार॥

अमरइया में मगन गीत गा रही कोयलिया।
जैसे मधुबन में किशन बजा रही मुरलिया॥
तोता मैना वसंत शोभा गान करे अनंता॥

कुसुम के पेड़ों में आ गए लाल-लाल पात।
बट पीपल के पेड़ लगे सुंदर हरियात॥
सदाराम फाग राग छेड़ रही आनंदा॥

सदाराम सिन्हा स्नेही

ग़ज़लें

1
झूठी आस लिये हरदम।
निकले दूर सफ़र पर हम।
जतलाता है चहरा नम,
बाहर खुशियाँ, भीतर ग़म।
चाहत की पहचान यही,
जितनी ज़्यादा उतनी कम।
सबका है अपना - अपना,
दुनियाँ में दिल का आलम।
आँसू जैसी लगती है,
फूलों पर ठहरी शबनम।
है सच्चाई जीवन की,
दीपक के नीचे का तम।

2
वाह के साथ वाह कर लेता।
तो सभी से निबाह कर लेता।
देखता जब उसे कहीं छुपकर,
ख़ूबसूरत गुनाह कर लेता।
पास चलता जहाँ-जहाँ उसके,
साथ कुछ और राह कर लेता।
देख सब दूर के नज़ारों को,
तेज़ अपनी निग़ाह कर लेता।
काम आसान आज़ हो जाता,
जो किसी से सलाह कर लेता

3
कहने से करना बेहतर।
रखना इसको अपनाकर।
जितने बीत गए पहले,
फिर से आयेंगे अवसर।
मुश्क़िल जो भी दाँव यहाँ,
लड़ना है अपने दम पर।
होगा दूर सफ़र जिसका,
ठहरेगा कैसे पल भर।
उड़ना है पर फैलाकर,
जिनको छूना है अम्बर।
उतना बाहर निकलोगे,
जितना उतरोगे अन्दर।

नवीन माथुर पंचोली

गुणकारी पीपल

प्रकृतिमेल डेस्क

पीपल (Ficus religiosa) को एक श्राप देने वाले, भूतों और प्रेतो को आश्रय देने वाला मानते है। पूजा के अलावा पीपल की अन्य महत्ता भी है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से पीपल हमारे पर्यावरण में एक अहम भूमिका निभाता है। यह उन कुछ वृक्षों में से होते है जो कि प्रदुषण को कम करता है।

प्राणदयी ऑक्सीजन का उत्सर्जन करने में अव्वल है। जो हम सब नहीं जानते वह है पीपल के औषधीय गुण। पीपल में रोगनिवरक गुणो की बात करते हैं। औषधीय गुणो से भरपूर और पर्यावरण के अनुकूल इस वृक्ष से हमें डरने की जरूरत नही है।

यह पेड़ आयुर्वेद में महत्वपूर्ण स्थान रखता है और इसके विभिन्न हिस्सों का उपयोग कई रोगों के इलाज में किया जाता है। कुछ प्रमुख औषधीय गुण इस प्रकार हैं:

पाचन तंत्र के लिए फायदेमंद:

पीपल के पत्ते और छाल को पाचन तंत्र को सुधारने के लिए प्रयोग किया जाता है। यह पेट की समस्याओं जैसे गैस, कब्ज और अपच को दूर करने में मदद करता है।

स्वस्थ त्वचा:

पीपल की छाल और पत्ते के अर्क का इस्तेमाल त्वचा के रोगों जैसे एक्जिमा, जलन, और दाग-धब्बों को ठीक करने में किया जाता है। यह त्वचा की मरम्मत और निखार में भी मदद करता है।

दमा और श्वसन समस्याएँ:

पीपल की छाल का सेवन श्वसन तंत्र को मजबूत करने के लिए किया जाता है। यह दमा, खांसी और अस्थमा जैसी श्वसन संबंधी समस्याओं में आराम पहुंचाता है।

मधुमेह (डायबिटीज):

पीपल के पत्तों का सेवन ब्लड शुगर को नियंत्रित करने में सहायक होता है। यह इंसुलिन के स्तर को नियंत्रित करके डायबिटीज के मरीजों के लिए फायदेमंद साबित हो सकता है।

प्राकृतिक एंटीऑक्सीडेंट:

पीपल के पत्तों में एंटीऑक्सीडेंट गुण होते हैं, जो शरीर से हानिकारक तत्वों को बाहर निकालने और कोशिकाओं की सुरक्षा में मदद करते हैं।

हार्ट हेल्थ:

पीपल के पत्तों का उपयोग दिल की सेहत को सुधारने के लिए भी किया जाता है। यह रक्तदाब को नियंत्रित करने में मदद करता है और हृदय की धड़कन को सामान्य बनाए रखता है।

मानसिक स्वास्थ्य:

पीपल के पत्तों का सेवन मानसिक तनाव और चिंता को कम करने में मदद कर सकता है। यह दिमाग को शांति और सुकून देने में सहायक होता है।

हालांकि, पीपल का उपयोग औषधि के रूप में करते समय उचित मात्रा में ही इसका सेवन करना चाहिए और किसी विशेषज्ञ से परामर्श जरूर लेना चाहिए।

प्रकृति के रंग

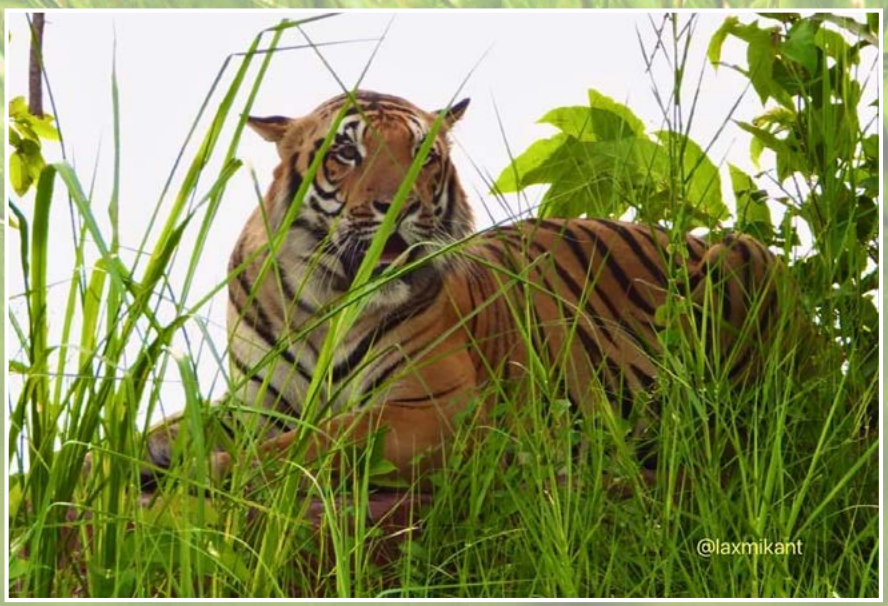

लक्ष्मीकांत
लखीमपुर

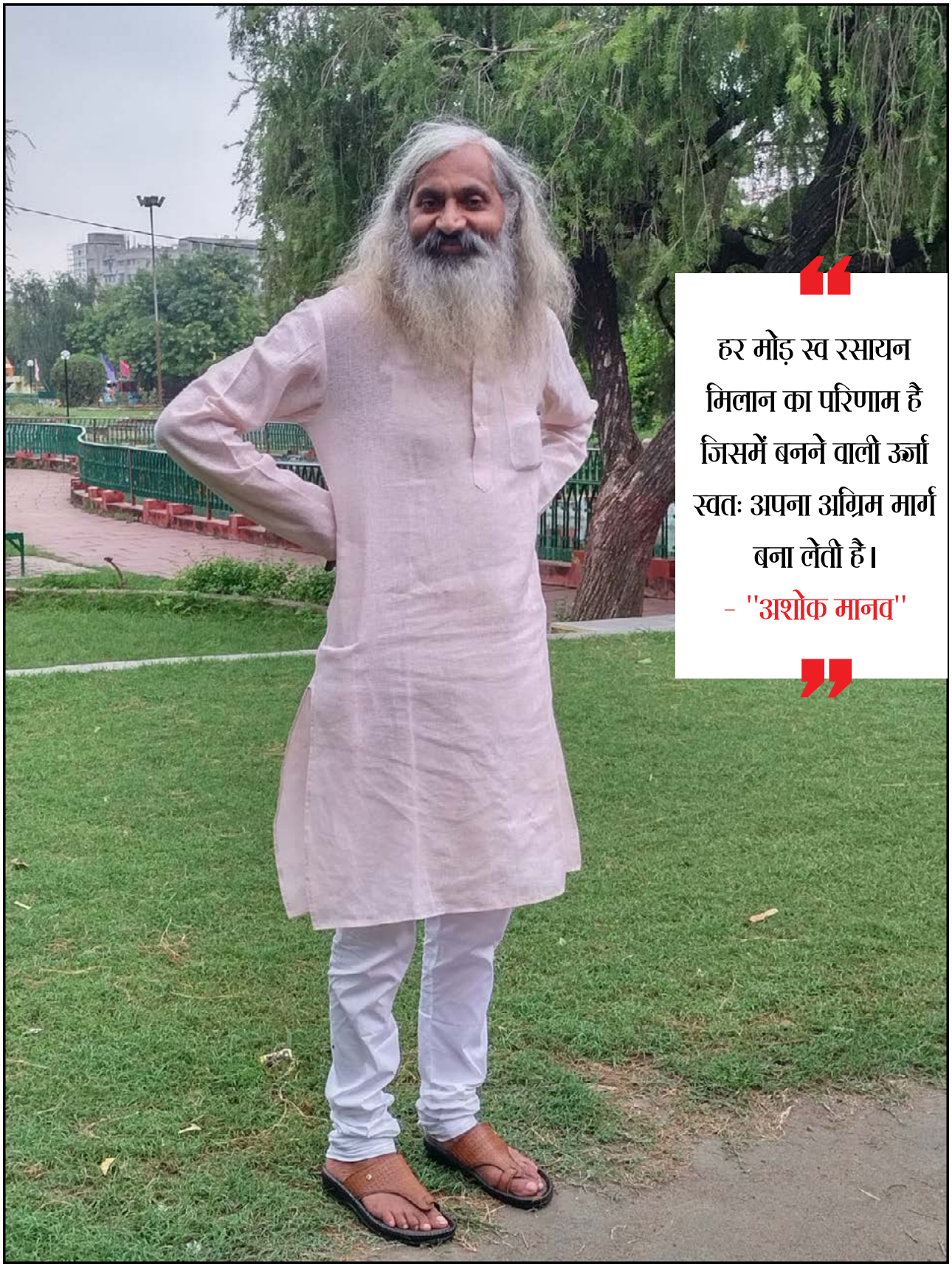

हर मोड़ स्व रसायन मिलान का परिणाम है जिसमें बनने वाली ऊर्जा स्वतः अपना अग्रिम मार्ग बना लेती है।

– "अशोक मानव"

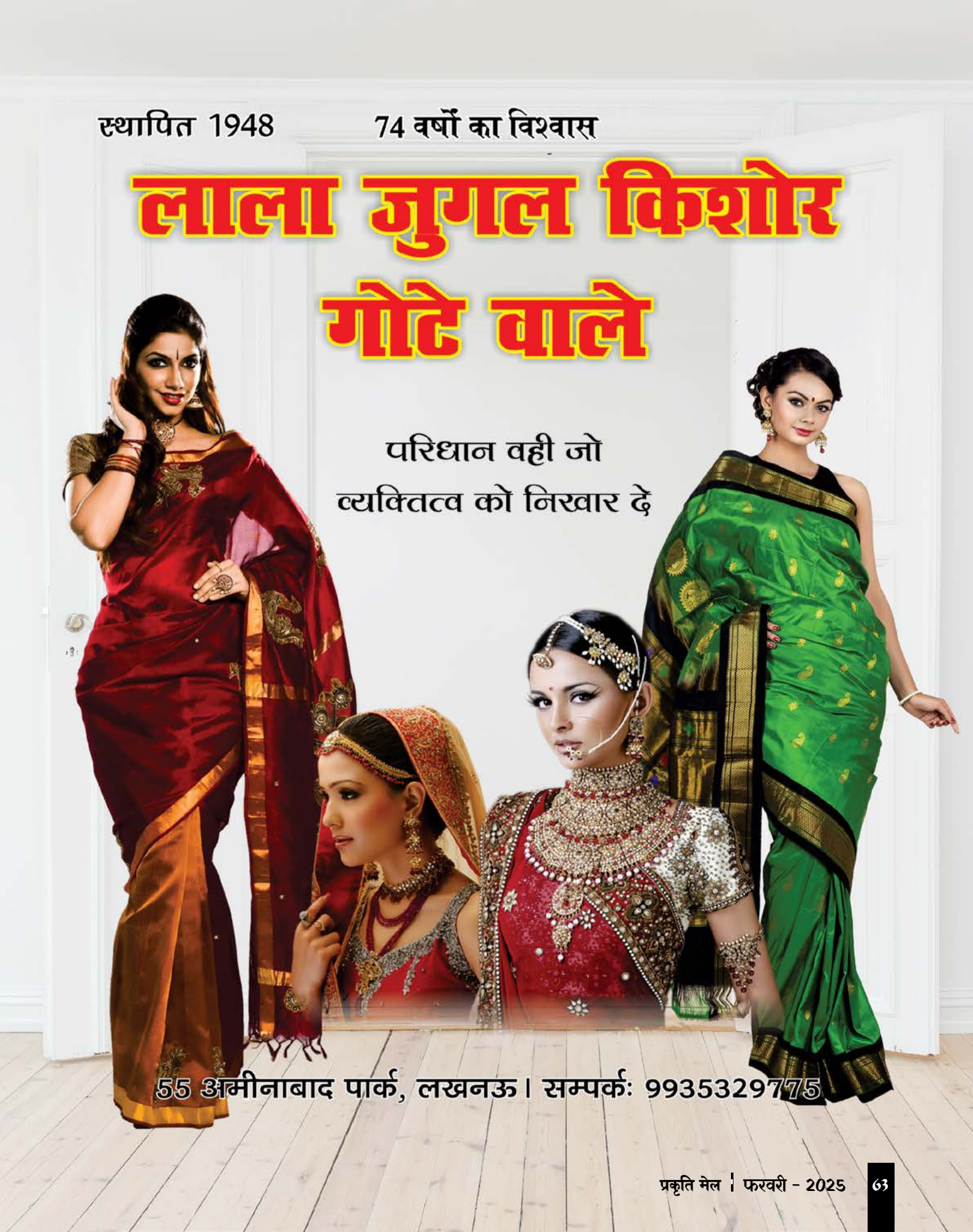
स्थापित 1948
74 वर्षों का विश्वास
लाला जुगल किशोर
गोटे वाले
परिधान वही जो
व्यक्तित्व को निखार दे
55 अमीनाबाद पार्क, लखनऊ। सम्पर्क: 9935329775

दुर्गा आटो सेल्स

सेवा ऐसी जो पसीना न बहने दे

Aurhorised Dealer for Mahindra Tractors, Farm Equipments & Spare Parts

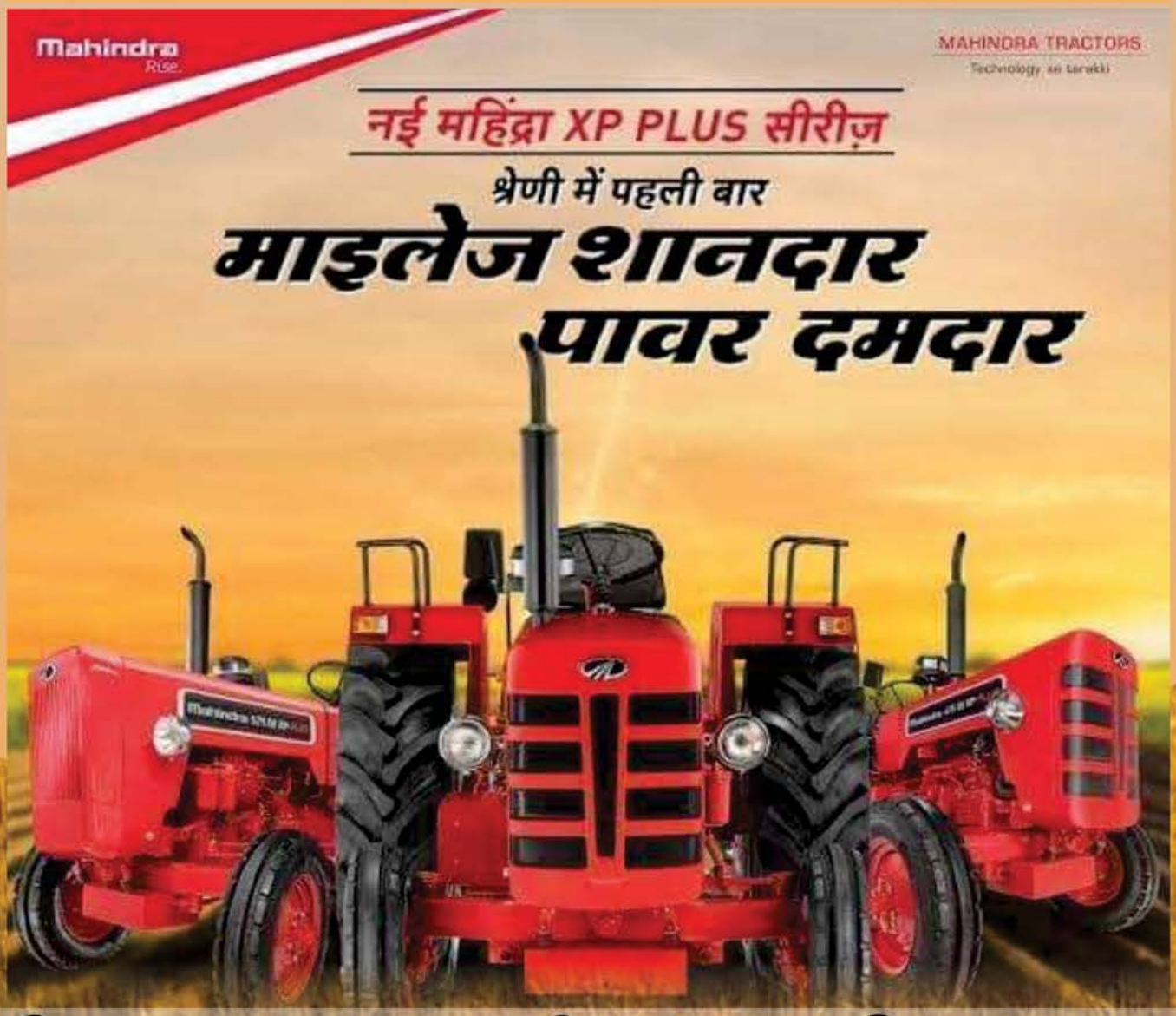

durgaautosale2000@gmail.com 9919528830 0545-4242216

इलाहाबाद-जौनपुर रोड, मद्धली शहर, जौनपुर, उ. प्र.।